CMYK

www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार ...

छत्तीसगढ़ का पहला राष्ट्रीय दैनिक

संपर्क करें : bilaspurdeshbandhu@gmail.com

पत्र नहीं मित्र

देशबन्धु

बिलासपुर, बुधवार, 15 नवम्बर 2023 । वर्ष – 33 । अंक –196 । पृष्ठ –12 । मूल्य – 4.00 रु

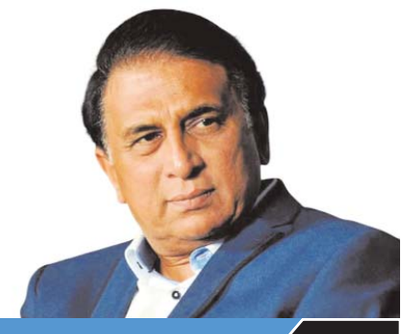

जनता तय करेगी उसे कैसा प्रदेश चाहिएः कमलनाथ पृष्ठ 3

■ आखिरकार भाजपा को कांग्रेस ने उतारा यथार्थ की ज़मीन पर
■ हमारे लोकतंत्र और चुनावी प्रक्रिया की कमियां दूर करने के कुछ सुझाव पृष्ठ 4

■ गजा में अस्पताल के नीचे हथियारों से भरा तहखाना मिला
■ जबालिया शरणार्थी शिविर पर इजरायली बमबारी में मारे गए 31 फिलिस्तीनी पृष्ठ 9

विलियमसन 2019 की तुलना में अधिक जोखिम लेने को तैयार : गावस्कर पृष्ठ 10

राजधानी में प्रियंका का रोड शो, उमड़ी भीड़

रायपुर, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। प्रदेश में 17 नवंबर को दूसरे चरण की 70 सीटों पर मतदान होना है ।कल 15 नवंबर की शाम राज्य में चुनाव प्रचार थम जाएगा। जिसे देखते हुए राजनीतिक पार्टियों ने प्रचार-प्रसार में पूरी ताकत झोंक दी है। इसी कड़ी में आज कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी ने राजधानी रायपुर में रोड शो कर किया। प्रियंका गांधी के साथ मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज और राजधानी रायपुर की सभी चारो विधानसभा सीटों से कांग्रेस के प्रत्याशी मौजूद रहे। प्रियंका गांधी का रोडशो राजीव गांधी चौक से शुरू होकर तेलघानी नाका में खत्म हुआ। कांग्रेस के पक्ष में माहौल बनाने प्रियंका गांधी मंगलवार को रायपुर पहुंची ।राजीव गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के बाद रोड शो शुरू किया ।उनके साथ खुले वाहन में मुख्यमंत्री भूपेश

बघेल सहित रायपुर के चारो विधानसभा के प्रत्याशी मौजूद थे। छोटापारा, कोतवाली, सदर बाजार ,सत्ती बाजार,आर डी तिवारी स्कूल आमापारा से अग्रसेन चौक होते हुए तेलघानी नाका चौक पर रोड़ शो समाप्त हुआ।

रोडशो में उमड़ी भीड़

प्रियंका गांधी के रोड शो के दौरान भीड़ उमड़ पड़ी। उनके वाहन के आगे कांग्रेस के कार्यकर्ता हाथो में झंडा लेकर चल रहे। इस दौरान जगह जगह उनका स्वागत किया गया।इस दौरान घरों पर भी लोगों ने कांग्रेस का झंडा लेकर उनका अभिवादन किया।

कई जगहों परजाम की स्थिति

राजधानी रायपुर में आयोजित कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी की रोड शो में बड़ी संख्या में कार्यकर्ता शामिल हुए। वहीं प्रियंका के काफिले के साथ साथ बड़ी संख्या में गाड़ियां भी शामिल थी। इसके चलते कोतवाली,सदर बाजार,आमापारा सहितशहर के कई जगहों पर जाम की स्थिति बन गई थी। हालांकि दौरे को देखते हुए बड़ी संख्या में जवानों की तैनाती की गई थी। इससे पहले रायपुर पहुंचने पर प्रियंका गांधी का प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज, महामंत्री मलकीत सिंह, संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील शुक्ला व अन्य वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं के साथ विमानतल पर उनका स्वागत किया। स्वागत के दौरान छत्तीसगढ़ सह प्रभारी सप्तगिरी उल्का, विजय जांगिड़ व अन्य नेता उपस्थित थे।

प्रदेश की 70 सीटों पर आज शाम 5 बजे थमेगा चुनावी शोर

958 प्रत्याशी मैदान में, एक तृतीय लिंग भी

रायपुर, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ विधानसभा आम निर्वाचन-2023 के अंतर्गत दूसरे चरण के लिए प्रदेश की 70 विधानसभा क्षेत्रों में होने वाले मतदान के लिए बुधवार 15 नवम्बर को शाम पांच बजे तक प्रचार-प्रसार का शोर थम जाएगा।

मतदान की समाप्ति समय के 48 घंटे पूर्व से सार्वजनिक मंचों से प्रचार-प्रसार प्रतिबंधित रहेगा। लेकिन इस दौरान प्रत्याशी घर-घर जाकर जनसंपर्क कर सकेंगे। द्वितीय चरण में कुल 958 उम्मीदवार अपना भाग्य आजमा रहे हैं जिनमें 827 पुरूष, 130 महिला और एक तृतीय लिंग हैं।

द्वितीय चरण के मतदान के दौरान प्रदेश के एक करोड़ 63 लाख 14 हजार 479 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इनमें 81 लाख 41 हजार 624 पुरुष मतदाता, 81 लाख 72 हजार 171 महिला मतदाता तथा 684 तृतीय लिंग मतदाता शामिल हैं। सुगम मतदान सुनिश्चित करने के लिए कुल 18 हजार 833 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। इनमें से 700 संगवारी मतदान केंद्र हैं जहां सिर्फ महिला मतदान कर्मी ही पदस्थ रहेंगी।

छत्तीसगढ़ में विधानसभा आम निर्वाचन के लिए दूसरे चरण में 17 नवम्बर को 70 विधानसभा क्षेत्रों में वोट डाले जाएंगे। इसके लिए सवेरे आठ बजे से शाम पांच बजे तक का समय निर्धारित किया गया है। केवल बिन्द्रानवागढ़ विधानसभा क्षेत्र के नौ मतदान केंद्रों कामरभौदी, आमामोरा, ओढ, बड़े गोबरा, गंवरगांव, गरीबा, नागेश, सहबीनकछार और कोदोमाली में सवेरे सात बजे से दोपहर तीन बजे तक मतदान होगा। इनके अलावा बिन्द्रानवागढ़ के शेष मतदान केंद्रों में अन्य 69 विधानसभा क्षेत्रों की तरह सवेरे आठ बजे से शाम पांच बजे तक वोट डाले जाएंगे।

नौ मतदान केंद्रों में दोपहर तीन बजे तक मतदान

बिंद्रानवागढ़ विधानसभा क्षेत्र के नौ मतदान केंद्र कामरभौदी, आमामोरा, ओढ, बड़े गोबरा, गंवरगांव, गरीबा, नागेश, सहबीनकछार और कोदोमाली में सुबह सात बजे से दोपहर तीन बजे तक मतदान होगा। इनके अलावा अन्य विधानसभा क्षेत्रों में सुबह आठ बजे से शाम पांच बजे तक वोट डाले जाएंगे।

विधानसभा आम निर्वाचन के लिए दूसरे चरण में भरतपुर-सोनहत, मनेन्द्रगढ़, बैकुंठपुर, प्रेमनगर, भटगांव, प्रतापपुर, रामानुजगंज, सामरी, लुण्ड्रा, अम्बिकापुर, सीतापुर, जशपुर, कुनकुरी, पत्थलगांव, लैलूंगा, रायगढ़, सारंगढ़, खरसिया, धर्मजयगढ़, रामपुर, कोरबा, कटघोरा, पाली-तानाखार, मरवाही, कोटा, लोरमी, मुंगेली, तखतपुर, बिल्हा, बिलासपुर, बेलतरा, मस्तूरी, अकलतरा, जांजगीर-चांपा, सक्ती, चंद्रपुर, जैजैपुर, पामगढ़, सराईपाली, बसना, खल्लारी, महासमुंद, बिलाईगढ़, कसडोल, बलौदाबाजार, भाटापारा, धरसींवा, रायपुर ग्रामीण, रायपुर नगर पश्चिम, रायपुर नगर उत्तर, रायपुर नगर दक्षिण, आरंग, अभनपुर, राजिम, बिन्द्रानवागढ़, सिहावा, कुरूद, धमतरी, संजारी-बालोद, डौंडीलोहारा, गुण्डरदेही, पाटन, दुर्ग ग्रामीण, दुर्ग शहर, भिलाई नगर, वैशाली नगर, अहिवारा, साजा, बेमेतरा और नवागढ़ विधानसभा क्षेत्रों में वोट डाले जाएंगे।

सार संक्षेप

राज्यपाल ने राष्ट्रीय जनजाति गौरव दिवस की दी शुभकामनाएं

रायपुर। राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन ने राष्ट्रीय जनजाति गौरव दिवस के अवसर पर प्रदेशवासियों सहित देशवासियों को शुभकामनाएं दी। उल्लेखनीय है कि महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं लोकनायक बिरसा मुंडा के जन्म दिवस को राष्ट्रीय 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में पूरे देश में मनाया जाता है।

खड़गे-राहुल ने किया नेहरू को जयंती पर नमन

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे तथा पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को आज जयंती पर नमन करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री खडगे ने पंडित जवाहर लाल नेहरू के इस वाक्य नागरिकता, देश की सेवा में होती है।को उद्धृत करते हुए कहा भारत को शून्य से शिखर तक पहुंचाने वाले, आधुनिक भारत के निर्माता, लोकतंत्र के निर्भीक प्रहरी तथा हमारे प्रेरणास्रोत पंडित जवाहर लाल नेहरू जी की जयंती पर विनम्र श्रद्धांजलि।

उत्तरकाशी टनल हादसा-बचाव अभियान के दौरान धंस रही सुरंग

उत्तरकाशी। उत्तराखंड के उत्तरकाशी में 12 नवंबर की सुबह 4 बजे एक निर्माणाधीन सुरंग धंस गई थी। पिछले 6 घंटे से 4 मजदूर अंदर फंसे हुए हैं। चारधाम प्रोजेक्ट के तहत यह टनल ब्रह्मखाल और यमुनोत्री नेशनल हाईवे पर सिल्क्यारा और डंडलगांव के बीच बनाई जा रही है। फंसे हुए मजदूर बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के हैं।

42वां अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला शुरू

नई दिल्ली। विश्व व्यापार मेले का आयोजन इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेयर द्वारा किया जा रहा है, जो 14 से 27 नवंबर तक चलेगा। इस बार इस मेले का 42 वां संस्करण आयोजित किया जा रहा है, जिसकी थीम वसुधैव कुटुंबकम पर आधारित है। इस मेले में 13 देशों के साथ 25 राज्य समेत देश-विदेश के 35 प्रतिभागी भाग ले रहे है।

प्रसिद्ध होटल व्यवसायी पीआरएस ओबेरॉय का निधन

नई दिल्ली। देश के प्रसिद्ध होटल व्यवसायी पृथ्वी राज सिंह (पीआरएस) ओबेरॉय का मंगलवार को निधन हो गया। वह 94 वर्ष के थे। श्री ओबेरॉय का जन्म 1929 में नई दिल्ली में हुआ। श्री ओबेरॉय ने कई देशों में लक्जरी होटलों के प्रबंधन के अलावा, ओबेरॉय होटल्स एंड रिसॉर्ट्स को एक लक्जरी ब्रांड के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

बलौदाबाजार में राहुल गांधी की आज सभा

बलौदाबाजार, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व सांसद राहुल गांधी 15 नवंबर को बलौदाबाजार में विशाल जनसभा को संबोधित करेंगे।

छत्तीसगढ़ राज्य विधानसभा चुनावों के दूसरे चरण के प्रचार प्रसार के अंतिम दिन राहुल गांधी दोपहर 1 बजे बलौदाबाजार पहुच कर कलेक्ट्रेट के पीछे स्टेडियम ग्राउंड में आयोजित आमसभा में जिले की तीनो विधानसभा के कांग्रेस कार्यकर्ता एवं आम जनता को संबोधित करेंगे।

दूसरे चरण के चुनावों का मतदान 17 नवंबर को होना है जिसके चुनाव प्रचार प्रसार का आज अंतिम दिन है। जिला कांग्रेस अध्यक्ष हितेंद्र ठाकुर ने बताया कि दोपहर 1 बजे राहुल गांधी और कांग्रेस के आला नेता बलौदाबाजार पहुंचेंगे और आमसभा को संबोधित करेंगे।

छत्तीसगढ़ियों का अपमान बर्दाश्त नहीं किया जाएगा : भूपेश बघेल

रायपुर, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। प्रधानमंत्री मोदी के बयान पर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का पलटवार सामने आया है।भूपेश बघेल ने कहा, प्रधानमंत्री जी मुझे जितनी गाली देना है दे लीजिए, लेकिन छत्तीसगढ़ियों का अपमान बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। भूपेश बघेल ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर लिखा- प्रधानमंत्री जी! आप छत्तीसगढ़ में आकर मुझे गाली दे रहे हैं, मैं सुन रहा हूं।आपके मंत्री और नेता आकर

मुझे बदनाम कर रहे हैं, मैं सुन रहा हूं। पहले रमन सिंह ने मुझे छोटा आदमी कहा था, मैंने सुन लिया था। लेकिन मेरे छत्तीसगढ़ की जनता को अपशब्द न कहना, छत्तीसगढ़ियों पर अगर बात आएगी, तो न मैं चुप बैठूंगा न छत्तीसगढ़ की जनता चुप बैठेगी, भरपूर जवाब मिलेगा।

एसएसटी टीम ने खरतोरा नाका में पकड़ा 1 करोड़ 12 लाख

- पुलिस थाना पलारी में जब्त राशि
- 2 बजे रात तक मशीन में गिनते रहे पैसा

पलारी, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। बलौदा बाजार जिले के कसडोल विधानसभा में रायपुर बलौदाबाजार के सरहद में खरतोरा नाका में एसएसटी द्वारा रायपुर से बलौदा बाजार की ओर आ रही एक निजी स्कॉर्पियो वाहन में सीएमएस स्टीकर लगा हुआ वहान को चेक करने पर नोटो से भरा एक करोड़12लाख रुपए से भरा सुठकेश मिला जिसके बाद वाहन में बैठे प्रदीप कुमार ,सौरभ सिंह डहरिया , गनमेन भगावत प्रसाद द्विवेदी ,चालक पुरुषोत्तम ढीढी से एसएसटी टीम द्वारा पूछताछ करने पर पैसे के संबध जानकारी के लिए जिस पर कोई वैध दस्तावेज प्रस्तुत नही कर पाए जिसके बाद ड्यूटी में तैनात तहसीलदार देवेंद्र नेताम ने उक्त राशि को जप्त कर पुलिस थाना पलारी के सुपुर्द कर दिया वही गाड़ी में मिले राशि को गिनती के लिए मशीन मंगाकर देर रात दो बजे तक थाने में पैसे की गिनती करते रहे ।तब रात्रि दो बजे पैसा गिनती के बाद पैसे के संबध में वैध दस्तावेज प्रस्तुत करने कहा गया वही वाहन में बैठे सभी लोगो ने अपने बयान में बताया की उक्त राशि एसबीआई के एटीएम में डालने जा रहे है ।चुकी केश वाहन नही होने के कारण प्राइवेट वाहन में पैसा ले जा रहे है ।एसएसटी टीम ने राशि को जमा कर दस्तावेज प्रस्तुत करने कहा गया है ।

वही इस संबध में तहसीलदार देवेंद्र नेताम ने बताया कि एसएसटी जब गाड़ी को दोपहर में नाका में रोके तो जांच के दौरान गाड़ी में पैसे से भरा बैग मिला जिसके लिए पूछताछ करने पर संतोष प्रद जवाब नही मिला और नही कोई दस्तावेज राशि के संबध में मिला जिसके बाद राशि जप्त कर थाना के सुपुर्द में दिया गया है । बैंक का पैसा होने की बात आई है दस्तावेज मांगा गया है ।

कांग्रेस नेता राहुल का दावा

मध्यप्रदेश में कांग्रेस का तूफान आने वाला है

विदिशा, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी ने आज दावा करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में 'कांग्रेस का तूफान' आने वाला है और पार्टी 145 से 150 सीटों पर विजय हासिल कर राज्य में सरकार बनाएगी।

श्री गांधी ने राज्य के विदिशा में कांग्रेस प्रत्याशियों के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए यह दावा किया। उन्होंने कहा, मैं सौ प्रतिशत कह सकता हूं कि यहां पर कांग्रेस पार्टी का तूफान आने वाला है। आप लिखकर रख लो, मध्यप्रदेश की जनता कांग्रेस को 145 से 150 सीट तक देने जा रही है। श्री गांधी ने कहा कि पिछले विधानसभा चुनाव में प्रदेश की जनता ने कांग्रेस पार्टी की सरकार चुनी थी, लेकिन नरेंद्र मोदी, अमित शाह और शिवराज सिंह चौहान ने मिलकर विधायकों को

खरीदा और जनता के द्वारा चुनी सरकार को 'चोरी' करने का काम किया।

भाजपा सरकार में भ्रष्टाचार चरम पर -कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और उसके नेताओं पर हमला करते हुए कहा कि इन लोगों की नीतियों के कारण युवा बेरोजगार है। किसान परेशान है। इनके राज में भ्रष्टाचार चरम पर पहुंच गया है।

राहुल के बयान पर मोदी का पलटवार

मूर्खों के सरदार, किस दुनिया में रहते हो

बैतूल। मध्यप्रदेश विधानसभा 2023 के लिए 17 नवंबर को मतदान होना है। चुनाव प्रचार 15 नवंबर की शाम को थम जाएगा। बीजेपी और कांग्रेस ने आखिरी दौर के चुनाव प्रचार में अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। बीजेपी की ओर से मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने मध्यप्रदेश के चुनावी मैदान में मोर्चा संभाला। प्रधानंत्री मोदी ने बैतूल में एक जनसभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने बिना नाम लिए राहुल गांधी पर भी तंज कसे। प्रधानमंत्री ने राहुल के 'मेड इन चाइना फोन' वाले बयान पर कहा, 'कल कांग्रेस के एक महाज्ञानी कह रहे थे कि भारत में सब लोगों के पास मेड इन चाइना मोबाइल फोन होता है। अरे मूर्खों के सरदार, किस दुनिया में रहते हो! कांग्रेस के नेताओं को अपने देश की उपलब्धियां न देखने की मानसिक बीमारी हो गई है। जबकि सच्चाई ये है कि आज भारत दुनिया में मोबाइल फोन का दूसरा सबसे बड़ा निर्माता है।'

तोमर के बेटे पर कार्रवाई क्यों नहीं-श्री गांधी ने केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर के पुत्र के वीडियो वायरल होने की घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि इन वीडियोज में सैकड़ों करोड़ रुपयों के लेनदेन की बात हो रही है। ये जनता का पैसा है और इसे नेता अपनी तिजोरियों में भर रहे हैं।

अडानी एनर्जी के सलाहकार केंद्र की समिति में शामिल

नई दिल्ली, 14 नवम्बर (एजेंसियां)। अडानी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड के सलाहकार जनार्दन चौधरी को मोदी सरकार ने एक्सपर्ट अप्रेजल कमेटी का सदस्य बनाया है। कमेटी पर्यावरण मंत्रालय के अंतर्गत काम करती है। इस पर शिवसेना (उद्धव गुट, यूबीटी) सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने तंज कसते हुए कहा कि दोस्ती हो तो ऐसी। एक्सपर्ट अप्रेजल कमेटी ने अडानी के 10 हजार 300 मेगावॉट के 6 प्रोजेक्ट्स को मंजूरी दी है। कमेटी के सामने अडानी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड के कई प्रोजेक्ट्स आए थे, जिनमें 850 मेगावॉट का रायवाड़ा (आंध्र प्रदेश), 1800 मेगावॉट का पेदाकोटा (आंध्र प्रदेश), 2100 मेगावॉट का पटगांव (महाराष्ट्र), 2450 मेगावॉट का कोयना-निवकाने (महाराष्ट्र), 1500 मेगावॉट का माल्शेज घाट भोरांडे (महाराष्ट्र), 1500 मेगावॉट का तराली (महाराष्ट्र) की परियोजनाएं 17 अक्टूबर को पास कर दी गईं।' पर्यावरण मंत्रालय के पोर्टल परिवेश के मुताबिक, पुनर्गठित एक्सपर्ट अप्रेजल कमेटी की पहली बैठक 17-18 अक्टूबर को हुई थी। इसमें अडानी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड के 1500 मेगावॉट के तराली पंपिंग स्टोरेज (सातारा) का प्रोजेक्ट आया था। टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा ने कहा कि मोदी सरकार के पर्यावरण मंत्रालय ने अडानी के कर्मचारी जनार्दन चौधरी को अडानी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड (एजीईएल) का सदस्य बनाया है। इस कमेटी ने पिछली मीटिंग में एजीईएल के 1500 मेगावॉट के सातारा प्लांट को मंजूरी दी थी।

- इसी समिति ने अडानी के 6 प्रोजेक्ट किए थे पास
- उद्धव ठाकरे गुट ने कसा तंज, दोस्ती हो तो ऐसी

विश्वकप क्रिकेट का पहला सेमीफाइनल आज

- कीवियों को हराकर फाइनल खेलना चाहेगा भारत

मुंबई, 14 नवंबर (एजेंसी)। वनडे विश्व कप 2023 में लीग मुकाबले खत्म हो चुके हैं। अब क्रिकेट के महाकुंभ में सिर्फ तीन मैच रह गए हैं। भारत, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड विश्व विजेता बनने से दो जीत दूर हैं। हालांकि, इन चारों में सिर्फ एक ही टीम का सपना पूरा होगा।

अब हर मुकाबले में किसी न किसी टीम का दिल टूटना तय है। इसकी शुरुआत 15 नवंबर को भारत और न्यूजीलैंड के बीच मुकाबले से होगी। इस मैच में हारने वाली टीम विश्व कप से बाहर हो जाएगी। भारत ने लीग स्टेज में अपने सभी नौ मैच जीतकर फाइनल में जगह बनाई। वहीं, न्यूजीलैंड की टीम नौ में से पांच मैच जीतकर अंतिम चार में पहुंची है।

न्यूजीलैंड की टीम भारत को कई बार नॉकआउट मुकाबलों में हराकर आईसीसी टूर्नामेंट से बाहर कर चुकी है। अब भारत की कोशिश पुरानी हार का बदला लेने की होगी।

वानखेड़ेस्टेडियम में जीत/हार का रिकॉर्ड

वानखेड़े स्टेडियम में टीम इंडिया ने 21 मैच खेले हैं और 12 बार जीत हासिल की है, नौ बार हार का सामना करना पड़ा है। दूसरी ओर न्यूजीलैंड ने इस मैदान पर तीन मैच खेले हैं, जिनमें से दो में जीत और एक में हार मिली है।

संसदीय पैनल ने सरकार से की सिफारिश

व्यभिचार को फिर से अपराध की श्रेणी में लाया जाए

नई दिल्ली, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। संसदीय समिति की सिफारिश पर अगर अमल किया तो व्यभिचार फिर से अपराध हो जाएगा। मंगलवार को समिति ने इससे जुड़ी अपनी सिफारिश में कहा कि विवाह पवित्र संस्था है इसे बचाया जाना चाहिएं इसके लिए जरूरी है कि व्यभिचार को अपराध घोषित किया जाए। उल्लेखनीय है कि गत मानसून सत्र गृहमंत्री अमित शाह ने भारतीय न्याय संहिता विधेयक पेश करते हुए गृह मंत्रालय संसदीय समिति कों इस मामले में रिपोर्ट पेश करने के लिए कहा था। इसमें कहा गया है कि संशोधित व्यभिचार कानून को जेंडर न्यूट्रल अपराध माना जाएगा और यह पुरुष, महिला और थर्ड जेंडर सभी पर समान रूप से लागू होगा।

आचार समिति की कार्यप्रणाली महुआ पर हो रही तेजी से कार्रवाई

रमेश विधूड़ी का मामला ठंडे बस्ते में पहुंचा

विंध्यवासिनी त्रिपाठी

नई दिल्ली, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। पैसा लेकर सवाल पूछने के मामले में टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा पर तेजी से कार्रवाई की गई और दो बैठकों में ही उन्हें लोकसभा से निष्कासित करने की सिफारिश कर दी गई। लेकिन वह तेजी से बसपा सांसद दानिश अली को सदन में गाली देने के आरोपी भाजपा सांसद रमेश विधूड़ी पर नहीं की गई।

एक महीने से भी ज्यादा का समय बीत गया अभी तक इस मामले में आचार समिति की दूसरी बैठक नहीं हो सकी। इस मामले में पहली बैठक 10 अक्टूबर को हुई थी। हालांकि विपक्ष के सवाल उठाने के बाद चर्चा है कि राजस्थान विधानसभा चुनाव के बाद अगली बैठक हो सकती है। बतादें कि संसद के विशेष सत्र के दौरान 21 सितम्बर को रमेश विधूड़ी ने लोकसभा में चल रही चर्चा के दौरान ही अपशब्दों की बौछार कर दी थी। कांग्रेस सहित तमाम विपक्षी दलों ने इस मामले में शिकायत दर्ज कराते हुए विधूड़ी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की थी। हालांकि विपक्ष के दबाव के बाद लोकसभा अध्यक्ष ओम माथुर ने मामले को विशेषाधिकार समिति को सौंप दिया था। समिति ने 11 अक्टूबर की बैठक में विधूड़ी को तलब किया था। लेकिन राजस्थान चुनाव में व्यस्तता का हवाला देते हुए उन्होंने बैठक में आने से इनकार कर दिया था। विशेषाधिकार समिति ने 10 अक्टूबर को बैठक कर उन्हें 11 अक्टूबर की पेशी से राहत दे दी थी। मगर 34 दिन बीत जाने के बाद भी समिति की कोई न तो बैठक हुई और न ही उसकी तारीख ही घोषित की गई है। विशेषाधिकार समिति की बैठक न होने के लिए दशहरा, दिवाली और छठ पूजा जैसे त्योहारों की दलील दी जा रही है।

कोटा के विकास की जिम्मेदारी मेरी-मुख्यमंत्री

कोटा विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी अटल श्रीवास्तव के पक्ष में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने पेंड्रा के हाई स्कूल मैदान में ली चुनावी आमसभा

- मुख्यमंत्री ने कहा जैसे जिला बनाया वैसे ही मेडिकल कॉलेज भी खोलेंगे
- छत्तीसगढ़ मुफ्त शिक्षा देने वाला पहला राज्य होगा

गौरेला पेंड्रा मरवाही, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि कोटा विधानसभा क्षेत्र के विकास की चिंता आपको करने की जरूरत नहीं है। मैंने अपने विश्वस्त साथी अटल श्रीवास्तव को आपको सौंपा है। आप उसे चुनाव जीत कर विधानसभा भेजिए कोटा विधानसभा क्षेत्र के विकास की जिम्मेदारी मेरी होगी।

कोटा विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी अटल श्रीवास्तव के पक्ष में 14 नवंबर को पेंड्रा के हाई स्कूल मैदान में एक बड़ी चुनावी आमसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि कांग्रेस जो कहती है वह करती है। हमने वर्ष 2018 में किसानों के कर्जा माफ करने का वादा किया था हमने किया। बिजली बिल माफ करने का वादा किया था उसे किया। किसानों का धान 2500 रुपए क्विंटल खरीदने का वादा किया था उसे भी किया। केंद्र सरकार ने इसमें अड़ंगा डालने की कोशिश की तब हमने छत्तीसगढ़ के किसानों को प्रति किसान पहले 10000 सालाना फिर बाद में 9000 सालाना राजीव किस न्याय योजना से किसानों के खाते में जमा कराया। वहीं दूसरी ओर 15 साल छत्तीसगढ़ में शासन करने वाली भाजपा की रमन सरकार ने छत्तीसगढ़ के लोगों को ठगने का काम किया। कोई भी वादा उन्होंने पूरा नहीं किया। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि हमारे वादे की गारंटी है परंतु उनके वादे की कोई गारंटी नहीं है ?। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि यदि छत्तीसगढ़ में आप दोबारा कांग्रेस की सरकार बनाते हैं तो हम गारंटी लेते हैं कि हम छत्तीसगढ़ में किसानों का दान 32 00 रुपए क्विंटल खरीदेंगे तथा छत्तीसगढ़ के सभी किसानों का कर्ज माफ करेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस बार हम छत्तीसगढ़ में स्व सहायता समूह की महिलाओं का भी कर्ज माफ करने जा रहे हैं। इसी के साथ ट्रांसपोर्टर का टैक्स भी माफ होगा। इसी तरह हम घरेलू गैस सिलेंडर रू. 500 में प्रदान करते हुए सभी वर्ग की सब्सिडी सीधे खाते में जमा करेंगे।मुख्यमंत्री ने कहा कि हम छत्तीसगढ़ में गृह लक्ष्मी योजना के तहत सभी वर्ग के महिलाओं को बगैर भेदभाव 15000 रुपये सालाना सीधे खाते में जमा करेंगे। इसी तरह हम सभी वर्ग के लोगों को 200 यूनिट बिजली फ्री में देने जा रहे हैं। 200 यूनिट से ज्यादा बिजली खर्च करने वाले को भी इस योजना का लाभ मिलेगा और छत्तीसगढ़ में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हम छत्तीसगढ़ के सभी हाई स्कूलों एवं हायर सेकेंडरी स्कूलों का स्वामी आत्मानंद स्कूल योजना के तहत उन्नयन कर अंग्रेजी शिक्षा माध्यम से बच्चों को शिक्षा देंगे। उन्होंने कहा कि पूरे पूरे देश में छत्तीसगढ़ एकमात्र ऐसा राज्य होगा जहां प्राइमरी से लेकर उच्च शिक्षा फ्री में मिलेगी। इंजीनियरिंग मेडिकल कॉलेज में भी हम प्रवेश लेने वाले छात्रों से कोई फीस नहीं लेंगे।

गौरेला पेंड्रा मरवाही को जिला बनाकर हमने विकास के द्वार खोले-भूपेश

डॉक्टर के के ध्रुव के पक्ष में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने ली कोटमी में ली आमसभा

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने मरवाही विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी डॉक्टर के के ध्रुव के पक्ष में कोटमी मैं आयोजित आमसभा को संबोधित करते हुए कहा कि गौरेला पेंड्रा राज मरवाही जिले को विकास से जोड़ने के लिए हमने जिला बनाया। यदि रमन सिंह चाहते इस क्षेत्र का विकास तो वह गौरेला पेंड्रा मरवाही को अपने 15 साल के शासनकाल में जिला बना सकते थे परंतु उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया। मरवाही विधानसभा क्षेत्र के ग्राम कोटमी में आयोजित चुनावी आम सभा को संबोधित करते हुए डॉक्टर के के ध्रुव को जिताने की अपील करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले विधानसभा उपचुनाव में डॉक्टर के के ध्रुव 37000 मतों से जीते थे। ढाई साल के का शासन काल में जितना कर हो सकता था उन्होंने किया। आगे विकास के कार्य करने के लिए आप एक बार फिर डॉक्टर के के ध्रुव को मरवाही से चुनाव जीतकर छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनाइये। मुख्यमंत्री ने केंद्र की मोदी सरकार को ठगने वाली सरकार बताते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ के विकास कार्यों में केंद्र की मोदी सरकार हमेशा अड़ंगा लगाती रही। जिन लोगों ने रू. 2100 धान खरीदने का वादा कर किसानों का ध्यान नहीं खरीदा 300 बेना देने का वादा कर किसानों को बोनस नहीं दिया आज वही भाजपा 3100 रुपए धान खरीदने का वादा कर रही है क्या आप इस पर यकीन करेंगे ? ठेठ छत्तीसगढ़ में दिए अपने मुद्बोधन में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने छत्तीसगढ़ कि कांग्रेस सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी देते हुए आगे सरकार आने पर किसानों का कर्ज माफ 3200 में धान खरीदी करने तथा मुफ्त शिक्षा देने मुफ्त इलाज करने 200 यूनिट बिजली फ्री देने एवं अन्य विकास योजनाओं की जानकारी देते हुए कांग्रेस को जिताकर छत्तीसगढ़ में एक बार फिर कांग्रेस सरकार बनाने की अपील की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस तरह छत्तीसगढ़ में बिजली स्वास्थ्य शिक्षा सभी कुछ फ्री में दी जाएगी

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि वर्ष 2018 में जब हमारी सरकार छत्तीसगढ़ में बनी थी तब हमने जो भी वादे किए थे पूरा किया। आदिवासियों, महिलाओं किसान, मजदूर,व्यवसाय,सरकारी कर्मचारी वर्ग सभी के के कल्याण के लिए हमने काम किया। कोरोना संक्रमण काल की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि जब पूरे देश में कोरोना संक्रमण से आर्थिक स्थिति बदहाल हो गई थी तब हमने छत्तीसगढ़ में किसानों मजदूरों महिलाओं के खातों में पैसा डाला। तेंदूपत्ता श्रमिकों आदिवासियों की चिंता की तथा छत्तीसगढ़ की आर्थिक स्थिति को खराब नहीं होने दिया। उन्होंने रमन सिंह के 15 साल के शासनकाल की चर्चा करते हुए कहा कि इन्होंने जो जो वादे किए थे कोई वादा पूरा नहीं किया। उनके शासन काल के समय में छत्तीसगढ़ में 40त्न परिवार गरीबी रेखा के नीचे रहते थे और हमारे 5 साल के शासनकाल में 40 लाख लोग गरीबी रेखा के ऊपर आए हैं इस तरह हमने आर्थिक व्यवस्था में सुधार किया है। इसके पूर्व पूर्व आमसभा को कोटा विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी अटल श्रीवास्तव ने संबोधित करते हुए कहा कि 17 साल से जो ग्रहण कोटा विधानसभा क्षेत्र में लगा है उस ग्रहण को आप 17 नवंबर को हटा दीजिए और कांग्रेस को जिताकर कोटा विधानसभा क्षेत्र का विकास करिए। पेंड्रा के हाई स्कूल मैदान में आयोजित आमसभा में जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष उत्तम वासुदेव सहित अन्य कांग्रेस जनों ने अपना संबोधन दिया। मुख्यमंत्री को सुनने पेंड्रा एवं गौरेला क्षेत्र से बड़ी संख्या में लोग यहां उपस्थित हुए।

हर्षउल्लास के साथ किया गया गोवर्धन पूजा

तखतपुर, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। हर्ष उल्लास के साथ क्षेत्र में गोवर्धन पूजा की गई। अन्नकूट के नाम से भी जानते हैं। सुबह से घरों में गोवर्धन पहाड़ बनाकर गाय की पूजा की गई। इंद्र के अभिमान को भगवान श्री कृष्ण ने अपनी कनिष्ठा उंगली में पर्वत उठाकर तोड़ा था।तब से गोवर्धन पूजा की जा रही है।इस पर्व में प्रकृति के साथ मानव का सीधा सम्बन्ध दिखाई देता है। देवी लक्ष्मी जिस प्रकार सुख समृद्धि प्रदान करती हैं उसी प्रकार गौ माता भी अपने दूध से स्वास्थ्य रूपी धन प्रदान करती हैं। इनका बछड़ा खेतों में अनाज उगाता है। ऐसे गौ सम्पूर्ण मानव जाति के लिए पूजनीय और आदरणीय है। गौ के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए ही कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन गोर्वधन की पूजा की जाती है और इसके प्रतीक के रूप में गोवर्धन पूजा अर्चना किया गया और आशीर्वाद लिया गया।

मतदान में 72 घंटे शेष, कलेक्टर ने सभी एनफोर्समेंट एजेंसी से कहा लगातार करें निगरानी

दिशा-निर्देश का कड़ाई से पालन सुनिश्चित कराने किया निर्देशित

मतदान दिवस को लेकर भी भारत निर्वाचन आयोग की गाइडलाइन की दी जानकारी

रायगढ़, 14 नवम्बर2023/ आगामी 17 नवम्बर को होने वाले मतदान के लिए सभी आवश्यक तैयारियां, जिले में पूरी कर ली गई हैं। इसी क्रम में आज कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी कार्तिकेया गोयल द्वारा सभी रिटर्निंग ऑफिसर, उडऩ्दस्ता दलों स्थैतिक निगरानी दलों तथा सभी सेक्टर मजिस्ट्रेट की बैठक लेकर आगामी 72 घंटों में भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों का पालन सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए गए। कलेक्टर श्री गोयल द्वारा संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि सभी उडऩ्दस्ता दल और स्थैतिक निगरानी दल के सदस्य आगामी 72 घंटों में विशेष रूप से सक्रिय रहें तथा सामुदायिक भवन, गेस्ट हाउस एवम धर्मशालाओं में होने वाले आयोजनों पर विशेष नजर रखी जाए और मैरिज हॉल/सामुदायिक भवन इत्यादि में किसी प्रकार के उपहार वितरण या दावत पर कड़ी निगाह रखी जाए। किसी अभ्यर्थी या राजनीतिक दल द्वारा इनके माध्यम से मतदाताओं को प्रलोभन नही होना चाहिए।

मतदान समाप्ति के 48 घंटे पूर्व अर्थात दिनांक 15 नवम्बर की शाम 05 बजे से मतदान दिवस तक सभी मदिरा दुकानें/बार बंद रहेंगे। सभा, रैली, रोड शो के माध्यम से मत याचना/प्रचार बंद रहेंगे। अभ्यर्थी आदर्श आचरण संहिता के प्रावधानों का पालन सुनिश्चित करते हुए भीड़ भाड़ के बिना जनसंपर्क कर सकेंगे। इस अवधि में लाउड स्पीकर का उपयोग पूर्णत= प्रतिबंधित रहेगा। अभ्यर्थी एवं उनके निर्वाचन अभिकर्ता एवं उनके कार्यकर्ता प्रत्येक के लिए एक वाहन सहित अधिकतम तीन वाहन के उपयोग की अनुमति अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी रायगढ़ से प्राप्त करनी होगी। अनुमति की प्रति वाहन के विंडस्क्रीन पर डिस्प्ले करना अनिवार्य होगा।

17 नवंबर को निर्भिक होकर करें मताधिकार का प्रयोग - कलेक्टर

फ्लैग मार्च के माध्यम से दिया शांतिपूर्ण मतदान का संदेश

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। जिले में 17 नवंबर, 2023 को होने वाले विधानसभा मतदान से लगभग 63 घंटे पहले कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अवनीश शरण और पुलिस अधीक्षक श्री संतोष कुमार सिंह के नेतृत्व में शहर के विभिन्न स्थानों पर फ्लैग मार्च कर स्वतंत्र, निष्पक्ष, पारदर्शी और शांतिपूर्ण मतदान का संदेश दिया। इस फ्लैग मार्च में सुरक्षा बलों की विभिन्न टुकड़ियों के 600 से अधिक जवान शामिल हुए।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अवनीश शरण ने कहा कि इस फ्लैग मार्च का उद्देश्य आगामी 17 नवंबर 2023 को होने विधानसभा के चुनावों के मद्देनजर शहरवासियों को अधिक से अधिक संख्या में मतदान हेतु जागरुक करते हुए स्वतंत्र, सुरक्षित और शांतिपूर्ण मतदान हेतु प्रेरित करना है। उन्होंने उम्मीद जताई कि शहर के मध्य स्थित घनी आबादी वाले इन इलाकों में पुलिस और प्रशासन का संयुक्त फ्लैग मार्च निर्वाचन प्रक्रिया के प्रति मतदाताओं के विश्वास को बढ़ाएगा। साथ ही चुनाव को दृष्टिगत रखते हुए किसी भी प्रकार के असामाजिक तत्वों को सुरक्षा बलों की तैनाती से साफ संदेश देने का प्रयास किया गया है। पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार सिंह ने कहा कि निर्वाचन प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा की चाकचौबंद व्यवस्था की गई है।उन्होंने कहा कि 17 नवंबर को आयोजित होने वाले विधानसभा निर्वाचन की प्रक्रिया निर्बाध रूप से संपन्न करी जाएगी। उन्होंने बताया कि अनुविभाग एवं थाना स्तर पर भी आज फ्लैग मार्च निकाला गया।

करीब साढ़े चार किलोमीटर का फ्लैग मार्च

फ्लैग मार्च की शुरुआत पुलिस मैदान, सिविल लाइंस से हुई जो सत्यम चौक, मगरपारा चौक, बजरंग चौक, भारतीय नगर चौक, महिमा चौक, दीनदयाल उपाध्याय, श्रीकांत वर्मा मार्ग से होते हुए अग्रसेन चौक से पुलिस मौदान पर ही समाप्त हुआ। इस मार्च में केन्द्रीय सुरक्षा बल, पुलिस एक्शन फोर्स, छत्तीसगढ़ पुलिस, प्रादेशिक पुलिस बल (पीएसी) के जवान मौजूद रहे।

कई प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी हुए शामिल

श्री कुणाल दुदावत, आयुक्त नगर निगम बिलासपुर, श्री अजय अग्रवाल, सीईओ, जिला पंचायत, बिलासपुर, एडिशनल एसपी श्रीमती अर्चना झा, एडिशनल एसपी श्री राजेन्द्र जायसवाल, सीएसपी आईपीएस सुश्री पूजा कुमार, आईपीएस श्री संदीप पटेल सहित कई प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी इस फ्लैग मार्च का हिस्सा बने।

सांकेतिक कब्जे की सूचना

ICICI Bank

शाखा कार्यालय : आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, तीसरी मंज़िल, प्लॉट नंबर- 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली- 110005.

जबकि

अधोहस्ताक्षरी ने वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अंतर्गत आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी के रूप में तथा प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 3 के साथ पठित धारा 13(12) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए नीचे वर्णित कर्ज़दारों को माँग सूचनाएँ निर्गमित की थीं, जिसमें उक्त सूचना की प्राप्ति की तिथि से 60 दिनों के अंदर सूचना में वर्णित राशि का प्रतिभुगतान करने को कहा गया था।

कर्ज़दार/सह-कर्ज़दार/ज़मानतदार राशि का प्रतिभुगतान करने में विफल रहे हैं, अतएव एतद् द्वारा कर्ज़दार तथा जनसाधारण को सूचित किया जाता है कि अधोहस्ताक्षरदाता द्वारा सांकेतिक अधिग्रहण किया गया है जो कि उक्त अधिनियम की धारा 13(4) के तहत नियम 8 में दर्शाया गया है। संपत्ति तथा अधिग्रहण की तिथि नीचे दर्शाई गई है। एतद् द्वारा विशेष रूप से कर्ज़दार एवं जनसाधारण को संपत्ति के संव्यवहार नहीं करने के लिए सचेत किया जाता है तथा संपत्ति के साथ कोई भी संव्यवहार इसमें वर्णित राशि तथा उस पर आगे ब्याज हेतु आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्रभार के अधीन होगा।

क्र. सं.	कर्ज़दार/ सह-कर्ज़दार का नाम/ ऋण खाता क्र.	संपत्ति का विवरण/ सांकेतिक कब्ज़े की तिथि	डिमांड नोटिस की तिथि/ डिमांड नोटिस में राशि (रु.)	शाखा का नाम
1.	आंचल थापा/आस्था थापा/ LBDEH00003874642	संपत्ति संख्या 574, डकरा कैंट एरिया, खसरा नंबर 43/2 मौजा गढ़ी कैंट परगना पछवादून जिला देहरादून उत्तराखंड/नवंबर 09, 2023	जून 16, 2023 रु. 9,12,250/-	छत्तीसगढ़/ उत्तराखंड

उपरोक्त दर्शाए गए कर्ज़दार/सह-कर्ज़दार एवं ज़मानतदारों को सूचित किया जाता है कि इस सूचना के प्रकाशन से 30 दिनों के अंदर राशि का भुगतान करें, अन्यथा 30 दिनों की समाप्ति के पश्चात् अधिग्रहित संपत्ति की नीलामी कर दी जाएगी जो पूर्णत: नियम 8 और 9 प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के अंतर्गत है।

दिनांक : नवंबर 15, 2023
स्थान : छत्तीसगढ़

प्राधिकृत अधिकारी
आईसीआईसीआई बैंक लि.

कलेक्टर कार्तिकेया गोयल पहुंचे केआईटी, मतदान सामग्री वितरण,वापसी व्यवस्था की ली जानकारी

विधान सभावार ईवीएम वितरण स्टॉल की ली जानकारी, रूट मैप के संबंध में दिए दिशा-निर्देश

कलेक्टर गोयल ने नोडल अधिकारियों की ली बैठक, कहा अलर्ट रहते हुए कार्यवाही करें सुनिश्चित

रायगढ़, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार 17 नवंबर को होने जा रहे विधान सभा आम निर्वाचन-2023 के मद्देनजर आज कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री कार्तिकेया गोयल व एसएसपी श्री सदानंद कुमार केआईटी स्ट्रॉन्ग रूम परिसर पहुंचे। यहां उन्होंने विधानसभा वार बनाए जा रहे मतदान सामग्री वितरण, बूथ तथा अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस अवसर पर सीईओ जिला पंचायत जितेन्दर यादव, अपर कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी राजीव कुमार पाण्डेय, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संजय महादेवा, सहायक कलेक्टर युवराज मरमट और सभी रिटर्निंग ऑफिसर उपस्थित रहे। कलेक्टर गोयल ने तीनों विधान सभाओं के सामग्री वितरण की रूपरेखा की जानकारी लेते हुए, पोलिंग पार्टी के आवागमन की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि मतदान दलों के लिए सामग्री वितरण स्टॉल तक आवागमन सुनियोजित होनी चाहिए, इसके साथ ही पोलिंग बूथ टीम के पुलिस सदस्य के लिए स्टॉल हो, जिससे टीम बेहतर ढंग से समन्वय कर पोलिंग बूथ तक पहुंच जाए। उन्होंने विधान सभाओं के सामग्री वितरण की जानकारी हेतु फ्लेक्स लगाने के निर्देश दिए, ताकि मतदान दलों को आवश्यक परेशानी न हो। इस दौरान उन्होंने जिला परिवहन अधिकारी रायगढ़ को पर्याप्त बस एवं पार्किंग के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि विधान सभावार बसों को सुव्यवस्थित रखने के निर्देश दिए, जिससे जाम की स्थिति निर्मित न हो। इसके लिए उन्होंने पुलिस जवान भी तैनात करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर गोयल ने सामग्री वितरण/वापसी परिसर में पेड भोजन की व्यवस्था की जानकारी ली। खाद्य विभाग द्वारा जानकारी की गई कि परिसर में कम दाम पर भोजन की सुविधा उपलब्ध की गई है। इस दौरान कलेक्टर गोयल ने टॉयलेट के संबंध में जानकारी लेते हुए, चलित टॉयलेट की भी व्यवस्था के निर्देश दिए। साथ ही पेयजल हेतु कार्यपालन अधिकारी पीएचई को निर्देशित किया। मतदान दलों को प्रदान की जाने वाली मेडिकल किट के संबंध में जानकारी लेने पर सीएमएचओ डॉ.मधुलिका सिंह ठाकुर ने बताया कि मतदान दलों के लिए मेडिकल किट बनाए गए है, जो प्रत्येक मतदान दल को प्रदान किया जा रहा हैं। इसके साथ ही एंटीवेनम पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। इस दौरान कलेक्टर श्री गोयल स्ट्रॉन्ग रूम भी पहुंचे, यहां उन्होंने सभी से सामग्री वितरण के संबंध में निर्देश देते हुए उनसे रूट मैप की जानकारी ली तथा वितरण पश्चात सामग्री वापसी हेतु आवश्यक तैयारियां करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि निर्धारित रूट अनुसार ही सामग्री का आवागमन किया जाए। इस अवसर पर समस्त एसडीएम, आरओ, पीएचई, खाद्य विभाग, पीडब्ल्यूडी के अधिकारी सहित विभागीय व नोडल अधिकारी उपस्थित रहें।

नाम परिवर्तन सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मैं **ईफ्फत खान पिता मोहम्मद आजाद खान** उम्र 26 वर्ष निवासी- मकान नं. एल-6, सफा मस्जिद के पास, यदुनन्दन नगर, तिफरा बिलासपुर-जिला- बिलासपुर (छ.ग.) यह शपथ करती हूं कि मैने अपने यह पुराने नाम को त्याग कर नया नाम **ईफ्फत खान मेवाती पिता मोहम्मद आजाद खान** मेवाती रख लिया है। अत: आज से मुझे समस्त शासकीय/ अर्धशासकीय व अन्य दस्तावेज में मेरे नये नाम **ईफ्फत खान मेवाती पिता मोहम्मद आजाद खान** मेवाती से ही जाना एवं पहचाना जावे।

ईफ्फत खान मेवाती
पिता मोहम्मद आजाद खान
मेवाती मकान नं. एल-6,
सफा मस्जिद के पास,
यदुनन्दन नगर,
तिफरा बिलासपुर-जिला-
बिलासपुर (छ.ग.)

निधन

उर्मिला नेताम

तखतपुर। मौहाभाठा निवासी उर्मिला नेताम 58 वर्ष का निधन शुक्रवार को हो गया है। वे श्याम लाल नेताम की पत्नि, थानूराम नेताम, उतरेखा, इंद्राणी, सविता, कविता की मां, राधेश्याम नेताम की भाई बहू तथा सहदेव नेताम की चाची थी। इनका अंतिम संस्कार गृहग्राम मौहाभाठा में किया गया।

फार्मेट सी-1

(समाचार पत्र, टीवी में प्रकाशन हेतु अभ्यर्थियों के लिए)

आपराधिक मामलों के बारे में घोषणा

(वर्ष 2011 की रिट याचिका (सिविल) सं. 536 में माननीय उच्चतम न्यायालय के दिनांक 25 सिंतबर, 2018 के निर्णय के अनुसार) (पब्लिक इंट्रेस्ट फाउंडेशन और अन्य बनाम भारत संघ और अन्य)

अभ्यर्थी का नाम और पता: शैलेश पाण्डेय पता कार्यालय मकान नं. ई-2/4, वेयर हाउस, बिलासपुर (छ.ग.) पिन कोड 495001, स्थायी पता -मकान नं.-ई एक्स -08, आसमां इनक्लेव,जैन इंटरनेशनल स्कूल के पास, ग्राम सकरी, तहसील - सकरी, जिला - बिलासपुर (छ.ग.), पिन कोड 495001.

राजनैतिक दल का नाम: इंडियन नेशनल कांग्रेस

(निर्दलीय अभ्यर्थी यहां ''निर्दलीय'' लिखें)

निर्वाचन का नाम: छत्तीसगढ़ विधान सभा निर्वाचन-2023

'निर्वाचन क्षेत्र का नाम: बिलासपुर निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक-30

मैं शैलेश पाण्डेय (अभ्यर्थी का नाम), उपर्युक्त निर्वाचन के लिए अभ्यर्थी, सार्वजनिक सूचना हेतु अपने आपराधिक पूर्ववृत्त के बारे में निम्नलिखित विवरणों की घोषणा करता/करती हूँ :

(क)	लंबित आपराधिक मामले			
क्र.सं.	न्यायालय का नाम	मामले की सं. एवं तारीख	मामलों (मामलों) की स्थिति	संबंधित अधिनियमों की धारा(धाराएं) एवं अपराध (अपराधों) का संक्षिप्त विवरण
1	न्यायालय में लंबित नहीं	थाना कोटा बिलासपुर छ.ग. में अप.क्र.247/2018 दिनांक-14.06.2018	अन्वेषण जारी	पदीय कर्तव्य के निर्वहन में भ्रष्टाचार का आरोप अंतर्गत धारा धारा 13 (1) इ (डी),13(2).भ्र.नि.अधिनियम 1988.
2	कार्यपालिक दण्डाधिकारी बिलासपुर	थाना तोरवा बिलासपुर छ.ग. में इस्तगासा क्रमांक 200/2018.	कार्यवाही समाप्त ।	टी एस बाबा एवं 164 अन्य के विरूद्ध प्रतिबंधात्मक कार्यवाही। धारा 151, 107, 116 दण्ड प्रक्रिया संहिता.
3	न्यायालय की जानकारी प्राप्त नहीं है।	थाना सिविल लाईन बिलासपुर में अप.क्र.229/2020.	थाने द्वारा खात्मा प्रकरण न्यायालय में प्रस्तुत है।	कोविड काल में अपने आवास में भीड़ को राशन वितरण करना धारा 269 एवं 188 भारतीय दण्ड संहिता
4	उपरोक्तानुसार	थाना सिविल लाईन बिलासपुर में अप.क्र-806/2020	थाने द्वारा खात्मा प्रकरण न्यायालय में प्रस्तुत है।	कांग्रेसी कार्यकर्ताओं के द्वारा शासकीय कार्य में बाधा डालना। धारा 147, 148, 186, 353, 294.भारतीय दण्ड संहिता.
5		थाना रेल्वे सुरक्षा बल बिलासपुर छ.ग. में अप.क्र.2904/2023	अन्वेषण जारी है।	रेल रोको आंदोलन 174 (ए), 147 रेल अधिनियम.

ख	आपराधिक मामलों के लिए दोषसिद्धि मामलों के सबंध में विवरण		
क्र.सं.	न्यायालय का नाम एवं आदेश (शों) की तारीख (खें)	अपराध (अपराधों) और अधिरोपित दण्ड का विवरण	अधिकतम अधिरोपित दंड
	निरंक	निरंक निरंक	निरंक

*राज्य सभा के निर्वाचन या विधान सभा सदस्यों द्वारा, विधान परिषद के निर्वाचन के मामले में, निर्वाचन क्षेत्र के नाम के स्थान पर संबंधित निर्वाचन का उल्लेख करें।

देश

उवाच “

यहां तीन मुद्दे हैं जिनमें अहंकार बनाम जनता, राष्ट्रवाद बनाम तुष्टीकरण एवं भ्रष्टाचार बनाम ईमानदारी शामिल है। ‘इन मुद्दों को लेकर हम सडक़ों पर है। दलाली लेकर सडक़ें बनी है तो सड़क के नीचे मिट्टी मिलेगी, कोई विकास की बात कर रहा है तो उसके पीछे खोखलापन है:-**गोपाल शर्मा, भाजपा**

तापमान	अधिकतम	न्यूनतम
दिल्ली	25.9	12.`
मुंबई	36.6	22.4
कोलकाता	31.`	21.`
चेन्नई	27.3	23.3

जनता तय करेगी उसे कैसा प्रदेश चाहिए: कमलनाथ

मुरैना, 14 नवम्बर (एजेंसियां)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने आज कहा कि 17 तारीख को होने वाला चुनाव मध्यप्रदेश के भविष्य का चुनाव है, यह किसी प्रत्याशी या पार्टी का चुनाव नहीं है, इसलिए मतदाता को तय करना है कि उसे प्रदेश को किस ओर ले जाना है। श्री कमलनाथ ने जिले के जौरा और दिमनी में कांग्रेस प्रत्याशी के समर्थन में चुनावी सभाओं को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि अब केवल दो दिन बचे हैं और 17 तारीख को होने वाले मतदान में आपको तय करना है कि कैसा प्रदेश आपको चाहिए है। आज आपके बीच में आकर उन्हें बहुत खुशी है और आपके जो उम्मीदवार है वो मेरे प्रीतिनिधि भी है। वे पुलिस, प्रशासन और भाजपा के लोगों को बताना चाहते हैं कि कमलनाथ अब 2018 के मॉडल नहीं हैं अब 2023 का मॉडल हैं। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि आज प्रदेश की तस्वीर आपके सामने है आज प्रदेश को चौपट प्रदेश बनाकर रख दिया है। आज प्रदेश में स्वास्थ्य और शिक्षा व्यवस्था चौपट है। वे नौजवानों को देखते हैं तो उन्हें बड़ी चिंता होती है, क्योंकि इन नौजवानों से पूरे मध्यप्रदेश का निर्माण होना है। लेकिन अगर इन्हीं का भविष्य अंधकार में रहा तो किस तरह से निर्माण होगा। आज

कांग्रेस की सरकार आने पर हम सभी माताओं और बहनो को 1500 रूपए प्रति महीने सम्मान राशि देंगे, गैस का सिलेंडर 500 रूपए में देने का काम करेंगे:- कमलनाथ, पूर्व मुख्यमंत्री कांग्रेस

मध्यप्रदेश में एक करोड़ नौजवान बेरोजगार हैं। आज प्रदेश में पैसे दो और रोजगार लो की व्यवस्था चल रही है, प्रदेश में 250 से अधिक घोटाले हुए हैं।

श्री कमलनाथ ने कहा कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की घोषणा मशीन अब डबल स्पीड से चल रही है। उन्होंने कहा कि वे पूरे प्रदेश में घूमते हैं, किसान मिलते हैं और उनसे कहते हैं कि उन्हें खाद दिलवा दीजिए। आज नौजवान बिना काम के, किसान बिना दाम के, वे कहते हैं कि फिर शिवराज सिंह चौहान किस काम के हैं। उन्होंने कहा कि श्री चौहान कहते थे कि वे एक लाख युवाओं को नौकरी देने वाले हैं तब वे उनसे कहते थे कि आप एक लाख युवाओं को नौकरी छोड़िए जो रिक्त खाली पद हैं, उन्हें ही भर दीजिए। लेकिन श्री चौहान की झूठ की मशीन लगातार डबल स्पीड से चलती रही। श्री चौहान ने कहा था कि वे 450 में सिलेंडर देंगे क्या आपको सिलेंडर मिला।

कांग्रेस नेता ने 15 महीने की सरकार पर बोलते हुए कहा कि हमने 27 लाख किसानों का कर्जा माफ किया। हमने मुरैना में 46 हजार किसानों का कर्जा माफ़ हमने किया था। हमने 15 महीने की सरकार में 1000 गौशालाएं बनवाई थी। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार आते ही हम फिर से किसानों का कर्ज माफ़ करेंगे। हमारी सोच है कि किसानों की जेब में पैसा पहुंचे और उसे फसल का सही दाम मिले। हमारी सरकार थी तब किसानों को खाद और बीज के लिए भटकना नहीं पड़ता था। आप हमारी 15 महीने की सरकार के गवाह हैं।

जिनके अक्ल के दांत नहीं आये वे भी कर रहे नेहरू पर टिप्पणी : कांग्रेस

पटना। बिहार कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ. अखिलेश प्रसाद सिंह ने भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधा और कहा कि जिनके अक्ल के दांत नहीं आये वे भी देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू पर टिप्पणी कर रहे हैं। डॉ. सिंह ने मंगलवार को यहां पार्टी मुख्यालय सदाकत आश्रम में भारत सेवक समाज की ओर से आयोजित नेहरू जयन्ती के अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए कहा कि पंडित नेहरू इस देश के लिए हमेशा प्रासंगिक रहे हैं। लेकिन, केंद्र की मौजूदा मोदी सरकार के आने के बाद उनकी प्रासंगिकता और बढ़ गयी है क्योंकि भाजपा शासन में उन्माद को हवा दी जा रही है और देश में नफरत और असहिष्णुता का वातावरण व्याप्त हो गया है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि जबसे भाजपा ने केंद्र की सत्ता संभाली है तबसे एक नया फैशन शुरू हो गया है। उन्होंने कहा कि जिनके अक्ल के दांत भी अभी नहीं उगे हैं वे भी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पंडित नेहरू जैसे महान विचारक और राष्ट्र भक्त महानायकों पर टीका-टिप्पणी करने लगे हैं। डॉ. सिंह ने कहा कि इसी तरह संघ परिवार और उसका समस्त कुनबा पंडित नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल के बीच दरार दिखाकर सरदार पटेल को अपनाने की नापाक कोशिश में लगी हुई है। उनको यह मालूम नहीं कि यह सरदार पटेल ही थे जिन्होंने महात्मा गांधी की हत्या के बाद वर्ष 1948 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) पर साम्प्रदायिक हिंसा में लिप्त होने के कारण पाबंदी लगा दी थी। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों की दो श्रेणी है। एक श्रेणी उन देशभक्तों की है, जिन्होंने आजादी की लड़ाई में अपना सबकुछ न्यौछावर कर दिया तो दूसरी तरफ वे हैं जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाने के साथ-साथ आजादी मिलने के बाद देश में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की मजबूत बुनियाद खड़ी कर देश का भविष्य संवारा।

पवन कल्याण तेलंगाना चुनाव में एकमात्र ‘आंध्र फेस’

हैदराबाद, 14 नवम्बर (एजेंसियां)। तेलंगाना विधानसभा चुनाव राज्य में पिछले दो चुनावों से अलग है, क्योंकि इस बार तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) मैदान में नहीं उतर रही है। हाल ही में पड़ोसी आंध्र प्रदेश में टीडीपी सुप्रीमो और पूर्व सीएम एन. चंद्रबाबू नायडू की गिरफ्तारी और उसके बाद के घटनाक्रम ने टीडीपी को तेलंगाना विधानसभा चुनाव से दूर रहने के लिए मजबूर किया। कथित कौशल विकास घोटाले में सितंबर में आंध्र प्रदेश सीआईडी द्वारा गिरफ्तार किए गए नायडू वर्तमान में स्वास्थ्य आधार पर अंतरिम जमानत पर हैं, और वह कम से कम तीन अन्य भ्रष्टाचार मामलों में जांच का सामना कर रहे हैं। आंध्र प्रदेश के विभाजन के बाद यह पहली बार है कि पार्टी तेलंगाना में चुनाव नहीं लड़ रही है। टीडीपी ने 2014 का चुनाव बीजेपी के साथ गठबंधन में लड़ा था। टीडीपी ने जहां 15 सीटें जीतीं, वहीं बीजेपी को पांच सीटें मिलीं थीं। टीडीपी ने ग्रेटर हैदराबाद और खम्मम जिले के निर्वाचन क्षेत्रों में सीटें जीतीं, जहां आंध्र प्रदेश के मतदाताओं की एक बड़ी संख्या है। हालांकि, बाद में टीडीपी के लगभग सभी विधायक टीआरएस (अब बीआरएस) में शामिल हो गए।

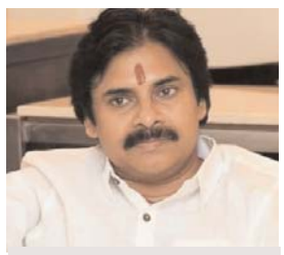

पूर्व सीएम एन. चंद्रबाबू नायडू की गिरफ्तारी और उसके बाद के घटनाक्रम ने टीडीपी को तेलंगाना विधानसभा चुनाव से दूर रहने के लिए मजबूर किया

साल 2018 में टीडीपी ने कांग्रेस के नेतृत्व वाले महा कुटमी या ग्रैंड गठबंधन के हिस्से के रूप में तेलंगाना चुनाव लड़ा।

नायडू ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी के साथ सक्रिय रूप से प्रचार किया था। हालांकि, गठबंधन को हार का सामना करना पड़ा क्योंकि उसने 119 सदस्यीय विधानसभा में केवल 21 सीटें जीतीं। 2018 में टीडीपी को खम्मम जिले में दो सीटें मिलीं। टीडीपी के इस बार चुनाव नहीं लड़ने के फैसले से कांग्रेस को मदद मिलने की संभावना है, जो सत्तारूढ़ बीआरएस के साथ सीधी लड़ाई में है। कांग्रेस नेताओं को उम्मीद है कि टीडीपी के पारंपरिक मतदाता बीआरएस विरोधी वोटों के विभाजन को रोकने के लिए उनकी पार्टी का समर्थन करेंगे।

हालांकि, बीआरएस नेताओं का कहना है कि आंध्र प्रदेश के मतदाता उनकी पार्टी को वोट दे रहे हैं जो बिना किसी भेदभाव के सभी के कल्याण के लिए काम कर रही है। चुनावी लड़ाई से नायडू की अनुपस्थिति महत्वपूर्ण है क्योंकि पिछले दोनों चुनावों में टीडीपी ने अपनी उपस्थिति का इस्तेमाल तेलंगाना में प्रवेश के लिए आंध्र पार्टी की साजिश के इर्द-गिर्द एक कहानी बनाने के लिए किया था।

टीआरएस नेता लोगों से राज्य के संसाधनों पर नियंत्रण पाने की आंध्र पार्टी की साजिशों को हराने की अपील करके तेलंगाना के स्वाभिमान का आह्वान करेंगे। हालांकि, नायडू दावा करते रहे हैं कि टीडीपी दोनों राज्यों के तेलुगु लोगों के कल्याण के लिए काम करती है। टीआरएस नेताओं ने उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में चित्रित करने की कोशिश की जो आंध्र प्रदेश के हितों का प्रतिनिधित्व करता है। हालांकि, जन सेना पार्टी (जेएसपी) नेता और अभिनेता पवन कल्याण की एंट्री से कांग्रेस की उम्मीदों पर पानी फिर सकता है।

इंडिया गठबंधन की राह हुई मुश्किल, कांग्रेस के जातिगत जनगणना पर सपा साध रही निशाना

नई दिल्ली, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। भाजपा के खिलाफ राजनीतिक हथियार बनाने के लिए जिस जातीय जनगणना को इंडिया गठबंधन बडा मुद्दा बनाना चाह रहा है, उसी मुद्दे पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव कांग्रेस को कटघरे में खडा कर रहे हैं। माना जा रहा है कि पिछडों का नेता बनने की होड में अखिलेश कांग्रेस पर हमलावर हो गए हैं।

गौरतलब है कि मध्यप्रदेश की एक चुनावी सभा में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने जातिगत जनगणना कराए जाने की बात करते हुए कहाकि यह एक्सरे की तरह होगी और तमाम समुदायों का अक्स सामने आ जाएगा। इस तरह वे भाजपा को ओबीसी विरोधी साबित करने की कोशिश कर रहे हैं। वहीं राहुल गांधी की इस टिप्पणी को खारिज करते हुए अखिलेश यादव आरोप लगाते हैं कि पिछली कांग्रेस की सरकारो ने इस मुद्दे पर कोई कार्रवाई क्यों नहीं की। उन्होंने कहाकि जब कांग्रेस सत्ता में थी तो उस समय जातीय जनगणना करा सकती थी। अगर एक्सरे उसी समय हो गया होता तो परेशानी नहीं बढती। अब बीमारी बढ गई है, एक्सरे की नहीं बल्कि एमआरआई और सीटी स्कैन की जरूरत है। यही नहीं उन्होंने कहाकि कांग्रेस की जातीय जनगणना की मांग सबसे बडा चमत्कार है। क्योंकि यह वही पार्टी है,जिसने आजादी के बाद जातीय जनगणना नहीं करवाई। उन्होंने कहाकि यही नहीं जब भी इसकी मांग की गई तो कांग्रेस सरकार खरिज करती रही। उन्होंने कहाकि कांग्रेस जातीय जनगणना की बात सिर्फ इसलिए कर रही है,क्योंकि उसका कोर कोर वोटबैंक अब उसके साथ नहीं है। हालांकि कांग्रेस उन्हें कोई जवाब नहीं दे रही है। लेकिन माना जा रहा है कि मध्यप्रदेश में सीट बटवारे की बात परवान न चढने के बाद अखिलेश अब कांग्रेस पर हमलावर रहेंगे और इंडिया गठबंधन में अपनी शर्तो के साथ रहेंगें और लोकसभा चुनाव में सीट बटवारे को लेकर कांग्रेस की सौदेबाजी स्वीकार नहीं करेंगे।

रेवंत रेड्डी के ‘खाकी निक्कर’ वाले बयान पर ओवैसी का पलटवार, कहा ‘आरएसएस की कठपुतली’

हैदराबाद, 14 नवंबर (एजेंसियां)। आरएसएस के साथ कथित संबंधों को लेकर तेलंगाना कांग्रेस प्रमुख ए. रेवंत रेड्डी और एआईएमआईएम अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी के बीच जुबानी जंग छिड़ गई है। रेवंत रेड्डी ने कहा था कि असदुद्दीन ओवैसी की शेरवानी के नीचे ‘खाकी निक्कर’ है। इसके बाद ओवैसी ने रेवंत रेड्डी को ‘आरएसएस की कठपुतली’ बताया। हैदराबाद से लोकसभा सांसद असदुद्दीन ओवैसी पिछले कुछ हफ्तों से रेवंत रेड्डी पर उनकी कथित आरएसएस बैकग्राउंड को लेकर निशाना साध रहे हैं। चुनाव प्रचार के तहत सार्वजनिक बैठकों के दौरान असदुद्दीन औवैसी और उनके भाई अकबरुद्दीन औवैसी आरोप लगाते रहे हैं कि रेवंत रेड्डी आरएसएस के एजेंडे को बढ़ावा दे रहे हैं। बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष के.टी. रामा राव ने भी कई मौकों पर इस मुद्दे को उठाया था। उन्होंने टिप्पणी की थी कि कांग्रेस ने आरएसएस बैकग्राउंड वाले एक व्यक्ति को राज्य प्रमुख के रूप में नियुक्त कर गांधी भवन (राज्य कांग्रेस मुख्यालय) को ‘गोडसे भवन’ में बदल दिया है। तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस कमेटी (टीपीसीसी) कमेटी के प्रमुख ने स्वीकार किया कि वह अतीत में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) से जुड़े थे, लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के साथ किसी भी तरह के संबंध से इनकार किया। इस जुबानी जंग का लेटेस्ट दौर पिछले सप्ताह तब शुरू हुआ जब रेवंत रेड्डी ने चुनावी रैलियों के दौरान असदुद्दीन ओवैसी द्वारा उन्हें ‘आरएसएस अन्ना’ कहकर संबोधित करने पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। ओवैसी पर अपना हमला तेज करते हुए रेवंत रेड्डी ने सोमवार को टिप्पणी की थी कि असदुद्दीन ओवैसी की शेरवानी के नीचे ‘खाकी निक्कर’ है। मैंने सोचा कि असदुद्दीन ओवैसी की शेरवानी के नीचे पायजामा है लेकिन उसके नीचे खाकी निक्कर है।

जुमलेबाज मन ला काबर चुनना
वादा नइ निभइस मारिस लबारी

एक रिहिस मिठलबरा
वादा करके नइ निभइस
2100 रु धान के कीमत नइ मिलिस
300रु बोनस हर साल नइ मिलिस
हर आदिवासी परिवार ला नौकरी नइ दिस

एक हे बड़लबरा
वादा करके जुमला बता दिस
किसान के आय दोगुना नइ होइस
काला धन वापस नइ अइस, 15 लाख खाता में नइ अइस
हर साल दू करोड़ रोजगार नइ मिलिस

फेर देवत हे झूठा गारंटी लबरा मन
नइ करन भरोसा ओखर उपर हमन

चुनना हे फेर कांग्रेस ला
जे हर वादा ल निभइस

वादा हे, फेर निभाबो
माता-बहिनी मन ला मिलही हर साल 15,000 रुपया
किसान के कर्जा फेर होही माफ
20 क्विंटल धान खरीदी शुरु, दाम मिलही 3,200 रुपया
गैस सिलेंडर भरवाहू त 500 रु सीधा आही महतारी-बहिनी के खाता म
200 यूनिट तक बिजली मिलही मुफ्त
केजी से पीजी तक पढ़ई होही बिना फीस, इंजीनियरिंग, मेडिकल अउ डिप्लोमा घलो म लागू
छत्तीसगढ़ के सब्बो स्कूल ल स्वामी आत्मानंद स्कूल योजना में लाबो, बढ़िया बनाबो
तेंदूपत्ता के मिलही 6,000 बोरा अउ 4,000 रुपिया सालाना बोनस भी
इलाज बर मिलही अब 10 लाख रुपया तक के सहायता

भरोसा बरकरार, फिर से कांग्रेस सरकार
छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी

बिलासपुर, बुधवार 15 नवम्बर 2023

संस्थापक-संपादक : स्व. मायाराम सुरजन

और कितने हादसे देखेंगे पहाड़!

पहाड़ों के साथ छेड़छाड़ का एक और नतीजा बड़े हादसे के रूप में सामने आया है जिसमें उत्तराखंड स्थित उत्तरकाशी के बड़कोट में एक निर्माणाधीन सुरंग धसक गयी। उत्तरकाशी में ब्रह्मखाल-यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग पर सिलक्यारा से डंडालगांव के बीच यह सुरंग बन रही है। इसमें करीब 40 मजदूर फंसे हुए हैं जिन्हें सुरक्षित निकालने के लिए पिछले 3 दिनों से प्रयास हो रहे हैं। केन्द्र के एनडीआरएफ तथा राज्य के एसडीआरएफ समेत अनेक विशेषज्ञ टीमें मलबे को हटाकर उन्हें निकालने हेतु प्रयासरत हैं। सुरंग के अंदर फंसे ज्यादातर प्रवासी मजदूर हैं- मुख्यत: उत्तर प्रदेश के। आशा है कि बचाव टीमें इन्हें सुरक्षित निकालने में कामयाब होंगी। बताया गया है कि सुरंग के भीतर फंसे हुए मजदूर सुरक्षित हैं। वॉकी टॉकी के माध्यम से रेस्क्यू टीम का उनसे संपर्क बना हुआ है। उत्तरकाशी की मिट्टी बहुत नर्म है। इसके चलते ऊपर से चट्टानें, मिट्टी आदि लगातार नीचे गिर रही है। इसके कारण भी बचाव कार्य में बड़ी दिक्कतें आ रही हैं।

पहाड़ों के साथ जैसा व्यवहार मनुष्य की ओर से हो रहा है उसका एक और उदाहरण इस हादसे के रूप में सबके सामने है। अब यह सोचने का वक्त आ गया है कि किस तरीके से पहाड़ों में विकास कार्य किये जायें कि प्रकृति को न्यूनतम नुकसान हो और कम से कम ऐसे दर्दनाक हादसे तो न ही घटें। उल्लेखनीय है कि इसी साल की जनवरी में जोशीमठ में कई जगहों पर जमीनों पर बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गईं। अनेक घरों में भी दरारें आई हैं जिसके कारण सैकड़ों लोगों ने जोशीमठ ही छोड़ दिया है। उन्हें अस्थायी शिविरों में शरण लेनी पड़ी थी। आज भी यहां के लगभग 700 मकानों में दरारें देखी जा सकती हैं। यह कस्बा एक तरह से खाली हो गया है। पिछले साल अक्टूबर में उत्तरकाशी के ही भटवाड़ी इलाके में द्रौपदी के डांडा-2 पर्वत शिखर पर जोरदार बर्फीला तूफान आया था। इससे 34 पर्वतारोहियों की मौत हो गई थी। इनमें 25 प्रशिक्षु थे जबकि 2 प्रशिक्षक थे। 2013 में केदारनाथ की त्रासदी को कोई नहीं भूल सकता। यह हाल के वर्षों में उत्तराखंड की सर्वाधिक बड़ी त्रासदी मानी जाती है जिसमें पता नहीं कितने लोगों की मौत हो गई थी। आज तक यह ठीक-ठीक नहीं बताया जा सकता कि कितने लोग मारे गये। अक्टूबर 1991 में जोरदार भूकंप आया था जिससे करीब एक हजार लोग मारे गये थे। हजारों मकान भी पूरी तरह से बर्बाद हो गये थे। तब यह अविभाजित उत्तर प्रदेश का हिस्सा था। ऐसे ही, काफी पहले पिथौरागढ़ जिले का माल्पा गांव भूस्खलन के चलते पूरी तरह से उजड़ गया था। इस हादसे में 255 लोगों की मौत हुई थी जिनमें कैलाश मानसरोवर जाने वाले 55 से ज्यादा श्रद्धालु थे। चमोली जिले में रिएक्टर स्केल पर 6.8 की तीव्रता वाले भूकंप के चलते 100 से अधिक लोगों को जान गंवानी पड़ी थी। इससे सटे हुए जिले रुद्रप्रयाग में भी भारी नुकसान हुआ था और अनेक घरों, सड़कों तथा जमीनों में दरारें आई थीं।

उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश समेत पूरी हिमालयीन पर्वत श्रृंखला अपेक्षाकृत पृथ्वी पर होने वाला नया प्राकृतिक निर्माण है। कुछ ही स्थलों को छोड़ दें तो कम आयु की यह पर्वतमाला ज्यादातर स्थलों पर कच्ची है। भूवैज्ञानिकों के अनुसार इसका निर्माण अब भी जारी है। उसमें भी उत्तराखंड की मिट्टी तो और भी भुरभुरी होने के कारण पृथ्वी की परतों के नीचे होने वाली हलचलों का असर हिमाचल प्रदेश के साथ इसी क्षेत्र में सर्वाधिक पड़ता है। नेपाल में बार-बार आने वाले भूकम्पों का कारण भी यही भूगर्भीय हलचलें हैं। ये पहाड़ अपनी खूबसूरती के कारण देश-विदेश से करोड़ों लोगों को आकर्षित करते हैं। दरअसल उसके दिलकश नज़ारे ही उसके लिये अभिशाप बन गये हैं क्योंकि उनका आनंद लेने के लिये बड़ी संख्या में आने वालों के लिये ही निर्माण कार्य हो रहे हैं। यहां पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये हुए निर्माण कार्यों को यहां की आपदाओं के लिये प्रमुख रूप से दोषी बताया जाता है। जगह-जगह बनने वाले होटल, मकान, बहुमंजिला इमारतें, व्यवसायिक परिसर, रिसोर्ट्स, होमस्टे आदि के कारण जमीनों का प्राकृतिक स्वरूप तेजी से बदल दिया गया है।

अंतरराष्ट्रीय सीमाएं लगने के कारण इस पूरे क्षेत्र का सैन्य महत्व भी है। सीमाओं पर चौकसी व उनकी सुरक्षा के लिये बड़ी सड़कें, पुल, सुरंगें आदि बनाई जाती हैं। इनसे भी पहाड़ों को नुकसान पहुंचता है। इन पहाड़ों में पनबिजली उत्पादन की भी अपार सम्भावनाएं हैं क्योंकि पर्वतों से निकलने वाली नदियों और नालों से बिजली संयंत्रों को पानी मिलता है। इसके लिये पानी के बहाव को मोड़ा गया है, बांध बने हैं, सुरंगें बनी हैं एवं विशाल निर्माण हुए हैं जिनसे बड़ी तादाद में बने विद्युत संयंत्रों को जल की आपूर्ति होती है।

हाल के वर्षों में सरकारों द्वारा नयी सड़कें या उनका चौड़ीकरण, पुल, सुरंग आदि का निर्माण बड़े पैमाने पर हो रहा है। इसके लिये होने वाले विस्फोटों व मशीनों के कारण भी पहाड़ों को भारी नुकसान होता है। इससे जलवायु में भी परिवर्तन हो रहा है। अब तो पहाड़ों के ऋतु चक्र में तक बदलाव दर्ज हो रहे हैं। ऊपरी इलाकों में स्थित ग्लेशियरों के पिघलने के कारण इन पहाड़ों से निकलने वाली नदियों का जल स्तर बढ़ने तथा भूगर्भीय जल के कारण सतह के ऊपर बड़ी टूट-फूट हो रही है। नये-नये निर्माण कार्यों के परिणाम ऐसी ही त्रासदियों एवं हादसों के रूप में सामने आ रहे हैं। विकास की आवश्यकता से कोई इंकार नहीं कर सकता लेकिन इन त्रासदियों एवं हादसों को देखते हुए नियंत्रित व वैज्ञानिक तरीके से निर्माण किये जाने चाहिये।

आखिरकार भाजपा को कांग्रेस ने उतारा यथार्थ की ज़मीन पर

वैसे तो देश के पांच राज्यों (राजस्थान, मध्यप्रदेश, तेलंगाना, मिजोरम एवं छत्तीसगढ़) में विधानसभा चुनाव हो रहे हैं लेकिन इनमें दूसरा सबसे छोटा राज्य छत्तीसगढ़ कुछ विशिष्ट मायनों में अति महत्वपूर्ण बन गया है। यहां के राजनैतिक विमर्श से पिछले कुछ समय से जो राजनीतिक दबदबा एवं बढ़त भारतीय जनता पार्टी के पास थी, वह अब छूट रही है। पांच साल पहले बड़े बहुमत से छत्तीसगढ़ में बनी कांग्रेस की सरकार ने जहां एक ओर अनेक लोकहितकारी काम किये हैं, उसने भाजपा को राजनैतिक जवाब तो दिया ही है, देश के सम्पूर्ण सियासी नैरेटिव को बदलकर रख दिया है। नुकसान में भाजपा ही है।

मतदाताओं को लुभाने के लिये अब जिस तरह से पांच राज्यों के चुनावों में प्रमुख राजनैतिक दल घोषणाएं कर रहे हैं उससे मतदाताओं के विभिन्न वर्गों की सचमुच मौज हो गई है। पिछले कुछ वर्षों से जिस प्रकार से आर्थिक एवं जमीनी मुद्दे सियासी विमर्श से हट गये थे, वे इन चुनावों के जरिये वापस केन्द्र में आ रहे हैं। यथार्थवादी मुद्दों की जगह पर भावनात्मक मसलों को तरज़ीह देने वाली भारतीय जनता पार्टी भी रास्ता बदल रही है। मतदाताओं ने उसे सही राह पर तो लाया है, अब अवाम को केवल यह सीखना बचा है कि गारंटियां देने वाली राजनैतिक पार्टियों के जीतने पर उनके नेताओं को कान पकड़कर उन्हें पूरा करने पर मजबूर किया जाये।

पिछले दिनों हिमाचल एवं कर्नाटक में मिली पराजयों से उम्मीद की जा रही थी कि भाजपा का राजनैतिक विमर्श बदलेगा परन्तु उसका साम्प्रदायिकता, सामाजिक ध्रुवीकरण और ऐसे ही भावनात्मक मुद्दों पर विश्वास इतना गहरा है कि वह इस लाइन को सहजता से नहीं छोड़ती। हालांकि उसे कर्नाटक में मिली हार से सबक लेना चाहिये था जब वहां कांग्रेस द्वारा अपने घोषणापत्र में बजरंग दल पर प्रतिबंध के वादे को उसने बजरंग बली से जोड़ दिया था लेकिन उसका कोई फायदा उसे मिल नहीं पाया था। खुद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सभाओं में बजरंग बली के नारे लगवाए गए और प्रदेश भर में चुनाव के अंतिम दौर में हनुमान चालीसा के सामूहिक पाठ भी कराये गये। इसके बाद भी जिस तरह से भाजपा को मुंह की खानी पड़ी तो उसके बाद हो रहे इन इन पांच राज्यों में उससे सबक लेते हुए कम से कम इस तरीके के प्रचार से तौबा करनी चाहिये थी। वैसे इसके लिये इन राज्यों में उसकी गुंजाइश बची भी नहीं है।

राजस्थान में भाजपा ने इसकी कोशिश की जहां कुछ अरसा पहले हुए एक दर्जी कन्हैयालाल की हत्या के मामले को भुनाने की कोशिश हुई, पर वह विमर्श भी नहीं बढ़ पाया। वहां के लोगों ने राजस्थान सरकार के कामों को पसंद किया, खासकर सस्ते रसोई गैस सिलिंडर, पुरानी पेंशन योजना आदि। छत्तीसगढ़ ने और भी बेहतर उदाहरण पेश किया। यहां पहले चरण का मतदान (7 नवम्बर) हो जाने के बाद और दूसरे चरण (17 नवम्बर) के पहले भारतीय जनता पार्टी ने ऐलान कर दिया कि अगर वह चुनाव जीतती है तो राज्य की सभी विवाहित महिलाओं को महतारी वंदन योजना के अंतर्गत हर माह 1000 रुपए तक की आर्थिक मदद दी जायेगी। इसके लिये उसने प्रमुख अखबारों में आधे-आधे पेज के विज्ञापन प्रकाशित किये जिसमें एक फॉर्म भी था। महिलाओं से कहा गया कि वे इसे भरकर भाजपा के स्थानीय कार्यालयों में जमा करें। मकसद साफ है कि जो महिलाएं इन आवेदनों को जमा करेंगी उन्हें पार्टी के पक्ष में मतदान करने के लिये प्रेरित किया जायेगा। आचार संहिता का यह खुला उल्लंघन तो है ही, अनैतिक भी है। निर्वाचन आयोग ने इसे लेकर भाजपा की राज्य इकाई के अध्यक्ष अरुण साव के अलावा कुछ भाजपा प्रत्याशियों को नोटिस भी जारी की है। एक पूर्व मंत्री राजेश मूणत की तरफ से भी मतदाताओं के मोबाइलों पर डायरेक्ट मैसेज मिले हैं जिनमें एक ईमेल आईडी दी गई है और कहा गया था कि वे इस योजना का लाभ लेने के लिये इस लिंक पर आवेदन करें। अब इसके जवाब में कांग्रेस ने इसी की तर्ज़ पर 15 हजार रुपये सालाना आर्थिक मदद देने का ऐलान कर मतदाताओं के रुख को पलटाने का दांव चल दिया जिसका भाजपा निरूत्तर है।

इसके पहले यहां कुछ जगहों पर साम्प्रदायिकता का रंग देने की कोशिशें हुई हैं, जैसी कि अनेक राज्यों में हुई है। विशेषकर, कद्दावर नेता मोहम्मद अकबर के चुनावी क्षेत्र कवर्धा में उनके खिलाफ प्रचार करने के लिये कई तल्ख़ ज़ुबानी बाहरी नेताओं को उतारा गया। इनमें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, असम के मुख्यमंत्री हिमंता विस्व सरमा आदि शामिल हैं। इसके अलावा कई साधु-संतों को तक उतारा गया। हिमंता ने तो अंदेशा जताया कि 'एक अकबर के आने से कई अकबर आते हैं,' लेकिन बाद में वे इससे मुकर गये। ऐसे ही, कुछ समय पहले बेमेतरा में एक साम्प्रदायिक झगड़े में मारे गये भुनेश्वर साहू के पिता ईश्वर साहू को मंत्री रवीन्द्र चौबे के विरूद्ध भाजपा ने मैदान में उतारा है। फिर भी ये पैंतरे काम नहीं आ रहे हैं क्योंकि छग सचमुच शांति का टापू है। इसलिये हमेशा की तरह भाजपा सरकार ने केन्द्रीय जांच एजेंसियों के अधिकारियों को भी काम पर लगा दिया है। कर्नाटक में बजरंग दल को बजरंग बली से मिलाने की ही तरह छग में भी भाजपा ने महादेव एप को भगवान महादेव से जोड़ दिया। मोदी, केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह जैसे नेता भी महादेव एप के जरिये भूपेश बघेल को 500 करोड़ रुपये मिलने का प्रचार तो कर रहे हैं परन्तु यह कोई भी नहीं बता पा रहा है कि ये पैसे आए कैसे और खुद छत्तीसगढ़ सरकार के महादेव एप पर प्रतिबंध लगाने की मांग को क्यों केन्द्र ने लम्बे समय तक लटकाये रखा?

डॉ. दीपक पाचपोर

कर्नाटक के बाद छत्तीसगढ़ ने साबित कर दिया है कि भाजपा के साम्प्रदायिक कार्ड के दिन लद गये हैं। जमीन पर पूरी तरह से उतर चुकी भाजपा अब सस्ते गैस सिलेंडर की बात करती है, वह चुनाव जीतने पर किसानों को प्रति क्विंटल 3100 रुपए का ऊंचा न्यूनतम समर्थन मूल्य देना चाहती है- बिना यह बताये कि पड़ोसी राज्य मध्यप्रदेश में इसका भाव 2100 रुपए क्यों है।

कर्नाटक के बाद छत्तीसगढ़ ने साबित कर दिया है कि भाजपा के साम्प्रदायिक कार्ड के दिन लद गये हैं। जमीन पर पूरी तरह से उतर चुकी भाजपा अब सस्ते गैस सिलेंडर की बात करती है, वह चुनाव जीतने पर किसानों को प्रति क्विंटल 3100 रुपए का ऊंचा न्यूनतम समर्थन मूल्य देना चाहती है- बिना यह बताये कि पड़ोसी राज्य मध्यप्रदेश में इसका भाव 2100 रुपए क्यों है जहां उसी की सरकार है। अब वह छत्तीसगढ़ के लोगों को अपने घोषणापत्र में कहती है कि प्रदेश में महात्मा गांधी ग्रामीण रोजगार योजना (मनरेगा) में बेहतरीन काम हुआ है। वही मनरेगा जिसे मोदी भरी संसद में चटकारे लेकर कहते थे कि 'यह कांग्रेस की 'विफलता का स्मारक' है और वह इसे बन्द न करके इसे जारी रखेंगे ताकि जनता देख सके कि आजादी के इतने वर्षों के बाद भी सरकार लोगों को गड्ढे खोदने के लिये भेजती है।' अब भाजपा के लिये किसी को नगद राशि देना रेवड़ियां नहीं रह गया है। हालांकि अभी भी भाजपा यहां ओबीसी और कर्ज माफी के मामले पर मौन है। इसलिये यह चुनाव भाजपा सहित सभी राजनैतिक दलों को यह भी बताएगा कि जनहित के मामलों को जल्दी और वक्त पर लागू किया जाना चाहिये, न कि चुनावी हार को सामने देखकर।

छत्तीसगढ़ का विमर्श अन्य चारों राज्यों में भी फैलता दिख रहा है। उम्मीद है कि वह अगले साल होने जा रहे लोकसभा के चुनाव में भी बना रहेगा। यहां कोई जीते या हारे, तमाम राज्यों में कोई जीते या हारे, लोकसभा-2024 भी कोई हारे या जीते, देश का राजनैतिक विमर्श ठोस जमीनी रहेगा- यही छत्तीसगढ़ का योगदान है।

(लेखक देशबन्धु के राजनीतिक सम्पादक हैं)

हमारे लोकतंत्र और चुनावी प्रक्रिया की कमियां दूर करने के कुछ सुझाव

हमारे देश के चुनावों को करोड़पतियों ने हाईजैक कर लिया है। जितने उम्मीदवार चुनावी मैदान में उतरते हैं उनमें से बहुसंख्यक करोड़पति होते हैं। चूंकि वे स्वयं करोड़पति होते हैं इसलिए वे चुने जाने के बाद करोड़पतियों के हितों का ही ख्याल रखते हैं। अब यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि भारतीय प्रजातंत्र करोड़पतियों के लिए, करोड़पतियों द्वारा बनाई गई व्यवस्था है।

हमारे संविधान की उद्देशिका में लिखा है भारत एक सेक्युलर, सोशलिस्ट रिपब्लिक है। चुनाव के दौरान यह उद्देशिका पूरी तरह भुला दी जाती है। चुनावों के दौरान सेक्युलरिज्म की कोई चर्चा नहीं होती। उल्टे मतदाताओं से धर्म के नाम पर अपील की जाती है। प्राय: उम्मीदवार मंदिर जाते हैं, भगवान से आशीर्वाद मांगते हैं, बड़ी-बड़ी मन्नतें मांगते हैं, भारी-भरकम चढ़ावा चढ़ाते हैं। जाति का तो कहना ही क्या- उम्मीदवारों का चयन ही जाति के आधार पर होता है।

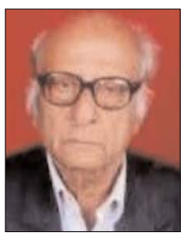

एल. एस. हरदेनिया

हमारे देश की जनता दलबदल के पूरी तरह विरूद्ध है परंतु दलबदल होने पर वह सड़कों पर निकलकर उसका विरोध नहीं करती। यदि जनता दलबदल करने वाले सांसदों और विधायकों का सामाजिक बहिष्कार करने लगे तो भविष्य में कोई भी सांसद या विधायक दलबदल करने का साहस नहीं करेगा। इसी तरह जो अन्य कमियां हमारे लोकतंत्र में आ गई हैं उन्हें भी प्रबल सामूहिक विरोध के माध्यम से ही दूर किया जा सकेगा।

जहां तक सोशलिज्म का सवाल है, लगभग सभी पार्टियां इस शब्द को पूरी तरह भूल गई हैं। सोशलिज्म का उद्देश्य समतामूलक समाज का निर्माण करना है। लेकिन इस देश में मुकेश अंबानी रहते हैं, जिनके मकान में तीन सौ कमरे हैं। इस मकान के संदर्भ में प्रसिद्ध शायर कैफी आजमी की वह कविता याद आती है -

'आज की रात बहुत गर्म हवा चलती है,
अब इस फुटपाथ पर न सोया जाएगा,
तुम भी उठो, हम भी उठें,
कोई खिड़की इस दीवार में खुल जाएगी'।

यह बात सिर्फ अंबानी पर लागू नहीं होती। यह स्थिति पूरे देश की है। यह असमानता सिर्फ मकानों व झोपड़ियों तक सीमित नहीं है। यह खेती की जमीन पर भी लागू होती है। यद्यपि हमारे देश में खेती की जमीन पर सीलिंग कानून लागू है परंतु आज भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो सैकड़ों एकड़ जमीन के मालिक हैं, जो खुलेआम सीलिंग कानून का उल्लंघन है।

एक और बुनियादी सिद्धांत का पालन नहीं हो रहा है। जिस बड़े पैमाने पर दलबदल कर सरकारें बनाईं और गिराई जाती हैं उसके चलते अब चुनाव का कोई मतलब नहीं रह गया है। मध्यप्रदेश में 2020 में जो हुआ वह इसका जीता-जागता उदाहरण है। आप चुनाव किसी घोषणापत्र पर और किसी पार्टी के उम्मीदवार के तौर पर जीते और चुनाव जीतने के बाद सत्ता की खातिर क्षण भर में उस पार्टी को छोड़कर दूसरी पार्टी में शामिल हो गए। मध्यप्रदेश में जो हुआ था वह अवसरवादिता और सिद्धांतहीनता की पराकाष्ठा थी। जिन लोगों ने दलबदल किया उन्होंने पहले चिल्ला-चिल्लाकर भाजपा को साम्प्रदायिक दल बताया था। सन् 2018 में चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा का हमला मुख्यत: ज्योतिरादित्य सिंधिया पर केन्द्रित था। हम 'माफ करो महाराज' नारे को भूल नहीं सकते जो सिंधिया के विरूद्ध बार-बार लगाया गया था। वही सिंधिया माफ करते हुए कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए।

दलबदल ने हमारे देश में प्रजातंत्र को सिद्धांतहीनता के खंभों पर खड़ा कर दिया है। वैसे द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद दुनिया के जो अनेक देश आजाद हुए थे, उनमें से हमारा देश उन चन्द देशों में से एक है जहां लोकतंत्र कायम है। परंतु दलबदल का दीमक उसे जिस तरह से बर्बाद कर रहा है उससे लगता है कि एक दिन देश का लोकतंत्र ही खतरे में पड़ जाएगा।

भारत में दलबदल की प्रक्रिया को सैद्धांतिक अमली जामा डॉ. राममनोहर लोहिया ने पहिनाया था। उन्होंने नारा दिया था ''जिंदा कौमें पांच साल इंतजार नहीं करती है'। उनका नारा था 'equidistance' उद्देश्य था कि कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी से बराबर की दूरी रखी जाए। जिंदा कौमें...वाले नारे का मतलब था कि यदि चुनी हुई सरकार गड़बड़ करती है तो उसे पांच साल के पहले ही पलट दो। इस नारे का सहारा लेकर दलबदल शुरू हो गया। अनेक सरकारों को दलबदल के जरिए पलट दिया गया। दलबदल के बारे में एक नया नारा उभरा - 'आया राम गया राम'। इस तरह पहली बार भगवान राम का नाम राजनीति में घसीटा गया। मध्यप्रदेश भी उन राज्यों में से एक था जहां दलबदल से सरकार बदली गई। दलबदल के जरिए सरकारें बदलने की इस प्रक्रिया में जनसंघ की प्रमुख भूमिका रही। इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारिका प्रसाद मिश्र ने सुझाव दिया कि जहां भी ऐसे प्रयास हों वहां की विधानसभा को भंग कर दिया जाए। पंडित मिश्र का यह सुझाव नहीं माना गया। यदि यह सुझाव मान लिया गया होता तो हो सकता है कि दलबदल की प्रवृत्ति समाप्त हो जाती। अब यह प्रवृत्ति इतनी बढ़ गई है कि उस पर काबू पाना बहुत मुश्किल हो गया है। राजनीतिक दलों से यह अपेक्षा करना व्यर्थ है कि वे इस प्रवृत्ति को समाप्त करने में पहल करेंगे।

यदि दलबदल को समाप्त करना है तो इसके लिए आम लोगों को ही पहल करनी होगी। आम लोगों को सांसदों पर इतना दबाव बनाना चाहिए कि वे संसद में दलबदल को पूरी तरह प्रतिबंधित करने वाला कानून बनवाने को बाध्य हो जाएं। परंतु यह हमारा दुर्भाग्य है कि सार्वजनिक मुद्दों पर हमारे देश की जनता संगठित नहीं होती है जैसा पश्चिम के राष्ट्रों में होता है। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आदि ऐसे देश हैं जहां जनता की इच्छा के विरूद्ध कोई काम करना बहुत कठिन होता है। जैसे, यदि अमेरिका ईराक पर हमला करता है तो वहां की जनता सड़कों पर निकलकर इसकी भर्त्सना करती है। हम यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे देश की जनता दलबदल के पूरी तरह विरूद्ध है परंतु दलबदल होने पर वह सड़कों पर निकलकर उसका विरोध नहीं करती। यदि जनता दलबदल करने वाले सांसदों और विधायकों का सामाजिक बहिष्कार करने लगे तो भविष्य में कोई भी सांसद या विधायक दलबदल करने का साहस नहीं करेगा। इसी तरह जो अन्य कमियां हमारे लोकतंत्र में आ गई हैं उन्हें भी प्रबल सामूहिक विरोध के माध्यम से ही दूर किया जा सकेगा।

पावन प्रसंग

सद्गुण है विनम्रता

मानवता का प्रथम कदम विनम्रता के साथ शुरू हो तो सफलता उसके कदम चूमना शुरु करती है। विनम्रता मनुष्य के जीवन का वह है जो उसे हर मुसीबत में विजयी होना सिखाता है। सदाशयता भी यदि विनम्रता के साथ जुड़ जाए तो मनुष्य को ऊंचाइयों पर पहुंचने से कोई रोक नहीं सकता है। प्रत्येक मनुष्य जीवन में उस ऊंचाई को अर्जित करना चाहता है, जिसका उसने जीवन में कभी स्वप्न देखा हो, यह जीवन का आवश्यक अंग भी है क्योंकि जीवन की सफलता और सार्थकता एक दूसरे पर आश्रित आवश्यक अंग है। मनुष्य मूल प्रवृत्ति से स्वार्थी, अहंकारी होता है, किंतु जैसे जैसे अपने आसपास के वर्तमान संपर्क में आता है उसकी मूल प्रवृत्ति का लोप होते जाता है तथा नए विचारों का प्रभाव उस पर ज्यादा से ज्यादा होने लगता है। समाज के सामाजिक ढांचे को मजबूती प्रदान करने के लिए सहिष्णुता, करुणा ,सदाशयता आदि गुणों का विकास होता है और इन्हीं गुणों के मिश्रण से विनम्रता रूपी सद्गुण का समन्वय के साथ विकास होता है। विनम्रता के मामले में हम यह कह सकते हैं कि यह वह गुण है जिसे प्रकृति में महान लोगों को ही नवाजा है, या यह कहना चाहिए कि विनम्रता, संयम,सहजता आदि गुणों से ही सामान्य व्यक्ति महानता की ओर अग्रसर होता है। तुच्छ और अंहकारी व्यक्ति विनम्रता को ग्रहण नहीं कर सकता और कूपमंडूक ही बना रहता है। थोड़ा ज्ञान लेकर व्यक्ति 'अधजल गगरी छलकत जाए' की भांति विनम्रता को त्याग देता है ऐसे में वह न आधा रह पाता है न ही पूरा हो पाता है। क्योंकि बड़ा और महान व्यक्ति अपनी प्रशंसा को भी सामान्य ढंग से अंगीकृत करता है और प्रशंसा सुनकर फूल कर कुप्पा नहीं हो जाता है। महान सुकरात ज्ञानी होकर भी कहते थे कि मैं अभी कुछ नहीं जानता मैं अज्ञानी हूं, इस संदर्भ में कबीर ने बहुत अच्छी सूक्ति कही है-

बड़ा भया तो क्या भया जैसे पेड़ खजूर,
पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।

यदि व्यक्ति कोई उपलब्धि हासिल कर ले तो उसका अहंकार करने की बजाय समाज के हित में उसका उपयोग करना चाहिए न कि केवल अपने तक सीमित रखना चाहिए क्योंकि बिना सार्वजनिक हित व उपलब्धि निरर्थक है। फल आने पर वृक्ष झुक जाते हैं उसी प्रकार उपलब्धि पाने पर व्यक्ति को विनम्र हो जाना चाहिए। विनम्रता,सदाशयता वह गुण हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारती है और अहंकार व्यक्तित्व को रसातल पर ले जाता है। विनम्रता को आत्मसात करने वाला व्यक्ति सदा नए विचारों के प्रति आकर्षित रहता है और विनम्रता के साथ नए ज्ञान को आत्मसात करते हुए उसके व्यक्तित्व में स्वत: निखार आने लगता है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम राष्ट्रपति बनने के बाद भी विद्यार्थियों के संपर्क में रहकर उनसे संवाद करते थे जो उनकी महानता को सदैव प्रकाशित करता रहा और उसी विनम्रता सहृदयता के कारण उन्हें भारत रत्न की उपाधि देकर सम्मानित भी किया गया। विनम्रता से ही व्यक्ति पात्रता ग्रहण करता है और विनम्रता ही व्यक्ति को सामाजिक व्यवस्था में महान बनाती है ताकि उसका जीवन लोकहित में समर्पित रहे। विनम्रता व्यक्तित्व में नेतृत्व क्षमता के विकास के लिए भी अत्यंत आवश्यक पहलु है। यदि नेतृत्वकर्ता विनम्र हो उसके नेतृत्व को जनता स्वीकार करती है तो उससे अच्छा एवं समर्थ नायक राष्ट्र में नहीं पैदा हो सकता है। विनम्रशील व्यक्ति जनता के विचारों को आत्मसात कर अपने आप को परिपक्व बनाता है तथा अपने नेतृत्व को एक सही दिशा देने का कार्य करता है। विनम्रता का सबसे बड़ा उदाहरण महात्मा गांधी थे राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान सत्य और अहिंसा को अपना साधन घोषित करते हुए स्वतंत्रता रूपी एक लक्ष्य को प्राप्ति के लिए चुना था और अहिंसा महात्मा गांधी के दो आभूषण की तरह थे जो विनम्रता को और भी मजबूत करते थे।

संजीव ठाकुर

आपके पत्र

दीपावली के कारण चुनाव प्रचार में पार्टिया घर घर जाकर झोंक रही है पूरी ताकत

पुरानी कहावत के अनुसार चुनाव जीतने के बाद पांच साल बाद नेता उस मोहल्ले में फिर से आता था। जहां से वे उस क्षेत्र से उम्मीदवार बन चुनाव जीतकर गया है। लेकिन यह अभी ट्रेंड बदला है। विकास के लिए देश में युद्ध स्तर पर कार्य हो रहा है। राजस्थान में चुनाव को लेकर प्रत्याशी एवं मतदाता गंभीर है। कांग्रेस के पांच साल के शासन काल की परिणति रही है कि कांग्रेस ने साढ़े चार तक अशोक गहलोत और सचिन पायलट एक दूसरे की नजर चुरा रहे थे। कांग्रेस के मल्लिकार्जुन खरगे अध्यक्ष बनने के बाद सचिन को इशारों इशारों में समझाने के बाद सचिन ने हमेशा के लिए चुप्पी साध ली है। कांग्रेस के दिग्गज नेता सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को चुनाव में भुना रहे हैं। भाजपा के पास पेपरलीक और भ्रष्टाचार के मुद्दे हैं। दीपावली के पावन पर्व के कारण राजस्थान में घर घर जाकर प्रत्याशी प्रचार कर रहे हैं। कांग्रेस को उनकी योजनाओं पर एतबार है। मोदी ने कहा कि देश में गरीबी का कारण कांग्रेस जिम्मेदार है। भाजपा कांग्रेस को विफल बताते हुए कहा कि कांग्रेस तुष्टिकरण की नीति अपनाती है। राजस्थान में बिगड़ती कानून व्यवस्था को भाजपा चुनावी हथियार की तरह उपयोग करने जा रही है। इस नवम्बर में चुनाव होने जा रहे हैं। भाजपा के पास दूसरे टर्म की आशा है तो कांग्रेस को हर मोर्चे पर विफल बता रही है। बिगड़ती कानून व्यवस्था महिला अपराध सांप्रदायिक तनाव जैसे मुद्दे कांग्रेस के लिए भारी पड़ सकते हैं। कांग्रेस को कोई नहीं परास्त कर सकता है क्योंकि धरातल पर पटकने में कांग्रेस की नीतियां कारणभूत है और उनकी कार्यप्रणाली कांग्रेस की हार का कारण बनेगी। भाजपा और कांग्रेस पार्टी के दिग्गज नेताओं का चुनाव प्रचार के लिए आना-जाना लगा ही रहता है। लेकिन स्टार प्रचारकों के बाद ही राजस्थान की चुनावी फिजा बदलेगी। क्योंकि उनके स्टार जिस दल का प्रचार करेंगे उसी दल को मतदाता वोट करेंगे।आगामी दो दिनों में राजस्थान की गणित बदलती हुई दिखाई देगी। जयपुर, जोधपुर और उदयपुर संभाग में स्टार प्रचारकों के दौरे कराए जाएंगे। कांग्रेस चिरंजीवी योजना, पुरानी पेंशन और मुफ्त बिजली पर विशेष ध्यान दे रही है। ये चुनावी मुद्दे के तौर पर देखे जा सकते हैं। कांग्रेस ने जिन कल्याणकारी योजनाओं को चुनावी मुद्दे बनाकर लोगों को लुभा रही है उसका कार्यकाल तीन-चार महीने पूर्व का ही है। इसमें लोगों को कितना फायदा मिला होगा? वृद्धावस्था पेंशन पर कांग्रेस का फोकस है। दरअसल, पहली बार युवा वोट करने जा रहे हैं। उनके मन में भी अनेक प्रश्न है और उन प्रश्नों के आधार पर ही चुनावी दल को वोट करेंगे। जिन बच्चों के जेहन में उनके जीवन को लाभान्वित करने वाले मुद्दे किसी भी दल के पास होंगे उसी दल को वोट करेंगे।

कांतिलाल मांडोत, सूरत

देशबन्धु
संस्कारधानी
5 बिलासपुर

बुधवार 15 नवंबर 2023

उल्टा पुल्टा

घोंचू ने अपने दोस्त पोंचू से कहा- मैं अपनी बीवी की वजह से एक दिन नरक में जाऊंगा, हर दिन झूठ जो बोलना पड़ता है।

पोंचू ने हैरान होकर पूछा- ऐसा क्यों मेरे भाई?

घोंचू- रोज सुबह-शाम सजने-संवरने के बाद मेरी बीवी पूछती है कि मैं कैसी लग रही हूं।

बिलासपुर पुलिस व केंद्रीय बलों ने किया फ्लैग मार्च

आदर्श आचार संहिता का पालन सुनिश्चित करना, शांतिपूर्ण चुनाव सम्पन्न कराना है उद्देश्य

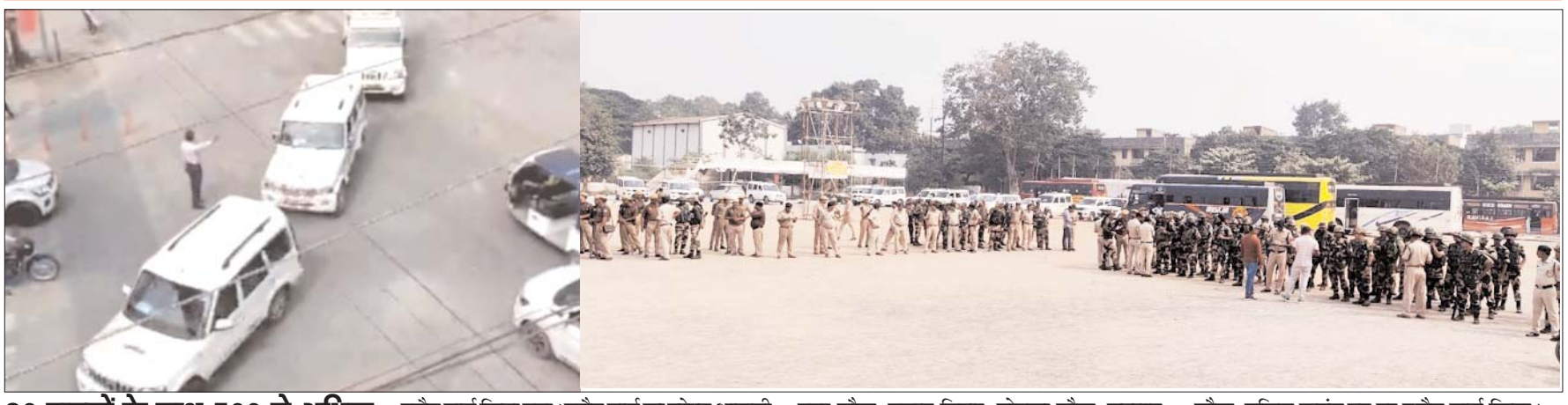

80 वाहनों के साथ 500 से अधिक जवानों द्वारा 2 भागों में बंटकर किया गया फ्लैग मार्च

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। आज पुलिस अधीक्षक संतोष सिंह के निर्देश पर जिला पुलिस बल के साथ केंद्रीय सुरक्षा बलों के अधिकारियों सहित बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों द्वारा पूरे शहर में फ्लैग मार्च किया गया। फ्लैग मार्च का उद्देश्य आगामी विधानसभा चुनाव को मद्देनजर रखते हुए शहर में शांति कायम रखना, असामाजिक तत्वों को कड़ा संदेश देना, किसी भी अप्रिय घटना को होने से पूर्व रोकना एवं आदर्श आचार संहिता का पालन सुनिश्चित करना है। फ्लैग मार्च पुलिस ग्राउंड से 2 भागों में प्रारंभ होकर वापस पुलिस ग्राउंड में समाप्त हुआ।

पहले दल ने पुलिस ग्राउंड,ईदगाह चौक, देवकीनंदन चौक, महामाया चौक, लोधीपारा, अशोक नगर चौक, वसन्त विहार, मोपका चौक, छठघाट, गुरुनानक चौक, गिरजा चौक, तारबाहर चौक, गांधी चौक, कोतवाली चौक, तेलीपारा रोड, पुराना बस स्टैंड, पुलिस ग्राउंड रूट पर फ्लैगमार्च किया।

वहीं दूसरे दल ने पुलिस ग्राउंड,सत्यम चौक, श्रीकांत वर्मा मार्ग, व्यापार विहार रोड, सिरगिट्टी बस्ती, बन्नाक चौक, हाईकोर्ट रोड, चकरभाठा बाजार, तिफरा बाजार, महाराणा प्रताप चौक, गौरव पथ, उसलापुर,सकरी,मंगला चौक, नेहरू चौक, अम्बेडकर चौक, पुलिस ग्राउंड रुट पर फ्लैग मार्च किया।

फ्लैग मार्च में नगर पुलिस अधीक्षक (सिविल लाइंस) संदीप पटेल, नगर पुलिस (सिटी कोतवाली) श्रीमती पूजा कुमार, प्रशिक्षु उप पुलिस अधीक्षक रोशन आहूजा, प्रशिक्षु उप पुलिस अधीक्षक गौरव सिंह ठाकुर, सभी शहरी थानों के थानाप्रभारी सहित विभिन्न केंद्रीय बलों के कम्पनी कमांडर सहित लगभग 500 से अधिक संख्या में पुलिसकर्मी मौजूद थे।

संपादकीय

वाहनों पर स्टंट की प्रवृत्ति खतरनाक

देश के ज्यादातर हिस्सों की तरह ही छत्तीसगढ़ के युवाओं में भी वाहनों, विशेषकर मोटर साइकलों पर स्टंट की प्रवृत्ति बढ़ रही है जो कि बहुत खतरनाक है। यह खुद चलाने वाले या उनकी चपेट में आने वाले किसी भी अन्य व्यक्तियों के लिये खतरे से खाली नहीं है। इनमें किसी की जान जा सकती है या फिर कोई गम्भीर रूप से घायल हो सकता है। आये दिन कोई न कोई ऐसे युवक शहर या उसके बाहर स्टंट करते हुए दिखलाई दे ही जाते हैं। इनमें से कुछ पकड़ में आते हैं तो कई के बारे में पता ही नहीं चल पाता। लोग उसकी फोटो खींच सकें या वाहन का नंबर जान सकें, ये स्टंटबाज गायब हो जाते हैं।

ऐसे ही पिछले हफ्ते जीई रोड पर नवा रायपुर के मोड़ पर एक युवक अपनी मोटर साइकल की टंकी पर एक युवती को बैठाकर फर्राटे भरता हुआ नज़र आया था। वह जिस तरह से वाहन चालन कर रहा था, उससे उन दोनों के साथ आने-जाने वालों के लिये खतरा बना हुआ था। कुछ लोगों ने उसका वीडियो बनाकर एवं तस्वीरें लेकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दी थीं। इसकी सूचना पुलिस कंट्रोल रोड तक जा पहुंची। पुलिस तत्काल हरकत में आई और उस मोटर साइकल वाले को ढूंढ निकाला गया। रायपुर पुलिस द्वारा उस पर आवश्यक जुर्माना किया गया तथा सख्त ताकीद देकर छोड़ा गया।

ऐसे स्टंट करना निहायत ही मूर्खता भरे कृत्य हैं क्योंकि व्यवस्थित प्रशिक्षण और आवश्यक सुरक्षा उपायों के बिना ऐसे कारनामे करना खुद को बहुत बड़े जोखिम में डालना होता है। आजकल की फरारिदार बाइकों के बल पर युवक अक्सर अपने मित्रों को रिझाने की कोशिशें करते हैं- फिर वे चाहे महिला मित्र हों या कोई और। इस तरह के खतरनाक कामों में जो रुचि रखते हैं उन्हें अगर अपने शौक को बढ़ाना ही है तो उसके लिये उन्हें व्यवस्थित मार्गदर्शन लेना चाहिये। खुली सड़कों पर ये कारनामे करना उचित नहीं है। बाइक तो क्या, किसी भी तरह के स्टंट करने इतने आसान भी नहीं होते। इसके लिये वर्षों प्रशिक्षण लेना होता है। उसके लिये आदर्श मोटर साइकल कौन सी हो सकती हैं, पहले यह जान लेना चाहिये। साथ ही, इसके लिए मुनासिब ट्रैक्स होते हैं जिन पर ये कारनामे किये जाते हैं। कोई भी बाइक लेकर कहीं भी स्टंट करना मुमकिन नहीं है और न ही समझदारी।

अभी ठीक एक माह पहले रायपुर में आश्रम से आमापारा के बीच एक मोटर साइकल पर सात नाबालिग बैठकर स्टंट करते हुए पकड़ाए थे। पुलिस द्वारा मोटर साइकल के मालिक को बुलवाकर उससे 25 हजार रुपये का जुर्माना भरवाया गया था। साथ ही लिखवाकर लिया गया कि वे आईंदा अपने नाबालिग बेटे के वाहन चलाने के लिये नहीं देंगे।

सार-संक्षेप

नर्सिंग सेवा के साथ आजीविका का भी साधन-मनीषा सैमुएल

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। महारानी लक्ष्मीबाई आत्मानंद विद्यालय दयालबंद में नर्सिंग प्रशिक्षण संबंधी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वास सोशल वेलफेयर सोसायटी (उपासना एजुकेशन ट्रस्ट) की नर्सिंग टीचर एवं विद्यार्थियों द्वारा नर्सिंग की भूमिका और स्वास्थ्य संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। इस अवसर पर विश्वास सोशल वेलफेयर सोसायटी की नर्सिंग प्रशिक्षिका मनीषा सैमुएल ने कहा कि नर्सिंग सेवा का काम है जिसे वाइट कॉलर जॉब में रखा गया है। उन्होंने बताया कि किस तरह हम इस क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं । नर्सिंग के क्या लाभ है । अस्पतालों में नर्स की क्या भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि नर्सिंग में बहुत अवसर हैं और इस क्षेत्र में सेवा कर हम अपने और परिवार की आजीविका चला सकते हैं। इस अवसर पर महारानी लक्ष्मीबाई आत्मानंद विद्यालय की प्राचार्य डॉक्टर केरोलिन सतुर ने भी बच्चों को नर्सिंग के क्षेत्र में आगे आने का आव्हान किया। विश्वास सोशल वेलफेयर सोसायटी के विद्यार्थियों ने इस मौके पर अपने अनुभव साझा किये। इस कार्यक्रम में डॉक्टर केरोलिन सतुर, मनीषा सैमुएल के साथ संस्था के बच्चे तनुजा, चांदनी, अंकुश व स्नेहा भी उपस्थित थे। बता दें कि विश्वास सोशल वेलफेयर सोसायटी विगत 9 वर्षों से नर्सिंग के क्षेत्र में सक्रिय संस्था है जो 5 वर्षों से नर्सिंग असिस्टेंट एवं इमरजेंसी मेडिकल टेक्नीशियन का कोर्स करा रही है और डायरेक्टर संध्या चंद्रसेन के मार्गदर्शन में आठ सौ से ज्यादा गरीब बच्चों को प्रशिक्षित कर रोजगार उपलब्ध करा चुकी है।

17 नवम्बर को दूसरे चरण की वोटिंग

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ में विधानसभा आम निर्वाचन के लिए दूसरे चरण में 17 नवम्बर को 70 विधानसभा क्षेत्रों में वोट डाले जाएंगे। इसके लिए सवेरे आठ बजे से शाम पांच बजे तक का समय निर्धारित किया गया है। केवल बिन्द्रानवागढ़ विधानसभा क्षेत्र के नौ मतदान केंद्रों कामरभौदी, आमामोरा, ओढ, बड़े गोबरा, गंवरगांव, गरीबा, नागेश, सहबीनकछार और कोदोमाली में सवेरे सात बजे से दोपहर तीन बजे तक मतदान होगा। इनके अलावा बिन्द्रानवागढ़ के शेष मतदान केंद्रों में अन्य 69 विधानसभा क्षेत्रों की तरह सवेरे आठ बजे से शाम पांच बजे तक वोट डाले जाएंगे।

राज्य में विधानसभा आम निर्वाचन के लिए दूसरे चरण में मतदान वाले 70 विधानसभा क्षेत्रों में कुल 958 उम्मीदवार मैदान में हैं। दूसरे चरण में राज्य के कुल एक करोड़ 63 लाख 14 हजार 479 मतदाता अपने मताधिकार का इस्तेमाल करेंगे। इनमें 81 लाख 41 हजार 624 पुरुष मतदाता, 81 लाख 72 हजार 171 महिला मतदाता तथा 684 तृतीय लिंग मतदाता शामिल हैं।

विधानसभा आम निर्वाचन के लिए दूसरे चरण में भरतपुर-सोनहट, मनेन्द्रगढ़, बैकुंठपुर, प्रेमनगर, भटगांव, प्रतापपुर, रामानुजगंज, सामरी, लुण्ड्रा, अम्बिकापुर, सीतापुर, जशपुर, कुनकुरी, पत्थलगांव, लैलूंगा, रायगढ़, सारंगढ़, खरसिया, धर्मजयगढ़, रामपुर, कोरबा, कटघोरा, पाली-तानाखार, मरवाही, कोटा, लोरमी, मुंगेली, तखतपुर, बिल्हा, बिलासपुर, बेलतरा, मस्तूरी, अकलतरा, जांजगीर-चांपा, सक्ती, चंद्रपुर, जैजैपुर, पामगढ़, सराईपाली, बसना, खल्लारी, महासमुंद, बिलाईगढ़, कसडोल, बलौदाबाजार, भाटापारा, धरसींवा, रायपुर ग्रामीण, रायपुर नगर पश्चिम, रायपुर नगर उत्तर, रायपुर नगर दक्षिण, आरंग, अभनपुर, राजिम, बिन्द्रानवागढ़, सिहावा, कुरूद, धमतरी, संजारी-बालोद, डौंडीलोहारा, गुण्डरदेही, पाटन, दुर्ग ग्रामीण, दुर्ग शहर, भिलाई नगर, वैशाली नगर, अहिवारा, साजा, बेमेतरा और नवागढ़ विधानसभा क्षेत्रों में वोट डाले जाएंगे।

कामरेड बासुदेव आचार्य की श्रद्धांजलि सभा 16 को

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। माकपा के वरिष्ठ नेता एवं बांकुडा लोकसभा से नौ बार (1980 से 2014 तक लगभग 34 वर्ष) सांसद रहे कामरेड बासुदेव आचार्य का आज 81 वर्ष की आयु में हैदराबाद में निधन हो गया। उनका आम मेहनतकशों के अलावा बीमा एवं रेलकर्मियों के आंदोलनों से अभिन्न लगाव था।

वह लम्बे समय तक माकपा की केन्द्रीय समिति के सदस्य रहे। वह लम्बे समय तक रेलवे स्टेंडिंग कमेटी के चेयरमैन एवं अन्य अनेक संसदीय समितियों के सदस्य रहे।

वह एक असाधारण ट्रेड यूनियन नेता विशेष रूप से रेलकर्मियों के संदर्भ में थे। बिलासपुर को रेलवे भर्ती बोर्ड की सौगात उनकी देन थी।

सादा जीवनशैली जीने वाले कामरेड बासुदेव आचार्य अत्यंत जनप्रिय थे। उनके निधन से मेहनकशों ने महान नेता खो दिया है,इससे ट्रेड यूनियन आंदोलन की अपूरणीय नुकसान हुआ है।

उनकी अंत्यक्रिया 15 नवंबर 2023 बुधवार को आद्रा (पश्चिम बंगाल) में होगी। ट्रेड यूनियन कौंसिल,बिलासपुर द्वारा 16 नवंबर गुरूवार को शाम 6 बजे श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर्मचारी भवन,डबरीपारा में किया जा रहा है,सभी साथी अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं।

कांग्रेसियों ने नेहरू की जयंती मनाई

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। शहर ज़िला कांग्रेस कमेटी द्वारा 14 नवम्बर को नेहरू चौक में प्रथम प्रधान मंत्री स्व जवाहर लाल नेहरू की जयंती मनाई गई । और उनके आदमकद में प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया।

शहर अध्यक्ष विजय पांडेय ने कहा पण्डित नेहरू ने अपना जीवन देश को समर्पित कर दिए ,लगभग 10 वर्षो तक जेल में रहे,प्रधानमंत्री के रूप नेहरू का योगदान अद्वितीय रहा है, आजाद हुआ तब देश आर्थिक, विषमता, साम्प्रदायिक दंगे,उद्योग धंधे , शिक्षा ,कृषि के क्षेत्रों में शून्यता थी , पण्डित जी योजनाबद्ध कार्यक्रम बनाकर देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाया, आई आई टी ,आईआईएम , बड़े बड़े बांध, उद्योग ,कारखाने ,का निर्माण कराया , विदेश नीति को मजबूती प्रदान करते हुए गुट निरपेक्ष और पंचशील सिद्धांत से विश्व पटल पर अपनी भूमिका तय की, पण्डित नेहरू उच्च शिक्षित , साहित्यिक रुचि वाले नेता थे ,बच्चों के लिए चाचा थे इसीकारण उनकी जयंती को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

ज़फ़र अली,हरीश तिवारी,एसएल रात्रे ने कहा कि नेहरू परिवार ने देश की आज़ादी में बड़ी भूमिका अदा की ,मोती लाल नेहरू, कमला नेहरू, पण्डित विजय लक्ष्मी,इंदिरा गांधी, ने आज़ादी के सेनानी थे ,जो लोग अंग्रेजो के साथ खड़े थे ,मौत के डर से अंग्रेजो से माफी मांगे और 60 रुपये प्रति माह पेंशन लिए उनके पूर्वज आज अपने आपको राष्ट्रवादी का होने का प्रमाण पत्र बांट रहे है ,आज देश को अंग्रेजो की फुट डालो और राज करो नीति पर चलकर आपसी भाईचारा को खत्म कर रहे है ,देश कर्ज़ में डूब रहा है ,उद्योगपति कर्ज़ लेकर भगोड़े बन रहे है ,देश की सम्पत्ति बेचकर देश चलाया जा रहा है ,चीन भारत भूभाग में कब्जा कर रहा है , मणिपुर जल रहा है फिर भी देश सुरक्षित हाथो में है कहा जा रहा है ,ये छद्म बातें करना आज़ादी के रणबांकुरों की तपस्या का अपमान है। कार्यक्रम में शहर अध्यक्ष विजय पांडेय,ज़फ़र अली, हरीश तिवारी, एसएल रात्रे, विनोद शर्मा, प्रिया शर्मा,दुर्देशी धनगर,मनोज शर्मा,गणेश रजक,जिग्नेश जैन,गौरव एरी,हेमन्त दृघस्कर,वीरेंद्र सारथी,विजय दुबे,राजेश शर्मा,सावित्री सोनी,शिव कुमार,उज्जैन जैन आदि उपस्थित थे

शराब के लिए पैसा नहीं देन पर होटल कर्मी व उसके बेटों की कर दी पिटाइ

पुलिस ने जुर्म दर्ज कर मामले को जांच में लिया

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। सकरी के अटल आवास में बदमाशों से होटल कर्मचारी से शराब पीने के लिए रुपये मांगे। मना करने पर उन्होंने होटल कर्मचारी के उपर पटाखे जलाकर फेकने लगे। इसका विरोध करने पर बदमाशों ने होटल कर्मी और उसके बेटों की पिटाई की। साथ ही धारदार हथियार से हमला किया। हमले में घायल को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शिकायत पर पुलिस ने जुर्म दर्ज कर मामले को जांच में लिया है।

सकरी के अटल आवास में रहने वाले टीकाराम सोनी होटल में काम करते हैं। सोमवार की रात आठ बजे वे अपने घर के सामने खड़े थे। इसी दौरान वहां पर मोहल्ले में रहने वाले दीपक, मानस और रतन नाम के युवक आए। उन्होंने टीकाराम से शराब पीने के लिए रुपये मांगे। मना करने पर उन्होंने पटाखे जलाकर टीकाराम के उपर फेकने लगे। इसका विरोध करने पर युवकों ने होटल कर्मी को जान से मारने की धमकी देकर मारपीट शुरू कर दी।

मारपीट के बीच टीकाराम के बेटे हर्ष और वंश बीच-बचाव करने आए। युवकों ने वंश पर धारदार हथियार से हमला किया। हमले में घायल टीकाराम और उसके बेटों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना की शिकायत पर पुलिस ने जुर्म दर्ज कर मामले को जांच में लिया है।।सकरी के अटल आवास में बदमाशों से होटल कर्मचारी से शराब पीने के लिए रुपये मांगे। मना करने पर उन्होंने होटल कर्मचारी के उपर पटाखे जलाकर फेकने लगे। इसका विरोध करने पर बदमाशों ने होटल कर्मी और उसके बेटों की पिटाई की। साथ ही धारदार हथियार से हमला किया। हमले में घायल को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शिकायत पर पुलिस ने जुर्म दर्ज कर मामले को जांच में लिया है।

सकरी के अटल आवास में रहने वाले टीकाराम सोनी होटल में काम करते हैं। सोमवार की रात आठ बजे वे अपने घर के सामने खड़े थे। इसी दौरान वहां पर मोहल्ले में रहने वाले दीपक, मानस और रतन नाम के युवक आए। उन्होंने टीकाराम से शराब पीने के लिए रुपये मांगे। मना करने पर उन्होंने पटाखे जलाकर टीकाराम के उपर फेकने लगे। इसका विरोध करने पर युवकों ने होटल कर्मी को जान से मारने की धमकी देकर मारपीट शुरू कर दी।

मारपीट के बीच टीकाराम के बेटे हर्ष और वंश बीच-बचाव करने आए। युवकों ने वंश पर धारदार हथियार से हमला किया। हमले में घायल टीकाराम और उसके बेटों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना की शिकायत पर पुलिस ने जुर्म दर्ज कर मामले को जांच में लिया है।

भाई दूज आज,बहनें करेंगी भाई को तिलक

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। भाई दूज का पर्व इस साल न्यायधानी में 15 नवंबर को मनाया जाएगा। ज्योतिषाचार्य पंडित देव कुमार पाठक के अनुसार 15 नवंबर को ज्येष्ठा नक्षत्र, चंद्रमा वृश्चिक राशि को पड़ने वाले भाई दूज के साथ ही पंच दीपोत्सव का समापन हो जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार यमराज को कई बार उनकी बहन यमुना ने मिलने के लिए बुलाया, लेकिन यमराज उन्हें मिलने नहीं जा सके। भाई दूज जिसे यम द्वितीया भी कहा जाता है। इस दिन बहनें भाई को तिलक लगाती हैं और उनके मंगल की कामना करती हैं। मान्यता है कि ऐसा करने से अकाल मृत्यु का खतरा टल जाता है।

भाई दूज का त्योहार हर साल कार्ति क शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाता है। इस दिन बहनें अपने भाई के माथे पर टीका लगाकर उनकी लंबी उम्र की कामना करते हैं, लेकिन अधिकांश लोग भाई दूज की तारीख नहीं जानते।

अगर आप भी इसी तरह की स्थिति में हैं, तो चिंता मत करो। इस वर्ष पंचांग के अनुसार भाई दूज 14 और 15 नवंबर को है। शुभ मुहूर्त तिथि में सिर्फ 2 घंटे 15 मिनट तक रहेगा। आइए जानें भाई दूज

किस दिन मनाई जाएगी। भाई दूज पर टीका लगाने का शुभ मुहूर्त भी जानिए।

पंचांग के अनुसार, साल का आखिरी कार्तिक माह शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि का आरंभ 14 नवंबर की दोपहर 2 बजकर 25 मिनट पर होगा. यह तिथि अगले दिन 15 नवंबर को रात 1 बजकर 47 मिनट पर समाप्त होगी. ऐसे में उदया तिथि होने की वजह से भाई दूज 15 नवंबर को मनाई जाएगी. इस दिन भाई दूज मनान शुभ होगा.

पंचांग के अनुसार, कार्तिक माह में शुक्ल पक्ष की शुभ मुहूर्त मंगलवार 14 नवंबर की दोपहर 1 बजकर 47 से लेकर 3 बजकर 45 मिनट तक रहेगा. यह 2 घंटे 15 मिनट के शुभ मुहूर्त में भाई को तिलक कर सकते हैं. यह बहुत ही विशेष मुहूर्त है. जिसमें भगवान की कृपा से भाई बहनों का रिश्ता मजबूत होगा.

यह है अभिजीत मुहूर्त

अगर आप भाई दूज पर शुभ मुहूर्त में भाई को तिलक नहीं कर पाए हैं तो परेशान न हो. अभिजीत मुहूर्त पर भी भाई दूज का त्योहार मना सकते हैं. यह मुहूर्त 15 नवंबर को 12 बजे से 12 बजकर 45 मिनट तक रहेगा. वहीं पंचांग के अनुसार, भाई दूज पर दोपहर 3 बजकर 12 मिनट से 4 बजकर 36 मिनट तक राहुकाल रहेगा. राहुकाल के समय में भाई दूज करना अशुभ होता है. इसलिए राहुकाल में भूलकर भी भाई के माथे पर तिलक न लगाएं.

बहनों के लिए बाजार में सजा गिफ्ट

रक्षाबंधन पर्व की तरह भाई-बहन के लिए यह भी विशेष त्योहार होता है। भाई दूज पर बहनें भाइयों के माथे पर तिलक लगाती है और सुख-समृद्धि की मंगल कामना करती हैं। भाई अपनी बहनों को शानदार गिफ्ट देकर खुश करते हैं। बिलासपुर के बाजार में एक से बढ़कर एक गिफ्ट सज गए हैं। जो सभी को खूब आकर्षित कर रहे हैं। हालांकि इसमें सबसे ज्यादा बिक्री चाकलेट की हो रही है।

आज शाम से थम जाएगा चुनावी शोर, डोर-टू-डोर चलेगा प्रचार

कोरबा, 14 नवंबर (देशबन्धु)। विधानसभा निर्वाचन-2023 के तहत कोरबा जिले की चारों विधानसभा क्षेत्र के लिए भी 17 नवंबर को मतदान कराया जाएगा। जिला और पुलिस प्रशासन के द्वारा निर्वाचन आयोग के निर्देश और मार्गदर्शन अनुसार मतदान केन्द्रों में मतदान तैयारियों से लेकर सुरक्षा व्यवस्था की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। चुनावी सरगर्मी पूरे ऊफान पर है और प्रमुख दल कांग्रेस-भाजपा के साथ-साथ अन्य राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों के प्रत्याशियों और उनके समर्थकों के द्वारा प्रचार-प्रसार तेज कर दिया गया है। प्रत्याशी भी सडक़ों पर उतरकर कार्यकर्ताओं और समर्थकों के साथ घर-घर, दुकान-दुकान जाकर अपने पक्ष में मतदान की अपील कर रहे हैं। कई क्षेत्रों में तो एक ही समय पर कांग्रेस और भाजपा के समर्थक एक ही सडक़ पर टकरा रहे हैं। यह गनीमत है कि इनके बीच चुनावी दौर में कोई घटना अति उत्साह में घटित नहीं की जा रही जिससे 1-2 मामलों को छोडक़र पूरे जिले में शांति कायम है।

चुनाव प्रचार का शोर मतदान तिथि 17 नवंबर को 48 घंटे से पहले थम जाएगा। इस लिहाज से 15 नवंबर को शाम 5 बजे के बाद प्रचार का शोर सडक़ों पर सुनाई नहीं पड़ेगा और न ही आम सभाएं होंगी। 5 बजे से पहले जो भी शोर-शराबा प्रत्याशियों के पक्ष में हो सके, वह अलग है। शाम 5 बजे के बाद प्रत्याशियों और उनके समर्थकों के द्वारा घर-घर जाकर बिना किसी शोरगुल के मतदान की अपील की जा सकेगी। इस संबंध में समस्त प्रत्याशियों को निर्देश भी जारी किए गए हैं।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सौरभ कुमार ने बताया कि जिले में मतदान से 48 घंटे पहले बुधवार 15 नवंबर की शाम पांच बजे से राजनैतिक प्रचार थम जायेगा। इसके बाद रैलियां, जुलूस या सभाएं जैसे किसी भी प्रकार का सार्वजनिक प्रचार नहीं होगा, लेकिन प्रत्याशी घर-घर संपर्क कर सकेंगे।

17 नवंबर को जिले के 1080 मतदान केन्द्रों में डाले जाएंगे वोट

वोटर टर्न आउट ऐप से जान सकेंगे मतदान की स्थिति

विधानसभा निर्वाचन 223 के द्वितीय चरण में आम नागरिक मतदान की विधानसभावार जानकारी वोटर टर्न आउट मोबाइल ऐप का उपयोग कर 17 नवंबर को मतदान के दिन मतदान की स्थिति को देख सकते हैं। वोटर टर्नआउट ऐप के माध्यम से छत्तीसगढ़ विधानसभा निर्वाचन 223 के द्वितीय चरण में विधानसभावार वोटर टर्न ऑउट की अद्यतन स्थिति जान सकते हैं।

जिले में सार्वजनिक अवकाश घोषित

कलेक्टर ने बताया कि मतदान के दिन 17 नवंबर को जिले में सार्वजनिक अवकाश घोषित किया गया है। इस दिन सभी शासकीय कार्यालय बंद रहेंगे। इसलिए शासकीय काम से भी आने वाले बाहरी लोग मतदान दिन के बाद ही कोरबा में आयें। मतदान से 48 घंटे पूर्व प्रचार समाप्त होने के बाद पुलिस बल द्वारा जिले के सभी लॉज और होटलों की सघन जांच की जायेगी और राजनैतिक प्रचार के लिए बाहर से आये हुए लोगों या पार्टी कार्यकर्ताओं के पाये जाने पर कड़ी कार्यवाही की जायेगी।

मोतीसागर पारा में चली तलवार, 2 लोग जख्मी

कोरबा, 14 नवंबर (देशबन्धु)। कोतवाली थाना क्षेत्र अंतर्गत मोतीसागर पारा में आपराधिक प्रवृत्ति के एक व्यक्ति ने तलवार मारकर दो लोगों को जख्मी कर दिया है। बताया गया कि मोतीसागर पारा निवासी संजू सारथी और विजय पर तलवार से हमला किया गया जिसमें सिर और पीठ में जख्म आये हैं। शाम करीब 5 बजे हुए इस घटनाक्रम से अफरा तफरी मच गई। सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पहुंची लेकिन तब तक हमलावर भाग चुका था। पुलिस को बताया गया कि हमलावर आदतन बदमाश है और उसके संबंध में शिकायत व सूचना कई बार कोतवाली में दी जा चुकी है लेकिन उसके हौसले बुलंद है। मोहल्ले में आदतन बदमाश चिन्टू, संदीप, नानू, करण, आर्यन अक्सर नशे की हालत में घूमते रहते हैं और मामूली सी बातों पर हमला कर देते हैं। इन्हीं में शामिल आरोपी लोगों को डराता-धमकाता रहता है और पुलिस की मुखबिरी करने का भी आरोप लगाकर मारपीट करते रहता है। बहरहाल पीड़ित का उपचार अस्पताल में कराया जा रहा है वहीं हमलावर को पकडऩे का प्रयास समाचार लिखे जाने तक जारी था।

जो जिले के मतदाता नहीं, उन्हें छोडऩा होगा जिला

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा इस संबंध में जारी निर्देशों के अनुसार विधानसभा क्षेत्र की सीमा के बाहर से राजनैतिक प्रचार-प्रसार के लिए आये लोगों और पार्टी कार्यकर्ताओं को मतदान के 48 घंटे पहले विधानसभा सीमा क्षेत्र से बाहर जाना होगा। ऐसे व्यक्ति जो कोरबा जिले की चारों विधानसभाओं में से किसी भी विधानसभा के मतदाता नहीं हैं उन्हें भी मतदान के 48 घंटे पहले जिले की सीमा से बाहर जाना होगा। कलेक्टर ने बताया कि होटलों और लाजों में बाहर से आकर रुकने वाले लोगों को आज से ही मतदान के 48 घंटे पहले जिला छोडऩे के लिए सूचित कर दिया जाये। उन्होंने इसके लिए होटलों और लाजों के संचालकों को प्रशासन का सहयोग करने की अपील की।

सार-संक्षेप

आज घंटाघर में अमित शाह की चुनावी सभा

कोरबा, 14 नवंबर (देशबन्धु)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह बुधवार को कोरबा प्रवास पर आ रहे हैं। वे डॉ. भीमराव अंबेडकर ओपन एयर ऑडिटोरियम घंटाघर मैदान में कोरबा प्रत्याशी लखनलाल देवांगन के लिए चुनावी आम सभा को संबोधित करेंगे। उनके आगमन को लेकर भाजपाई उत्साहित हैं। पदाधिकारी व कार्यकर्ता सभा को सफल बनाने जुटे हैं।

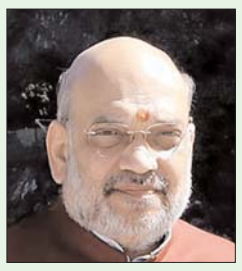

भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य एवं आम सभा के कार्यक्रम प्रभारी विकास महतो ने बताया कि अमित शाह बुधवार की दोपहर करीब 12:30 बजे हेलीपैड पहुंचेंगे। जहां से वे सीधे ओपन थिएटर घंटाघर प्रस्थान करेंगे। यहां कोरबा के भाजपा प्रत्याशी लखन लाल देवांगन के पक्ष में आयोजित आमसभा में शिरकत करेंगे। उन्होंने जम्मू कश्मीर से धारा 370 को हटाया, ट्रिपल तलाक जैसे अत्याचार से मुस्लिम महिलाओं को मुक्ति दिलाई और ऐसे अनगिनत कार्य किये हैं। भाजपा जिला अध्यक्ष डॉ. राजीव सिंह ने बताया कि गृह मंत्री की सभा को सफल बनाने के लिए पार्टी के पदाधिकारी व तमाम कार्यकर्ता जुटे हुए हैं। इस सभा में 15000 से अधिक नागरिकों के शामिल होने की उम्मीद है। आमसभा के पश्चात गृहमंत्री दोपहर 2:40 बजे कोरबा से प्रस्थान करेंगे।

इन मार्गों पर आवागमन प्रतिबंधित: केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के प्रवास को दृष्टिगत रखते हुए सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था के मद्देनजर यातायात पुलिस ने डायवर्टेड पॉइंट निर्धारित किये हैं। घंटाघर ओपन थिएटर में आम सभा कार्यक्रम होने से सुभाष चौक से घण्टाघर चौक, मुड़ापार हेलीपैड एवं महाराणा प्रताप चौक मार्ग पर आवागमन प्रतिबंधित रहेगा। नगरजनों से अपील की गई है कि वे उक्त मार्ग से अलग अन्य मार्ग का उपयोग करें।

पेड न्यूज: संबंधित के विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही के लिए प्रकरण प्रेषित

कोरबा, 14 नवंबर (देशबन्धु)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा पेड न्यूज को लेकर दिए गए आवश्यक दिशा निर्देश के तहत विधानसभा निर्वाचन 2023 अंतर्गत कोरबा जिले में मीडिया अनुप्रमाणन और मीडिया अनुवीक्षण समिति का गठन किया गया है। इसी के साथ ही आचार सहिंता लागू होने के साथ ही जिले में सभी समाचार पत्रों, वेब पोर्टल न्यूज़, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया न्यूज़ चैनल, फेसबुक, एक्स (ट्विटर), इंस्टाग्राम आदि पर हर पल नजर रखने और रिपोर्ट तैयार करने टीम तैनात की गई है।

टीम द्वारा किसी विशेष प्रत्याशियों के पक्ष में माहौल तैयार कर उसे आम जनमानस में मीडिया के माध्यम से प्रस्तुत करने और निर्वाचन को प्रभावित करने के मामलों पर संज्ञान लिया जा रहा है। ऐसे प्रकरण जिला स्तरीय समिति को प्रेषित किए जा रहे हैं। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सौरभ कुमार की अध्यक्षता में गठित समिति की बैठक आज आयोजित की गई। बैठक में वेबपोर्टल न्यूज, समाचार पत्रों में प्रकाशित पैडन्यूज़ पर आवश्यक कार्यवाही करने नोडल अधिकारी द्वारा प्रकरण आगे प्रेषित किए गए। इस मामले में सम्बंधित को नोटिस जारी करने के साथ ही आगे की कार्यवाही की जाएगी। बैठक में विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा विज्ञापन प्रमाणन हेतु प्रस्तुत आवेदन पर निर्णय लिया गया। समिति की बैठक में अपर कलेक्टर दिनेश कुमार नाग, नोडल अधिकारी सेवाराम दीवान-संयुक्त कलेक्टर सहित सदस्यगण उपस्थित थे।

30 नवम्बर तक एक्जिट पोल के आयोजन और प्रसारण पर रहेगा प्रतिबंध

कोरबा, 14 नवंबर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ विधानसभा आम निर्वाचन के मद्देनजर भारत निर्वाचन आयोग ने 30 नवम्बर तक किसी भी तरह के एक्जिट पोल के आयोजन तथा प्रसारण को प्रतिबंधित किया है। आयोग द्वारा आज इस संबंध में अधिसूचना जारी की गई है। लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के प्रावधानों के तहत आयोग द्वारा इस अवधि के दौरान एक्जिट पोल के आयोजन तथा प्रसारण पर रोक लगाई गई है।

भारत निर्वाचन आयोग ने पांच राज्यों में विधानसभा आम निर्वाचन के दृष्टिगत 7 नवम्बर को सवेरे 7 बजे से 30 नवम्बर की शाम साढ़े छह बजे तक की अवधि को एक्जिट पोल के आयोजन और प्रसारण पर प्रतिबंधित अवधि के रूप में अधिसूचित किया है। इस अवधि में विधानसभा आम निर्वाचन के संदर्भ में किसी भी तरह के एक्जिट पोल का आयोजन करने तथा प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा इसके परिणाम के प्रकाशन या प्रचार या किसी भी अन्य तरीके से प्रचार-प्रसार पर रोक रहेगी। आयोग ने अधिसूचना में यह भी स्पष्ट किया है कि लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 126 (1) (ख) के अधीन साधारण निर्वाचन एवं उप निर्वाचन में संबंधित मतदान क्षेत्रों में मतदान की समाप्ति के लिए नियत समय पर समाप्त होने वाले 48 घंटों के दौरान किसी भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में किसी भी ओपिनियन पोल या किसी अन्य मतदान सर्वेक्षण के परिणामों सहित किसी भी प्रकार के निर्वाचन संबंधी मामले के प्रदर्शन पर प्रतिबंध रहेगा।

शहीद आदित्य की स्मृति में क्रिकेट स्पर्धा, दबंग पोड़ी विजेता

कोरबा-पाली 14 नवंबर (देशबन्धु)। पाली विकासखण्ड के ग्राम चनवारी पारा के शहीद आदित्य शरण प्रताप सिंह की स्मृति में आयोजित हो रहे क्रिकेट प्रतियोगिता का फाइनल मैच खेला गया। प्रतियोगिता में 16 टीमों ने हिस्सा लिया और फाइनल में दबंग पोड़ी और नवापारा की टीम पहुंची। दोनों टीमों के बीच फाइनल मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए दबंग पोड़ी की टीम ने निर्धारित 10 ओवरों में 71 रन बनाए और नवापारा को 72 रन का लक्ष्य दिया। जवाब में नवापारा की टीम 66 रन ही बना सकी और इस तरह दबंग पोड़ी ने यह रोमांचक मैच 5 रन से जीत लिया। काफी रोमांचक मुकाबले में दोनों टीमों की गेंदबाजी और बल्लेबाजी को दर्शकों ने काफी सराहा और स्पर्धा जीतने के लिए खिलाड़ी मैदान में डटे रहे। बता दें कि दबंग पोंडी की टीम का इस साल का पहला फाइनल मैच था जिसे उन्होंने जीता है। सभी खिलाडियों ने शानदार प्रदर्शन किया। टीम के कप्तान धनी कैवर्त, राजेंद्र, राजा, धीरज, परम, वीरू, दरोगा, दीपक, तारा, मोनू, माही, अजय, राजेश, माथुर, सुखसागर, अनिल, रविन्द्र, और गांव के गणमान्य नागरिक तथा बड़ी संख्या में क्रिकेट प्रेमी उपस्थित रहे।

मतदान से एक दिन पहले और मतदान दिवस के विज्ञापन का प्रमाणन जरूरी

कोरबा, 14 नवंबर (देशबन्धु)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सौरभ कुमार ने विधानसभा आम निर्वाचन 2023 के संबंध में चुनाव आयोग द्वारा जारी निर्देशों के तहत मतदान दिवस एवं मतदान से एक दिन पूर्व मीडिया में प्रकाशित होने वाले राजनीतिक दलों व प्रत्याशियों के विज्ञापनों का प्रमाणन मीडिया प्रमाणन एवं मीडिया निगरानी (एमसीएमसी) से अनिवार्य रूप से कराने के निर्देश दिये है।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि मीडिया प्रमाणन का मूल आधार आदर्श आचार संहिता के पालन से जुड़ा है। ऐसा कोई विज्ञापन नहीं दिया जाएगा जो सामाजिक समरसता को बिगाडऩे अथवा तनाव को बढ़ाने, शांति भंग करने, संविधान और कानून के विपरीत, नैतिकता, सदाचार के विपरीत हो और किसी की धार्मिक आस्था को ठेस पहुंचाने वाला नहीं हो। कलेक्टर ने बताया कि मीडिया प्रमाणन राजनैतिक विज्ञापन के लिए आवश्यक है, इनमें टीवी चैनल, केबल टीवी चैनल, रेडियो (निजी एफएम सहित), सिनेमा घर, ई-समाचार पत्र, बल्क एवं वाईस एसएमएस एवं सार्वजनिक स्थलों पर दृश्य-श्रव्य माध्यम शामिल है। जिले में 17 नवंबर को वोट डाले जाएंगे, इसे देखते हुए 16 व 17 नवंबर को प्रिंट मीडिया में प्रकाशित किए जाने वाले ऐसे तमाम राजनीतिक विज्ञापनों को जिला व राज्य स्तर पर गठित प्रमाणन व मीडिया निगरानी समिति (एमसीएमसी) से पूर्व-प्रमाणीकरण कराना अनिवार्य है, निर्वाचन आयोग द्वारा इस संबंध में दिशा-निर्देश जारी किए गए है, राजनीतिक लाभ लेने व मतयाचना के लिए राजनीतिक दलों व प्रत्याशियों द्वारा समाचार-पत्रों में विज्ञापन किया जाता है।

निष्पक्ष और पारदर्शी मतदान कराने प्रशासन-पुलिस को सतर्क रहने के निर्देश

विशेष प्रेक्षकों ने की समीक्षा

कोरबा, 14 नवंबर (देशबन्धु)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा छत्तीसगढ़ विधानसभा आम निर्वाचन 2023 के लिए नियुक्त विशेष सामान्य प्रेक्षक धर्मेन्द्र एस. गंगवार, विशेष पुलिस प्रेक्षक अनिल शर्मा, विशेष व्यय प्रेक्षक राजेश टुटेजा व मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी छत्तीसगढ़ श्रीमती रीना बाबा साहेब कंगाले ने आज जिला पंचायत सभा कक्ष में बैठक लेकर कोरबा जिले में विधानसभा निर्वाचन 2023 अंतर्गत तैयारियों की समीक्षा की।

विशेष प्रेक्षकों ने कोरबा जिले के लिए नियुक्त प्रेक्षक प्रियतु मण्डल, सी. के. जमातिया, सी. वेंकटा सुब्बा रेड्डी और व्यय प्रेक्षक ओ. एन. हरिप्रसाद राव की उपस्थिति में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सौरभ कुमार, पुलिस अधीक्षक जितेन्द्र शुक्ला, स्वीप नोडल अधिकारी सीईओ जिला पंचायत विश्वदीप और निगम आयुक्त सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई, उप जिला निर्वाचन अधिकारी सुश्री सीमा पात्रे से जिले में निर्वाचन संबंधी तैयारियों की समीक्षा की। विशेष प्रेक्षकों ने मतदान केंद्रों में सभी निश्चित सुविधाएं उपलब्ध कराने, एक से अधिक मतदान केंद्रों में विशेष ध्यान देने, निर्वाचन के दौरान प्रशासन एवं पुलिस को सतर्क रहने, ऐसे मतदान केंद्र जहां पूर्व में कम मतदान हुए हैं वहां स्वीप की गतिविधियों को बढ़ाते हुए मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक करने और मतदान का प्रतिशत बढ़ाने के निर्देश दिए। बैठक में भारत निर्वाचन आयोग के विशेष प्रेक्षकों ने पुलिस और आबकारी विभाग के साथ फ्लाइंग स्क्वॉड, स्थैतिक निगरानी दल के माध्यम से जांच अभियान तेज करते हुए अवैध रूप से सामग्री परिवहन, शराब परिवहन आदि पर जब्ती की कार्यवाही के निर्देश दिए। उन्होंने जिले में भारत निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशानुसार निष्पक्ष और पारदर्शी मतदान कराते हुए निर्वाचन के कार्यों को शांति पूर्ण तरीके से संपन्न कराने के निर्देश दिए। प्रेक्षकों ने निर्देशित किया कि मतदान के दौरान मतदाताओं को किसी प्रकार की असुविधाओं का सामना न करना पड़े।

आरामदायक जिंदगी मधुमेह रोग का सबसे बड़ा और मुख्य कारण - डॉ.शर्मा

कोरबा, 14 नवंबर (देशबन्धु)। विश्व मधुमेह दिवस पर स्वस्थ भारत समृद्ध भारत अभियान के अंतर्गत चलो आयुर्वेद की ओर मिशन के तहत लायंस क्लब कोरबा एवरेस्ट, विश्व हिंदू परिषद एवं आयुष मेडिकल एसोसिएशन के संयुक्त तत्वाधान में पतंजलि चिकित्सालय निहारिका में शिविर किया गया। निःशुल्क रक्त शर्करा जांच चिकित्सा परामर्श एवं उपचार शिविर में 36 मधुमेह रोगी लाभान्वित हुए। डॉ. नागेन्द्र नारायण शर्मा ने मधुमेह रोगियों के लिए उपयोगी योगाभ्यास मण्डूकासन, शशकासन, पादहस्तासन, वक्रासन, मर्कटासन तथा भस्त्रिका, कपालभाति एवं अनुलोम विलोम प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया।

लायंस क्लब ने मनाया दीपावली मिलन समारोह

कोरबा, 14 नवंबर (देशबन्धु)। लायंस क्लब कोरबा परिवार का दीपावली मिलन समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम में कोरबा शहर के सभी लायंस क्लब से सदस्य सम्मिलित हुए। उपस्थित अतिथि राजस्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल, श्रीमती गीता भूकल विधायक एवं पूर्व मंत्री हरियाणा विधानसभा, महापौर राजकिशोर प्रसाद, रेणु अग्रवाल पूर्व महापौर, एमजेएफ जयप्रकाश अग्रवाल पीएमसीसी, क्लब अध्यक्ष मीना सिंह, एमजेएफ राजेन्द्र तिवारी पीएमसीसी, एम.डी.माखीजा पूर्व प्रांतपाल, एमजेएफ बसंत मिश्रा पूर्व प्रांतपाल का फूल माला से सम्मान कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। अतिथियों ने उद्बोधन में सभी को दीपावली की शुभकामनाएँ दिए।

कार्यक्रम हर्षोल्लास व आतिशबाजी के साथ मनाया गया। मंच संचालन संतोष खरे व आभार प्रदर्शन जयप्रकाश अग्रवाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम में आशीष अग्रवाल, ला.राजकुमार अग्रवाल, श्रीकांत बुधिया, कामायनी दुबे, दीपक माखीजा, शहनाज शेख, सत्येन्द्र वासन, राजकुमार अग्रवाल (श्वेता), शिव कुमार अग्रवाल, एस.के. अग्रवाल, कैलाश मोदी, नन्दकिशोर अग्रवाल, राकेश अग्रवाल, पुरुषोत्तम अग्रवाल, रमेश शर्मा,रश्मि सिंह, डॉ. जयपाल सिंह, दीपक कुमार अग्रवाल, संतोष राठौर, रामगोपान डिक्सेना, अशोक मोदी, रविशंकर सिंह, रोहित राजवाड़े, आकाश अग्रवाल, दर्शन दुआ, राजेन्द्र डागा, मधु पाण्डेय, योगेश दुबे,कांता अग्रवाल, मीना अग्रवाल आदि सम्मिलित हुए।

राष्ट्रीय शतरंज में शिवांगी ने बढ़ाया मान, हुई पुरस्कृत

कोरबा, 14 नवंबर (देशबन्धु)। झारखंड राज्य के टाटा जमशेदपुर में ऑल इंडिया चेस एसोसिएशन एवं भारत सरकार खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शतरंज प्रतियोगिता में बालको निवासी शिवांगी सोनी ने मान बढ़ाया है। छत्तीसगढ़ को रिप्रेजेंट करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर 66 वां स्थान प्राप्त किया। उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट कर पुरस्कृत किया गया।

शिवांगी की इस उपलब्धि पर हर्ष व्याप्त है। 36वां नेशनल अण्डर गर्ल्स एण्ड ब्वायज चैंपियनशिप 2023 में तकरीबन 300 बालक व बालिकाओं ने हिस्सा लिया, जिसमें शिवांगी ने महज 9 वर्ष की आयु में यह उपलब्धि हासिल की है। शिवांगी ने उपलब्धि का श्रेय दादा-दादी, माता-पिता के साथ-साथ एल.एन. श्रीवास को भी दिया है जिनके मार्गदर्शन में तैयारी की। शिवांगी बालको नगर स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल में कक्षा चौथी की छात्रा है। शिवांगी के दादा एलपी सोनी बालको के सेवानिवृत्ति कर्मी हैं। शिवांगी के पिता राकेश सोनी वर्तमान में बालको संयंत्र कार्बन विभाग में सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

दिव्यांग मतदाताओं के लिए रैम्प सहित सुरक्षा व्यवस्था, वेब कास्टिंग की ली जानकारी

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कंगाले भी पहुंचीं कोरबा

कोरबा, 14 नवंबर (देशबन्धु)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा छत्तीसगढ़ विधानसभा आम निर्वाचन 2023 के लिए नियुक्त विशेष सामान्य प्रेक्षक धर्मेन्द्र एस. गंगवार, विशेष पुलिस प्रेक्षक अनिल शर्मा, विशेष व्यय प्रेक्षक राजेश टुटेजा व मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी छत्तीसगढ़ श्रीमती रीना बाबा साहब कंगाले आज कोरबा दौरे पर पहुंचीं। मुड़ापार हैलीपेड पर कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सौरभ कुमार ने उनका स्वागत किया। विशेष प्रेक्षकों द्वारा जिले के मतदान केंद्रों का निरीक्षण कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। विशेष प्रेक्षकों व मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी छत्तीसगढ़ द्वारा शासकीय मिनीमाता कॉलेज के मतदान केंद्र में मतदान की तैयारियों का अवलोकन किया। उन्होंने पोलिंग बूथ पर मतदाताओं के लिए उपलब्ध व्यवस्थाओं और सुविधाओं की जानकारी अधिकारियों से ली। उन्होंने दिव्यांग मतदाताओं के लिए रैम्प की व्यवस्था, वोटिंग दिवस पर मतदाताओं के पोलिंग बूथ पर प्रवेश के साथ ही बाहर निकलने की व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था, वेब कास्टिंग, पेयजल व्यवस्था सहित निर्वाचन संबंधी अन्य गतिविधियों की जानकारी ली।

गुरुकुल में मतदाता जागरूकता, ली गई शपथ

कोरबा, 14 नवंबर (देशबन्धु)। एके गुरुकुल महाविद्यालय, ढेलवाडीह के बच्चों ने मतदाता जागरूकता को लेकर शपथ लिया व पूर्ण रूप से निष्पक्ष एवं निस्वार्थ रूप से, बिना किसी प्रलोभन, निडर होकर इस निर्वाचन में भागीदारी बनने एवं अपने मतदान का उपयोग करने आसपास के लोगों को पूर्ण रूप से जागरूक करेंगे। कई ग्रामों में जाकर लोगों को जागरूक भी किया गया। महाविद्यालय के शिक्षक,-शिक्षिकाएं और विद्यार्थियों ने सहभागिता निभाई। महाविद्यालय के संचालक अक्षय कुमार दुबे ने बताया कि विद्यार्थियों ने गांव जा जाकर लोगों को जागरुक किया कि उन्हें अपने मत का सही उपयोग करना है। वाईस प्रिंसिपल एस के जात्रा ने बताया कि युवा स्वयं प्रथम मतदाता हैं और वह अभी से यदि शपथ लेकर और सही रूप से मतदान करेंगे तो वह निश्चित ही आने वाले समय में एक सशक्त एवं स्वतंत्र एवं बिना प्रलोभन के मतदाता बनेंगे।

भक्तिमय माहौल में धूमधाम से की गई माँ काली की पूजा अर्चना

महाआरती, भगवती जागरण व विशाल भंडारे का आयोजन

सूरजपुर 14 नवंबर (देशबन्धु)। परंपरा के अनुसार प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सार्वजनिक श्री श्री माँ काली पूजा समिति के द्वारा भक्तिमय वातावरण में धूम धाम से कालरात्रि माँ काली की विधिविधान से पूजा अर्चना के साथ भव्य भंडारा, भगवती जागरण का आयोजन किया गया। मंगलवार को सिंदूर दान के साथ नम आंखों से माँ काली को विदाई दी गई। शहर में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 12 नवम्बर को बांग्ला परंपरा के अनुसार दोपहर में कलश स्थापना शिवतांडव, चंडीपाठ के साथ रात्रि में कालरात्रि माँ काली की पूजा प्रारम्भ हुई सोमवार की सुबह 5 बजे पूजा का समापन किया गया। सोमवार की शाम माँ काली की पूजा व महाआरती और भगवती जागरण व विशाल भंडार का आयोजन हुआ। देर रात तक चले उक्त धर्मिक आयोजन में शहर सहित आसपास क्षेत्र के बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने मां काली के दरबार मे हाजिरी लगाई और देर रात तक चले भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया। बाहर से आये भजन गायको द्वारा जस गीत व मातारानी के भजनों की मनमोहक प्रस्तुति दी। जिसमे बड़ी संख्या में मौजूद श्रद्धालु झूमते रहे। मंगलवार को सिंदूर दान की रस्म के साथ माँ काली को नम आंखों से विदाई दी गई। सिंदूर दान की परम्परा के निर्वाहन हेतु बड़ी संख्या में महिलाएं पंडाल परिसर पहुंची थी। ततपश्चात मध्यप्रदेश से आये कलाकारों के द्वारा माँ काली व भगवान भोलेनाथ की आकर्षक झांकी, परपरागत शैला नृत्य, ढोल नगाड़े व रंगबिरंगे आतिशबाजी के साथ नाचते गाते मां काली की भव्य विसर्जन यात्रा निकाली गई। जो नगर के विभिन्न मुख्यमार्गों से होते हुए रेणुका के तट स्थित छठ घाट पहुंची। जहां मां काली की प्रतिमा का विसर्जन किया गया। विसर्जन यात्रा में बड़ी संख्या मे महिलाएं भी शामिल रही। ज्ञात हो कि शहर में विगत 15 वर्षों से सार्वजिक श्री श्री काली पूजा समिति के द्वारा विशाल पंडाल का निर्माण करा बांग्ला परंपरा के अनुसार माँ काली की पूजा अर्चना की जाती है। नगर के भैयाथान रोड मंदिर पारा स्थित दुर्गा बाड़ी में आयोजित उक्त भव्य आयोजन में शहर सहित बिश्रामपुर, भटगांव, भैयाथान, रामानुजनगर व आसपास क्षेत्र के बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते है।

सार-संक्षेप

विजय इंग्लिश मीडियम स्कूल में दीपोत्सव के अवसर पर आयोजित हुए कार्यक्रम

मनेन्द्रगढ़ 14 नवंबर (देशबन्धु)। नगर के प्रतिष्ठित विद्यालय विजय इंग्लिश मीडियम हायर सेकेण्डरी स्कूल में दीपोत्वस के अवसर पर विभिन्न प्रकार के प्रतियोगिताएं आयोजित हुई।

दीपावली के अवसर पर विद्यालय में विद्यार्थियों के मध्य चित्रकला, रंगोली व दिया सज्जा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसके अंर्तगत विद्यालय के कक्षा प्रथम से बारहवीं तक के विद्यार्थियों ने अपनी भावनाओं व संदेशों को रंगोली के माध्यम से प्रस्तुत किया जिसमें विद्यार्थियों ने असत्य पर सत्य के विजय, राष्ट्रीय पक्षी, आधुनिक युग में फेसबुक, वाट्सअप आदि सोशल साइट्स के दुष्प्रभावों, छोटा भीम, नारी सशक्तिकरण आदि को अपनी रंगोली में दर्शाया। वहीं दिया सज्जा प्रतियोगिता में भी विद्यार्थियों ने अपनी उत्कृष्ट रचनात्मक कला का प्रदर्शन किया। उल्लेखनीय है कि कक्षा नर्सरी, केजी वन व केजी टू के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने भी चित्रकला प्रतियोगिता में हिस्सा लेकर उपस्थिति दर्ज करायी और सुन्दर-सुन्दर चित्र बनाये। कार्यक्रम की रूपरेखा कक्षा शिक्षिका पूनम सोरेन ने बनायी और इसका संचालन संस्था की शिक्षिका शारदा बरसैया, अंकिता पाण्डेय, ओर्पिता चैधरी के द्वारा संस्था के शिक्षक-शिक्षिकाओं की निगरानी में किया गया। प्रतियोगिता के समापन में संस्था प्राचार्य श्रीमती इन्द्रा सेंगर ने सभी बच्चों को उनके शानदार प्रयास के लिए बधाई दी और दीपावली में अपने माता-पिता और घर के बड़ों के देखरेख में पटाकों का आनंद लेने की सलाह देते हुए सभी विद्यार्थियों व विद्यालय के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं सहित पूरे विद्यालय परिवार को दीपवली की शुभकामनाएं दीं।

अवैध शराब विक्रय करने वालों पर की जा रही है कड़ी कार्रवाई

बलरामपुर 14 नवंबर (देशबन्धु)। विधानसभा निर्वाचन 2023 के दौरान शराब की अवैध बिक्री पर प्रतिबंध लगाने के लिए कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री रिमीजियुस एक्का के निर्देश पर जिला आबकारी विभाग द्वारा जिले में अवैध शराब विक्रय करने वालों पर छापामार कार्यवाही की जा रही है। सूचना पर थाना बलरामपुर के ग्राम तातापानी में अवैध रूप से लावारिस हालात में रखे गये 50 बल्क लीटर अवैध महुआ शराब एवं 150 किलोग्राम महुआ लाहन तथा ग्राम जतरो में 80 बल्क लीटर अवैध महुआ शराब एवं 130 किलोग्राम महुआ लाहन कुल 130 बल्क लीटर महुआ शराब तथा 280 किलोग्राम महुआ लाहन जब्त कर आबकारी अधिनियम के तहत् अज्ञात आरोपियों के विरूद्ध प्रकरण कायम किया गया। जिला आबकारी अधिकारी श्री सुनील कुमार सूर्यवंशी ने बताया है की विधानसभा निर्वाचन के दौरान अवैध शराब के निर्माण, विक्रय, परिवहन तथा सार्वजनिक जगहों पर मदिरापान और राष्ट्रीय एवं राजकीय राजमार्गों के किनारे संचालित होटल, ढ़ाबा में शराब रखने, पीने एवं पीलाने वालों के विरूद्ध कार्यवाही की जा रही है।

बाहर से आने वाले मतदान कर्मियों के लिए छात्रावास में रुकने की व्यवस्था

सूरजपुर 14 नवंबर (देशबन्धु)। मतदान तिथि के एक दिन पूर्व 16 नवंबर को मतदान दल को सुबह 06 बजे मतदान सामग्री का वितरण आईटीआई भवन परी से किया जाना है।16 नवंबर को किये जाने वाले सामग्री वितरण में शहर से ज्यादा दूरी से आने वाले मतदान कर्मी को असुविधा न हो इसके लिए जिला निर्वाचन अधिकारी संजय अग्रवाल के निर्देशन में उनके ठहरने की व्यवस्था की गई है। ताकि एक दिन पूर्व वो उपस्थित होकर अपने तय समय में मतदान सामग्री वितरण केंद्र आसानी से पहुंच सकें। मतदान दल कर्मियों के ठहरने के लिये कन्या परिसर (कलेक्टर बंगले के पास), बालक छात्रावास (नेहरू पार्क के पास), बालक छात्रावास (स्टेडियम के पास), बालक छात्रावास (बालक स्कूल के पास), कन्या छात्रावास (पुराना कलेक्ट्रेट) और कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय(मंगल भवन के पास) चिन्हित किया गया है। यहां लगभग 300 से 500 लोगों के रुकने की व्यवस्था है।

पांच सालों में कांग्रेस विधायक ने गांवों का नहीं किया दौरा- भैयालाल

कोरिया 14 नवंबर (देशबन्धु)। भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी भैयालाल राजवाड़े ने आज भाजपा कार्यालय में प्रेस वार्ता आयोजित कर कहा कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कोरिया को संभाग बनाने की घोषणा की हम इसका स्वागत करते हैं, लेकिन कांग्रेस ने इसे घोषणा पत्र में शामिल क्यों नही किया। सीधी बात है की कोरिया में कांग्रेस की हार के डर से मुख्यमंत्री ने संभाग की घोषणा की है, उन्होंने कहा कि जब कोरिया जिले के विभाजन के मुद्दे को लेकर शहर के लोग आंदोलन कर रहे थे तब मुख्यमंत्री से संभाग बनाने की मांग हम लोगो ने की थी, तब तो उन्होंने साफ कह दिया था कि कोरिया को संभाग नहीं बनाया जा सकता हमारे पास स्टाफ की बेहद कमी है। उन्होंने कहा कि कोरिया जिले को संभाग जरूर बनाए उन्होंने कहा कि जिला का बंटवारा इतना संतुलित किया है, जिस पर मुख्यमंत्री ने कोई भी हस्तक्षेप नहीं किया बैकुंठपुर विधायक ने भी जिले के असंतुलित विभाजन के लिए कोई प्रयास नहीं किया। आज बचरा पोड़ी के लोग अधर में लटके हैं, राजस्व के लिए कोरिया और ग्राम पंचायत तथा थानों के काम के लिए उन्हें 80 किलोमीटर दूर मनेंद्रगढ जाना पड़ता है।

भैया लाल राजवाड़े ने कहा कि आज चुनाव में स्थानीय विधायक अंबिका सिंहदेव जहां भी जाती है उन्हें ग्रामीणों के आक्रोश का सामना करना पड़ता है क्योंकि उन्होंने 5 साल किसी भी गांव में अपना चेहरा नहीं दिखाया है। श्री राजवाड़े ने कहा कि स्थानीय विधायक ने सिर्फ कमीशन लेने पर ही ध्यान दिया है। आज स्थिति यह है कि विधायक या उनकी बहन जहां भी वोट मांगने जा रहे हैं, उन्हें गांव वालों के विरोध का सामना ही करना पड़ रहा है।

कलेक्टर ने आधा दर्जन से ज्यादा मल्टीबूथ भवनों का किया निरीक्षण

- मतदान प्रतिशत बढ़ाने जिला प्रशासन की खास तैयारियां
- जहां एक ही भवन या परिसर में एक से अधिक बूथ, वहां एंट्री-एग्जिट अलग, सभी मतदान के केंद्रों में पेयजल, शौचालय और बैठने की व्यवस्था, आवश्यक बैरिकेडिंग, छठ त्यौहार के मद्देनजर व्रती महिलाओं का विशेष देने के निर्देश
- मतदाताओं से अपील- आपकी सुविधा के लिए सारी तैयारियां, वोट करने जरूर आएं

अम्बिकापुर 14 नवंबर (देशबन्धु)। जिले में 17 नवंबर को मतदान किया जाना है। लोकतंत्र के इस महापर्व की बेहतर तैयारियों में जिला प्रशासन जुटा हुआ हैं। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री कुन्दन कुमार मंगलवार को स्वयं शहरी क्षेत्र में स्थित आधे दर्जन से ज्यादा मल्टीबूथ भवनों का निरीक्षण करने पहुंचे। मल्टीबूथ भवन यानी ऐसे भवन या परिसर जहां, एक से अधिक मतदान केंद्र स्थित हैं। इनमें आवश्यक मूलभूत सुविधाओं का निरीक्षण किया गया। जिन शहरी मतदान केंद्रों में पिछले विधानसभा निर्वाचन में मतदान प्रतिशत 70 प्रतिशत से कम रहा है, उन मतदान केंद्रों में पहुंचकर आवश्यक सुविधाओं के विस्तार पर अधिकारियों को निर्देशित किया गया। जिससे शहरी क्षेत्र में मतदान प्रतिशत पिछले विधानसभा निर्वाचन की तुलना में बढ़ सके। इसमें जहां एक ही भवन या परिसर में एक से अधिक बूथ हैं, वहां एंट्री-एग्जिट अलग किए जा रहे हैं। इसके साथ ही सभी मतदान के केंद्रों में पेयजल, शौचालय और बैठने की व्यवस्था, आवश्यक बैरिकेडिंग पर भी जरूरी दिशा निर्देश दिए गए।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री कुन्दन ने मतदान केन्द्रों का जायजा लेते हुए कहा कि अंबिकापुर शहरी क्षेत्रों में मतदान प्रतिशत कम पाया गया है, जिसका कारण लंबी लाइन या मतदान केंद्र में मतदान प्रक्रिया में अधिक समय लगना आदि हो सकता है। इस हेतु उन्होंने कतार में लगने वाले मतदाताओं सहित मतदान केंद्र में प्रतिक्षरता मतदाताओं के बैठने के लिए छायादार सुविधा बनाने निर्देशित किया है जिससे मतदाता को मतदान करने ने किसी तरह की दिक्कत ना हो। वे मतदान करने के प्रति प्रोत्साहित हों। म्युनिसिपल स्कूल परिसर में आदर्श मतदान केंद्र बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि दिव्यांग, बुजुर्ग, एवं आगामी त्यौहार छठ को ध्यान में रखते हुए व्रती महिलाओं को किसी प्रकार की कोई समस्या न हो इस बात का ध्यान रखा जा रहा है। निरीक्षण के दौरान मतदान केन्द्र क्रमांक 94 टीसीपीसी एरिया, मतदान केन्द्र क्रमांक 92 फुन्दुरडिहारी, मतदान केन्द्र क्रमांक 93 नवापारा, मतदान केन्द्र क्रमांक 122 चित्रसेन मुहल्ला, मतदान केन्द्र क्रमांक 121 सोनी मोहल्ला, मतदान केन्द्र क्रमांक 98 सियानसदन मोहल्ला, मतदान केन्द्र क्रमांक 97 सोनी मोहल्ला नमना, मतदान केन्द्र क्रमांक 125 शासकीय कन्या महाविद्यालय, मतदान केन्द्र क्रमांक 126 शासकीय कन्या महाविद्यालय पश्चिमी कक्ष, मतदान केन्द्र क्रमांक 127 शासकीय कन्या महाविद्यालय उत्तरी, मतदान केन्द्र क्रमांक 111 प्राथमिक शाला पर्राडाड़, मतदान केन्द्र क्रमांक 113 मोमिनपुरा-2, मतदान केन्द्र क्रमांक 54 मायापुर, मतदान केन्द्र क्रमांक 56 मायापुर-2, मतदान केन्द्र क्रमांक 55 मायापुर-4, मतदान केन्द्र क्रमांक 71 पुलिस लाइन, मतदान केन्द्र क्रमांक 70 पुलिसलाईन, मतदान केन्द्र क्रमांक 72 डीसी रोड पुलिस लाइन, मतदान केन्द्र क्रमांक 67 बौरीपारा-1, मतदान केन्द्र क्रमांक 53 बौरीपारा, मतदान केन्द्र क्रमांक 51 बौरीपारा शिकारी रोड, मतदान केन्द्र क्रमांक 68 बौरीपारा-2, मतदान केन्द्र क्रमांक 125 खजुरपारा, मतदान केन्द्र क्रमांक 126 इमलीपारा, मतदान केन्द्र क्रमांक 117 बम्हपारा शामिल है। वोटिंग प्रतिशत बढ़ाने इस बार मुख्य बिंदुओं को समझने का प्रयास किया गया और मतदाताओं की सुविधा के मद्देनजर लोगों के लिए वेटिंग एरिया, होल्डिंग एरिया को बढ़ाया जा रहा है। ये पूरी व्यवस्था इसलिए की जा रही है कि जितने भी वोटर्स हैं, दिव्यांग, महिला, बुजुर्ग सहित युवा मतदाता, आसानी से अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें और जिले का वोटिंग प्रतिशत शहरी क्षेत्र में भी बढ़े तथा भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों का अच्छे से पालन हो।

12 वैकल्पिक फोटोयुक्त दस्तावेज दिखाकर भी मतदाता कर सकेंगे मतदान

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि छत्तीसगढ़ विधानसभा निर्वाचन-2023 के अंतर्गत भारत निर्वाचन आयोग की ओर से सभी मतदाताओं को निर्वाचक फोटो पहचान पत्र जारी किए गए हैं। आयोग सभी मतदाताओं से अपेक्षा करता है कि वे मतदान स्थल पर अपना मत देने से पहले अपनी पहचान सुनिश्चित करने के लिए आयोग की ओर से जारी निर्वाचक फोटो पहचान पत्र दिखाएंगे।

उन्होंने कहा कि यदि कोई निर्वाचक फोटो पहचान पत्र नहीं दिखा पाता है तो भारत निर्वाचन आयोग द्वारा उनके लिए 12 वैकल्पिक दस्तावेज भी अनुमत किए गए हैं। ऐसे निर्वाचक जो अपना निर्वाचक फोटो पहचान पत्र प्रस्तुत नहीं कर पाते हैं, वे अपनी पहचान स्थापित करने के लिए आधार कार्ड, मनरेगा जॉब कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, भारतीय पासपोर्ट, फोटोयुक्त पेंशन दस्तावेज, केंद्र/राज्य सरकार/लोक उपक्रम/पब्लिक लिमिटेड कंपनियों द्वारा अपने कर्मचारियों को जारी किए गए फोटोयुक्त सेवा पहचान पत्र, बैंकों/डाकघरों द्वारा जारी फोटोयुक्त पासबुक, एनपीआर के अंतर्गत आरजीआई द्वारा जारी स्मार्ट कार्ड, श्रम मंत्रालय की योजना के अंतर्गत जारी स्वास्थ्य बीमा स्मार्ट कार्ड, सांसदों/विधायकों/विधान परिषद सदस्यों को जारी किए गए सरकारी पहचान पत्र और भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा दिव्यांगजनों को जारी यूनिक डिसएबिलिटी आईडी (यूडीआईडी) कार्ड का उपयोग कर सकते हैं। मतदाता इनमें से कोई भी दस्तावेज प्रस्तुत कर मतदान कर सकेंगे। प्रवासी निर्वाचकों को जो अपने पासपोर्ट में विवरणों के आधार पर निर्वाचक नामावालियों में पंजीकृत हैं, मतदान केंद्र में केवल उनके मूल पासपोर्ट (तथा अन्य कोई पहचान दस्तावेज नहीं) के आधार पर ही पहचाना जाएगा।

मतदाताओं को भ्रमित करने वाले विज्ञापनों पर रोक

अम्बिकापुर 14 नवंबर (देशबन्धु)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा छत्तीसगढ़ विधानसभा आम निर्वाचन-2023 में इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के साथ ही प्रिंट मीडिया में भ्रामक प्रकृति के विज्ञापनों के प्रकाशन को रोकने के संबंध में व्यापक दिशा-निर्देश दिए गए हैं। इसके तहत मतदान दिवस और उसके एक दिन पहले प्रिंट मीडिया में प्रकाशित होने वाले राजनीतिक विज्ञापनों का पूर्व प्रमाणीकरण आवश्यक है।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा इस संबंध में जारी परिपत्र में छत्तीसगढ़ विधानसभा निर्वाचन के लिए दूसरे चरण के मतदान के एक दिन पहले एवं मतदान दिवस यानि 16 नवम्बर और 17 नवंबर को प्रिंट मीडिया में राजनीतिक विज्ञापनों के प्रकाशन के पूर्व जिला अथवा राज्य स्तरीय मीडिया प्रमाणन समिति से विज्ञापनों का पूर्व प्रमाणन अनिवार्य किया गया है। इसके लिए भारत निर्वाचन आयोग ने राज्य स्तरीय तथा जिला स्तरीय मीडिया प्रमाणन समिति को प्रमाणन हेतु प्राप्त आवेदन पर त्वरित निर्णय लेने के निर्देश दिए हैं।

मतदान दिवस के पूर्व एवं मतदान तिथि को प्रिंट मीडिया में भ्रामक प्रकृति के विज्ञापनों के प्रकाशन के बाद वे दल अथवा प्रत्याशी जो इससे प्रभावित होते हैं, उनके पास किसी भी प्रकार की सफाई अथवा खंडन का अवसर नहीं होता। ऐसे में स्वतंत्र, पारदर्शी और निष्पक्ष निर्वाचन के लिए विज्ञापनों का पूर्व प्रमाणन जरूरी है।

चुनाव में लगे वाहनों की पार्किंग व्यवस्था आईटीआई परी में

सूरजपुर 14 नवंबर (देशबन्धु)। 16 नवंबर को आईटीआई भवन परी (स्ट्रॉन्ग रूम) से सुबह 6 बजे मतदान सामग्री का वितरण किया जाएगा। इसकी सुव्यवस्था के लिए जिला निर्वाचन अधिकारी संजय अग्रवाल के निर्देशन पर पूर्व से ही पार्किंग व्यवस्था सुनिश्चित कर ली गई है। जिसके तहत सामग्री वितरण केंद्र के पीछे स्थित मैदान पर पार्किंग व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। जिसको चार हिस्सों में बांटा गया है। जिसमें तीन हिस्से में तीनों विधानसभा क्षेत्र प्रेमनगर (04), भटगांव(05) व प्रतापपुर(06) के लिए विधानसभा वार मतदान केंद्र के लिए लगभग 150 बसें खड़ी होगीं। इसके साथ ही एक हिस्से में सेक्टर अधिकारियों के लिये 90 छोटी गाड़ियां पार्क रहेंगीं। इसके अलावा भी कई गाड़ियां रिजर्व में सुरक्षित रहेंगीं जो कि आवश्यकता अनुरूप उपयोग में लाई जाएगीं। पार्किंग व्यवस्था के सुनिश्चित होने से मतदान केंद्र के लिए मतदान कर्मी मतदान सामग्री के साथ अपने मतदान केंद्र के लिए निर्धारित समय पर निकाल सकेंगे जिससे कि वो निश्चित समय में अपने मतदान केंद्र पहुंच सकें। इसके साथ ही नगर सेना के बगल मे मतदान कर्मी हेतु पार्किंग और लाइवलीहुड हॉस्टल के बगल मे वीआईपी पार्किंग एरिया भी बनाया गया है। विधानसभा निर्वाचन के लिए सुरक्षा बल के ठहरने की व्यवस्था के लिए जिले में स्थित भवनों का अधिग्रहण किया गया है। जिसमें लाईवलीहुड हॉस्टल सूरजपुर, रैना बसेरा सूरजपुर, एसईसीएल ऑडिटोरियम बिश्रामपुर, शासकीय महाविद्यालय बिश्रामपुर, शासकीय बालक छात्रावास बिश्रामपुर, मैत्री भवन जरही, आईटीआई भवन प्रेमनगर, शासकीय कन्या छात्रावास पिउरी रामानुजनगर, थाना परिसर प्रतापपुर, थाना भवन रमकोला, नवीन महाविद्यालय ओड़गी, आईटीआई भवन चेन्द्रा, नगर सेना बैरक सूरजपुर इत्यादि भवनों को चयनित किया गया है।

महतारी वंदन योजना का फार्म भराये जाने पर प्रत्याशी सहित अन्य दो को शो कॉज नोटिस जारी

अम्बिकापुर 14 नवंबर (देशबन्धु)। विधानसभा चुनाव के लिए लागू आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के आरोप में विधानसभा क्रमांक 09 लुण्ड्रा के भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी श्री प्रबोध मिंज के साथ विधानसभा लुण्ड्रा के भाजपा महामंत्री श्री विक्रम सिंह तथा ग्राम केनापारा निवासी श्री सुदर्शन सिंह को रिटर्निंग अधिकारी लुण्ड्रा द्वारा शो कॉज नोटिस जारी किया गया है। विधानसभा क्रमांक 09 लुण्ड्रा के रिटर्निंग ऑफिसर श्री टी सी अग्रवाल ने एफएसटी दल को कार्रवाई उपरांत तीनों को नोटिस जारी कर 24 घण्टे के भीतर जवाब तलब किया है।

शिकायत के अनुसार लुण्ड्रा विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत फ्लाइंग स्क्वॉड दल क्रमांक - 06 ने प्राप्त सूचना के आधार पर तहसील लखनपुर ग्राम केनापारा, थाना कुन्नी के निवासी सुदर्शन सिंह द्वारा महतारी वंदन योजना का फॉर्म भरवाए जाने की जानकारी प्राप्त होने पर कार्रवाई करते हुए कुल 263 फार्म जप्त किए। नोटिस के अनुसार विधानसभा लुण्ड्रा के भाजपा महामंत्री श्री विक्रम सिंह के द्वारा महतारी वंदन योजना में पंजीयन हेतु फार्म दिया गया था। लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 123 के अनुसार यह कार्य आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन है। शिकायत एवं आवेदन प्रारूप के संबंध में सभी को स्पष्टीकरण 24 घण्टे के भीतर रिटर्निंग अफसर के समक्ष प्रस्तुत किया जाने कहा गया है। जवाब प्राप्त नहीं होने पर लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 123 और भारतीय दण्ड संहिता के सुसंगत प्रावधान अनुसार नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी।

कांग्रेस की सोच लोग आर्थिक रूप से मजबूत हों - सिंहदेव

कांग्रेस की सरकार जो वादे करती है पूरे भी करती है, आगे भी करेगी

सूरजपुर 14 नवंबर (देशबन्धु)। चुनाव प्रचार के अंतिम दौर में मंगलवार को उपमुख्यमंत्री टी.एस. सिंहदेव ने प्रेमनगर विधानसभा क्षेत्र के तिलसिवां स्थित मुख्यमंत्री डीएवी पब्लिक स्कूल ग्राउंड में भरोसे की आमसभा में कहा कि कांग्रेस सोचती है लोग आर्थिक रूप से मजबूत हों। पिछले 5 वर्षों में सरकार ने इसी सोच के साथ काम किया है। प्रदेश में जो बुनियादी काम हुए हैं उसी के आधार पर सरकार भरोसे की बात कह रही है। प्रदेश में कांग्रेस की सरकार आई तो लोग आर्थिक रूप से और मजबूत होंगे,कांग्रेस ने इसकी चिंता की है। कांग्रेस ने जितनी भी घोषणाएं की है, प्रदेश मे कांग्रेस की सरकार बनते ही अक्षरशः पालन करेगी और यह पहली प्राथमिकता होगी।

श्री सिंहदेव ने प्रदेश के कांग्रेस सरकार के उपलब्धियां गिनाईं वही इस चुनाव में कांग्रेस द्वारा किए गए वायदों का जिक्र किया।उन्होंने कहा कि पिछले बार राहुल गांधी ने कर्जमाफी की बात कही थी। सरकार बनते ही हमने किसानों का कर्ज माफ करने का निर्णय लिया। 2500 रूपए में धान की खरीदी की गई । कांग्रेस जो कर सकती है वही कहती भी है ।नागरिकों से झूठ या छलावा नहीं होना चाहिए । इस बार भी कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी और राहुल गांधी ने जो बातें कही हैं, उनका प्रदेश में बनने वाली कांग्रेस की सरकार अक्षरशः पालन करेगी। उन्होंने कहा कि पिछले 5 वर्षों में कांग्रेस की सरकार ने किसानों , मजदूरों ,युवाओं, महिलाओं सहित सभी वर्गों के बेहतरी के लिए काम किया है। इसी आधार पर इस बार के चुनाव में कांग्रेस भरोसे की बात कह रही है। कांग्रेस ने इस बार भी किसानों का कर्ज माफ करने की बात कही है दूसरी कोई पार्टी ऐसा नहीं कर रही है।भूमिहीन कृषि मजदूरों को सालाना 7000 से बढ़ाकर अब 10000 देने को कहा है । बिजली बिल अब हाफ नहीं बल्कि 200 यूनिट तक माफ किया जाएगा, जिसका लाभ प्रदेश के करीब 42 लाख उपभोक्ताओं को मिलेगा। शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरी के लिए काम होंगे। महिलाओं के सम्मान व आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए 15000 रूपए सालाना सीधे उनके खाते में दिए जाएंगे। साथ ही 3200 में धान की खरीदी करने का निर्णय लिया गया है। श्री सिंहदेव ने कहा कि कांग्रेस की सरकार ने प्रदेश में सड़कों का जाल बिछाया। अच्छी सड़क बनी और परिवहन सुगम हो गया। सड़क दुर्घटनाओं में घायलों के मुफ्त इलाज की जिम्मेदारी भी सरकार उठाएगी।उन्होंने चुनाव में शत प्रतिशत मतदान की अपील की और कहा कि प्रजातंत्र तभी सफल हो पाता है जब सभी अपने मताधिकार का प्रयोग करते हैं।श्री सिंह देव विधानसभा क्षेत्र के ब्लॉक मुख्यालय प्रेमनगर,रामानुजनगर,सूरजपुर व कंदरई में कांग्रेस के पक्ष में चुनावी सभा को संबोधित किया। इस दौरान कांग्रेस के पदाधिकारी मंच पर उपस्थित रहे।

सार-संक्षेप

भाजपा झूठ का मुखौटा लगाकर लोगों को ठगने का काम करती है- ज्योत्सना महंत

सक्ती 14 नवंबर (देशबन्धु)। नगर में जनसंपर्क में पहुंची ज्योत्सना महंत ने स्मृति ईरानी पर किया पलटवार कांग्रेस सरकार एवं डॉक्टर चरण दास महंत पर लगाए आरोप पर स्मृति ईरानी पर पलटवार करते हुए विधानसभा अध्यक्ष डॉक्टर चरण दास महंत की पत्नी श्रीमती ज्योत्सना महंत ने कहा स्मृति ईरानी को पहले जानकारी लेना चाहिए कि महंत जी क्या करते हैं भ्रष्टाचार तो भाजपा द्वारा किया जाता है पहले वह यह बताएं कि नरेंद्र मोदी द्वारा 15 लाख रुपए हर गरीबों के खाते में आने की बात कही गई थी क्या वह पैसा आया और स्मृति ईरानी स्वयं एक महिला है और इस प्रकार के आरोप लगाना उन्हें शोभा नहीं देता एक महिला होते हुए भी वह महिला का अपमान करती है और सोनिया गांधी को नाम ले लेकर बुलाती है जब मैं उनका विरोध करती हूं तो मेरे साथ स्वयं लड़ाई झगड़ा करने में उतरती है कांग्रेस सरकार ने जो वादे किए थे वह सारे पूरे किए है चरणदास महंत ने शक्ति विधानसभा में 800 करोड़ से ज्यादा का काम महंत जी के द्वारा किया गया है उन्होंने कहा चरणदास महंत मेरे पति हैं और स्मृति ईरानी यह नहीं जानती कि मैं उनसे कई बार पंगा ले चुकी हूं महंत जी कोई पैराशूट लैंडिंग विधायक नहीं है जैसे स्मृति ईरानी टीवी सीरियल में कभी सास भी बहू थी से लेंडीग कर राजनीति में आइ है हम जमीनी स्तर के नेता हैं मेरे ससुर स्वर्गीय बिसाहू दास महंत जी के निधन के बाद चरणदास महंत जी 50 वर्षों से क्षेत्र की जनता का सेवा कर रहे हैं विधानसभा में हमारा गृह निवास है और गृह निवास से कोई व्यक्ति ना जुड़ा हो ऐसा हो नहीं सकता है।

दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में सोनल ने बनाई शानदार रंगोली

खरसिया 14 नवंबर (देशबन्धु)। सोनल अग्रवाल ने दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में माता लक्ष्मी की बनाई शानदार रंगोली जिसको देखकर काफी लोगों ने रंगोली को पसंद कर उसकी सराहना की। इस बार दीपावली का महापर्व 12 नवंबर को आया दिवाली का पर्व कार्तिक मास के अमावस्या तिथि को मनाया जाता है। इस दिन माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की उपासना की जाती है। कहते हैं कि इस दिन भगवान राम लंका पर विजय प्राप्त करके अयोध्या वापिस लौटे थे, जिसकी खुशी में सभी नगरवासियों ने दीपक जलाए थे रंगोली बनाई थी। स्टेशन रोड निवासरत सुभाष अग्रवाल की पुत्री सोनल अग्रवाल काफी होनहार है रंगोली, कुकिंग, मेहंदी सहित सभी चीज़ों में इनको महारत हासिल है। दिवाली के दिन लोग अपने-अपने घरों में दीए जलाते है रंगोली बनाकर फूलों से सजाते है। कभी आपने सोचा है दिवाली क्यों मनाई जाती है और इस पर्व की शुरुआत कब से हुई थी।

रामायण के मुताबिक, भगवान श्रीराम जब लंकापति रावण का वध करके माता सीता और भाई लक्ष्मण के साथ अयोध्या वापस लौटे तो उस दिन पूरी अयोध्या नगरी दीपों से सजाया गया था। कहते हैं कि भगवान राम के 14 वर्षों के वनवास के बाद अयोध्या आगमन पर दिवाली मनाई जाती तबसे दिवाली का यह पर्व अंधकार पर विजय का पर्व बन गया। श्री राम मंदिर बनने और 22 जनवरी को श्री राम मंदिर का उद्घाटन होने जा रहा जिसकी खुशी पूरे हिंदुस्तानियों में दिख रही है।

शाम 5 बजे से तत्काल लागू होगा 48 घंटे पूर्व निर्वाचन प्रोटोकॉल

सारंगढ़ 14 नवंबर (देशबन्धु)। भारत निर्वाचन आयोग और मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय रायपुर के निर्देशानुसार कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. फरिहा आलम सिद्दीकी ने कलेक्टोरेट सभाकक्ष में मतदान दिवस के निर्धारित समय के साथ समाप्त होने वाले अंतिम 48 घंटों की अवधि के दौरान निर्वाचन प्रोटोकॉल को तत्काल प्रभाव से क्रियान्वयन करने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है।

48 घंटे पूर्व (48 घंटा पूर्व) सभी दलों और उम्मीदवारों को सार्वजनिक सभा एवं जुलूस का आयोजन नहीं किया जाएगा। निर्वाचन क्षेत्र में राजनीतिक पदाधिकारियों के जो उस विधानसभा क्षेत्र के मतदाता नहीं हैं, के रहने पर प्रतिबंध होगा। किसी भी प्रकार के वाहनों पर या किसी भी अन्य तरीके से लगे लाउडस्पीकर का उपयोग करने की अनुमति नहीं होगी। शराब की दुकानें बंद रहेंगी। विश्राम गृह के कमरे किसी भी व्यक्ति को अंतिम 48 घंटे में आवंटित नहीं किए जाएंगे।

मीडिया और सोशल मीडिया के लिए 48 घंटे पूर्व निर्वाचन प्रोटोकॉल लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 126 लागू है। इसके अनुसार टेलीविजन या अन्य समान उपकरण के माध्यम से किसी भी निर्वाचन से संबंधित सामग्री को जनता के सामने प्रदर्शित नहीं कर सकता है। प्रिंट मीडिया पर राजनीतिक विज्ञापन या प्रचार सामग्री का अंतिम 48 घंटे में प्रकाशन के पूर्व प्रमाणन आवश्यक होगा। किसी भी जनमत सर्वेक्षण या एग्जिट पोल के परिणाम को किसी भी समय प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य मीडिया द्वारा किसी भी तरीके से प्रकाशित, प्रचारित या प्रसारित करने पर 30 नवंबर 2023 की शाम 6.30 बजे तक प्रतिबंध होगा।

प्रेक्षक पवन कुमार ने बिलाईगढ़ के 15 मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किया

सारंगढ़ 14 नवंबर (देशबन्धु)। बिलाईगढ़ विधानसभा के सामान्य प्रेक्षक पवन कुमार ने 15 मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किया और आवश्यक व्यवस्था, निर्वाचन नियमों के अनुसार पालन करने के लिए बीएलओ एवं सहायक रिटर्निंग अधिकारी को निर्देशित किया। श्री पवन कुमार द्वारा जिन मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किया गया उनमें सिंघीचुंआ, चचरेल, पिरदा, चारपाली, बोडाडीह, बोड़ा, सुरगुली, धनसीर, बांसउरकुली, तांडापारा, खैरझिटी, भण्डोरा, खुरसुला, करियाटार शामिल हैं।

तीनों विधानसभा सीट पर हो रही कांटे की लड़ाई

कहीं सीधा, कहीं त्रिकोणीय,तो कहीं चतुष्कोणीय मुकाबला

आज शाम थम जाएगा चुनावी शोर गुल,दो दिन बाद मतदान

जांजगीर, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। विधान सभा चुनाव जीतने के लिए जिले के तीनों सीट में कांटे का मुकाबला जारी है। प्रचार के अंतिम दौर में सभी पार्टी मतदाताओं को रिझाने में लगे है। वहीं जनता की खामोशी अभी भी बरकरार है जो इस चुनाव में किसके पक्ष में बहुमत देगी यह समझ पाना आसान नहीं। इसलिए अंतिम समय में हर दल कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते। इस बार जिले के तीनों विधानसभाओं में मुकाबला और भी रोचक बन रहा है। स्थिति ऐसी बन गई है कि कही सीधा,तो कही त्रिकोणीय,तो कही चतुष्कोणीय मुकाबला देखने को मिल रहा है। अब मतदान के लिए महज दो दिन ही रह गए। जिसके चलते रोज नए -नए समीकरण बन रहे है और मुकाबला भी करीबी होते नजर हो रहा है।

सक्ति जिला गठन उपरांत जांजगीर चाम्पा जिले में तीन विधानसभा है। तीनों ही विधानसभा की अलग-अलग राजनीतिक परिस्थितियां है। जांजगीर चाम्पा व अकलतरा विधानसभा में अभी भाजपा काबिज है। जबकि पामगढ़ में बसपा का कब्जा है। जांजगीर चाम्पा व अकलतरा विधानसभा के जहाँ पिछले तीन दशकों के चुनावी परिणाम पर नजर डाले तो मालूम होता है कि इन विधानसभा के मतदाताओं ने किसी भी दल को लगातार दूसरी बार जितने नहीं दिया है। अर्थात इन विधानसभाओं की मतदाता हर बार अप्रत्याशित परिणाम देने में माहिर हैं। जबकि अजा वर्ग के लिए आरक्षित पामगढ़ विधानसभा में समीकरण अलग है। यहाँ बसपा की भूमिका प्रभावी तो है ही। पिछले 7 विधानसभा चुनाव में केवल एक-एक बार ही भाजपा-कॉंग्रेस इस सीट पर फतह कर पाई है। इस बार भी यहां बसपा की भूमिका को कमतर नहीं आंका जा सकता। जांजगीर चाम्पा विधानसभा सीट पर इस बार भी कॉंग्रेस-भाजपा की बीच सीधा मुकाबला माना जा रहा है,भाजपा प्रत्याशी के रूप में छठीं बार मैदान में उतरे नारायण चंदेल का मुकाबला पिछली बार बसपा प्रत्याशी रहे व वर्तमान में कॉंग्रेस प्रत्याशी व्यास कश्यप से है। इन दोनों के मध्य सीधा मुकाबला हैं। इन दोनों ही दल के समीकरण को प्रभावित करने के लिए बसपा के राधेश्याम सूर्यवंशी,जनता कॉंग्रेस छत्तीसगढ़ (जे) रविन्द्र द्विवेदी व आप से परमेश्वर सांडे है। कौन सा दल को किसको ज्यादा प्रभावित करेगी यह तो नतीजे उपरांत ही मालूम हो पायेगा। वहीं अकलतरा विधानसभा सभा जहाँ चतुष्कोणीय मुकाबले ने राजनीतिक विश्लेषकों की उत्सुकता बढ़ा दी हैं। अकलतरा के मतदाता ने हर दल को मौका दिया है। यहां से 1990 में निर्दलीय प्रत्याशी भी चुनाव जीत चुके हैं। मतदाताओं ने यहाँ से कभी बसपा, कभी कॉंग्रेस तो,कभी भाजपा को मौका देते आई है। अभी इस सीट पर भाजपा काबिज़ है। भाजपा के सौरभ सिंह, कॉंग्रेस के राघवेंद्र सिंह ,बसपा के विनोद शर्मा व जनता कॉंग्रेस छत्तीसगढ़ जे की ऋचा जोगी के बीच चतुष्कोणीय मुकाबला की स्थिति दिख रही है। हालांकि यहां आम आदमी पार्टी के आनंद प्रकाश मिरी भी मैदान में है। ऐसे में यहाँ मुकाबला काफी रोचक हो गया है। यहाँ प्रत्याशियों को चुनाव जीतने के लिए एक-एक वोट अपने पक्ष में करने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ रही हैं। चूंकि पिछले चुनाव में यहाँ भाजपा व बसपा के बीच बेहद नजदीकी मुकाबले में भाजपा ने जीत दर्ज की थी। इसी तरह जिले की एकमात्र अजा वर्ग के लिए आरक्षित पामगढ़ विधानसभा जो पूरे प्रदेश में बसपा का गढ़ माना जाता है। अभी भी इस सीट बसपा काबिज है। पिछले 7 चुनाव में यहां केवल एक -एक बार ही कॉंग्रेस व भाजपा सीट जीतने में कामयाब रही है। इस समय यहां बसपा की श्रीमती इंदुबंजारे,कॉंग्रेस की श्रीमती शेषराज हरवंश,भाजपा के संतोष लहरे के बीच त्रिकोणीय मुकाबला है। यहां कॉंग्रेस से बागी होकर पूर्व प्रत्याशी गोरेलाल वर्मन जनता कॉंग्रेस छत्तीसगढ़ (जे) से मैदान में होने से इन तीनों ही दलों के समीकरण को गड़बड़ा दिए हैं। अब मतदान किसके पक्ष में होगा यह मतदाता तय करेगा। हांलाकि इस विधानसभा में बसपा के कैडर वोट को अभी तक कोई भी पार्टी सेंध लगाने में सफल नही हो पाया। बहरहाल अब देखना होगा कि किस विधानसभा में किस दल किस पर कौन भारी है।

बिजली बिल हाफ का लाभ भाजपा वाले भी उठाते है-बघेल

कांग्रेस प्रत्याशी व्यास कश्यप के पक्ष में प्रचार करने मुख्यमंत्री ने चांपा में ली सभा

जांजगीर, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। जांजगीर चांपा विधानसभा के चांपा नगर के भालेराय स्टेडियम में आज मुख्यमंत्री भूपेश बघेल कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भूपेश बघेल ने मोदी पर जोरदार हमला बोला। उन्होंने कहा कि मोदी किसानों के हित नहीं चाहते, किसानों का कर्ज माफ नहीं करते वह अपने दोस्त अडानी, अंबानी का कर्जा माफ करते हैंज्इसलिए मोदी की गारंटी छत्तीसगढ़ में फेल है।

कांग्रेस प्रत्याशी व्यास कश्यप के पक्ष में प्रचार करने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने चांपा के भालेराय मैदान में आयोजित चुनावी सभा में कहा कि इस बार जांजगीर चांपा की जनता कांग्रेस प्रत्याशी को अधिक संख्या में भेजेंगीं और छत्तीसगढ़ में फिर से कांग्रेस की सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। उन्होने सरकार की घोषणा में बिजली बिल हाफ करने की बात करते हुए कहा कि इसका लाभ पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह से लेकर जांजगीर चांपा के भाजपा प्रत्याशी नारायण चंदेल को भी मिलता है। विधानसभा सीट के कांग्रेस प्रत्याशी व्यास कश्यप के पक्ष में प्रचार करने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने चांपा के भालेराय मैदान में आयोजित चुनावी सभा में शिरकत की। मंच पर कांग्रेस के नेता डॉ. चरणदास महंत मौजूद रहे। इसके पूर्व मंडी परिसर में बनाए गए हेलीपेड में कांग्रेसजनों ने स्वागत किया। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने चुनावी सभा को संबोधित करते हुए मजाकिया अंदाज में कहा कि जांजगीर वाले चालक हैं। दो-दो सीट जीताकर भेजते हैं। मुझे उम्मीद है, इस बार जांजगीर चांपा की जनता कांग्रेस प्रत्याशी को अधिक संख्या में भेजेंगीं और छत्तीसगढ़ में फिर से कांग्रेस की सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। वहीं सरकार की घोषणा में बिजली बिल हाफ करने की बात करते हुए कहा कि इसका लाभ पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह से लेकर जांजगीर चांपा के भाजपा प्रत्याशी नारायण चंदेल को भी मिलता है। हमारी सरकार सर्वहित सोचने वाली सरकार है। जुमला फेंकने वाली नहीं। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तंज कसते हुए कहा कि मोदी जी ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज ब्रेटली से भी ज्यादा तेज फेंकते हैं, जिस बात को जनता भली-भांति जवाब देगी। आने वाले 3 दिसंबर को कांग्रेस 75 सीट जीतकर कर सरकार बनायेगी । ये जिम्मेदारी आप सबको दे रहा हूं। उन्होंने कहा कि सरकार बनी तो इस बार किसान के कर्जा के साथ समूह की दीदीयो की भी कर्जा माफ करेगें। 21 क्विंटल धान 3200 रुपये समर्थन मूल्य में खरीदी करेगे। भूपेश बघेल ने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार किसान, मजदूर ,महिला एवं बेरोजगारों के लिए हर वह कदम उठा रही है जिससे सभी वर्गों को इसका लाभ मिले. किसानों का धान ,गृह लक्ष्मी योजना के तहत हर महिलाओं को सालाना 15000 दिया जाएगा, गैस में 500 की सब्सिडी दी जाएगी. और बिजली 200 यूनिट फ्री दिया जाएगा । कार्यक्रम को डॉ. महंत ने भी संबोधित किया।

वोटर टर्न आउट एप के माध्यम से जान सकते हैं मतदान की स्थिति

जांजगीर, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ विधानसभा निर्वाचन 2023 के द्वितीय चरण में आम नागरिक मतदान की विधानसभावार जानकारी वोटर टर्न आउट मोबाइल एप का उपयोग कर 17 नवंबर को मतदान के दिन मतदान की स्थिति को देख सकते हैं। वोटर टर्नआउट एप के माध्यम से छत्तीसगढ़ विधानसभा निर्वाचन 2023 के द्वितीय चरण में विधानसभावार वोटर टर्न ऑउट की अद्यतन स्थिति जान सकते हैं।

आचार संहिता का उल्लंघन, ऑगनबाड़ी सहायिका पद से पृथक

जांजगीर, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। परियोजना अधिकारी एकीकृत बाल विकास परियोजना नवागढ़ द्वारा नगर पंचायत शिवरीनारायण वार्ड क्रमांक 06 में पदस्थ आँगनबाड़ी सहायिका श्रीमती देवी कुमारी कर्ष के द्वारा महतारी वंदन योजना का फार्म घर-घर जाकर भरवाने एवं पार्टी विशेष की प्रचार-प्रसार करने के संबंध में प्राप्त शिकायत प्रमाणित होने से यह कृत्य लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 129 एवं 134-क एवं आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन किये जाने के फलस्वरूप तत्काल मूल्यांकन समिति से अनुमोदन उपरान्त आँगनबाड़ी सहायिका को पद से पृथक किया गया है।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने भेजा नेवता

17 नवम्बर को चुनई तिहार में शत प्रतिशत मतदान की अपील

जांजगीर, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। विधानसभा चुनई तिहार में 17 नवम्बर को मतदान का नेवता कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी ने जिले के मतदाताओं को भेजा है। छत्तीसगढ़ी में भेजे इस नेवता पाती में जिले के मतदाताओं को जय जोहार के अभिवादन के साथ कलेक्टर ने निवेदन किया है कि सभी मतदाता अपने मतदान केन्द्र में जाकर ईव्हीएम मशीन का बटन दबाकर अपने मताधिकार का प्रयोग करें। लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए आस-पड़ोस, संगी-साथी के साथ मतदान करने का निमंत्रण इस नेवता पाती में दिया गया है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने जिले के सभी मतदाताओं से अपील की है कि बिना भय व पक्षपात के वे अपने मताधिकार का प्रयोग करें। जिले में शत प्रतिशत मतदान कराने के लक्ष्य को लेकर जिला प्रशासन स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं पारदर्शी निर्वाचन के लिए प्रतिबद्ध है। मतदाताओं को जागरूक करने के लिए सुव्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं जागरूकता कार्यक्रम अंतर्गत जिले में सतत अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान से मतदाता प्रेरित हो रहें हैं। जिले के सभी मतदान केन्द्रों में 17 नवम्बर शुक्रवार को प्रातः 8 बजे से शाम 5 बजे तक मतदान का समय निर्धारित है। निर्धारित तिथि व समय में सभी मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें।

जुआ खेलने वाले 8 आरोपियों को अकलतरा पुलिस ने किया गिरफ्तार

जांजगीर, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। थाना अकलतरा क्षेत्र में अलग अलग जगह से जुआ खेलने वाले 08 आरोपियों को अकलतरा पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपियों के कब्जे से बरामद नगदी रकम 9470 रूपया एवं 52 पत्ती तास बरामद किया है। आरोपियों के विरूद्ध धारा 3 (2) छ.ग. जुआ अधिनियम के तहत की गई कार्रवाई।

अकलतरा पुलिस को सूचना मिली कि ग्राम सांकर खैरवार मोहल्ला कुटरहा तालाब रोड के पास में एवम पुराना छात्रावास परिसर के आस पास अकलतरा में कुछ लोग रूपयें पैसा का दांव लगाकर, काट पत्ती नामक जुआ खेल रहें है कि सूचना पर रेड कार्यवाही किया गया मौके पर आरोपी विनोद कुमार कोशले निवासी सोनादुला,हसन कुमार टाण्डे निवासी सोनादुला,देवचरण भारद्वाज निवासी सोनादुला,गजेन्द्र सत्यम निवासी सांकर,संतोष खैरवार निवासी सोनादुला,गिरजाशंकर सोनवानी निवासी सोनादुला,संजय सिंह निवासी अकलतरा,जितेंद्र सिंह निवासी अकलतरा थाना अकलतरा काट पत्ती नामक जुआ खेलते पाया गया। आरोपियों के कब्जे से जुमला नगदी रकम 9470 रूपया एवं 52 पत्ती तास को बरामद किया जाकर आरोपी के विरूद्ध थाना अकलतरा में धारा 3 (2) जुआ अधिनियम कायम कर विधिवत् गिरफ्तार कर धारा छ.ग. जुआ प्रतिषेद अधिनियम के तहत कार्यवाही किया गया। उपरोक्त कार्यवाही में निरी. तुलसिंह पट्टावी, उप निरी.लालन पटेल, अरुण सिंह, आरक्षक राघवेन्द्र घृतलहरे, ओम प्रकाश डहरिया, शेष नारायण साहू का योगदान रहा।

चाम्पा में आज गृहमंत्री अमित शाह

जांजगीर, 14 नवम्बर (देशबन्धु)।आज चाम्पा नगर के भालेराय मैदान में 11:30 बजे केन्द्रीय गृहमंत्री से अमित शाह भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में चुनावी जनसभा को संबोधित करेंगे।

भारतीय जनता पार्टी जांजगीर-चाम्पा के जिला महामंत्री पुरूषोत्तम शर्मा नें दी है।

दो नग एक्साइड बैटरी चोरी, आरोपी गिरफ्तार, बैटरी जब्त

जांजगीर, 14 नवम्बर (देशबन्धु)। नगर पालिका चांपा का ट्रेक्टर से बैटरी चोरी करने वाले आरोपी को चाम्पा पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से बरामद दो नग एक्साइड का बैट्री किमती 15,000 रु बरामद हुआ है। आरोपी के विरुद्ध धारा 380 भादवि के तहत कार्यवाही कर न्यायायिक रिमांड पर भेजा गया।

मामले पर पुलिस ने बताया कि 11 नवम्बर को प्रार्थी संजय कुमार सहिस उम्र 26 साल निवासी पुराना कालेज रोड चांपा सहायक ग्रेड 03 नगर पालिका परिषद चांपा द्वारा की रिपोर्ट पर थाना चाम्पा मे धारा 380 भादवि कायम कर विवेचना में लिया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल माल मुल्जिम पता तलाश हेतु मुखबीर लगाया गया। सूचना मिला की आरोपी विशाल बरेठ द्वारा चोरी का 02 नग बैटरी रखा है, की सूचना पर रेड कार्यवाही किया जाकर, हिरासत में लेकर ट्रेक्टर बैटरी चोरी के घटना के संबंध में बारीकी से पूछताछ किया गया जो बैटरी को चोरी करना स्वीकार किए जाने से मेमोरंडम कथन लिया गया जिसके कब्जे से चोरी के दो नग ट्रेक्टर का बैटरी सफेद कलर का बरामद किया गया है। आरोपी विशाल बरेठ निवासी शंकरनगर चापा के विरुद्ध अपराध धारा सदर का सबूत पाए जाने से गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड में भेजा गया है। उपरोक्त कार्यवाही में निरीक्षक मनीष सिंह परिहार, सउनि राम प्रसाद बघेल, आरक्षक सुनील

17 नवम्बर को जिले में शांतिपूर्ण और सुरक्षित मतदान के लिए ली गई बैठक

सक्ती 14 नवंबर (देशबन्धु)। विधानसभा निर्वाचन 2023 अंतर्गत जिले में 17 नवंबर को होने वाले निर्वाचन के शांतिपूर्ण एवं सुरक्षित संपादन हेतु जिले के लिए नियुक्त सुरक्षा बलों के कमांडेंट एवं सहायक कमांडेंट स्तर के अधिकारियों की आज सामान्य प्रेक्षक विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 35 सक्ती मोहम्मद वाई. सफिरूल्ला , विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 36 व 37 उमाकांत त्रिपाठी, पुलिस प्रेक्षक शैलेन्द्र कुमार बर्णवाल, व्यय प्रेक्षक अतुल कुमार रामदास गोखे, कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती नुपूर राशि पन्ना और पुलिस अधीक्षक एम.आर. आहिरे द्वारा कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आवश्यक बैठक ली गई।

बैठक में 17 नवम्बर को होने वाले विधानसभा चुनाव हेतु जिले के लिए बाहर से नियुक्त सुरक्षा बलों और जिला पुलिस बल को आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुवे मतदान दलों, सामग्री वितरण, सामग्री वापसी सहित अन्य सुरक्षा कार्यों के विषय में आवश्यक निर्देश दिये गये। बैठक में सुरक्षा बलों के अधिकारियों की उपस्थिति में सक्ती जिले का मैदानी जिला होने के अनुसार निर्वाचन कार्य हेतु संभावित औचक कार्यों, क्रिटीकल मतदान केन्द्र के साथ ही सुरक्षा व्यवस्था से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा करते हुए आवश्यक निर्देश दिये गये। बैठक में सीआरपीएफ कमांडेंट श्री आलोक अवस्थी, कमांडेंट के.बी.के.एस. चौधरी, उप कमांडेंट ब्रजेंद्र कुमार, असिस्टेंट कमांडेंट शशी भूषण यादव, असिस्टेंट कमांडेंट मनीश सोनी, असिस्टेंट कमांडेंट निरंजन, निरीक्षक मृत्युनजय कुमार उपाध्याय, सक्ती आर आई लोमेश राय, निरीक्षक गगन वाजपेयी उपस्थित थे।

मतदाताओं को भ्रमित करने वाले विज्ञापनों पर होगी रोक

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा छत्तीसगढ़ विधानसभा आम निर्वाचन-2023 में इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के साथ ही प्रिंट मीडिया में भ्रामक प्रकृति के विज्ञापनों के प्रकाशन को रोकने के संबंध में व्यापक दिशा-निर्देश दिए गए हैं। इसके तहत मतदान दिवस और उसके एक दिन पहले प्रिंट मीडिया में प्रकाशित होने वाले राजनीतिक विज्ञापनों का पूर्व प्रमाणीकरण आवश्यक है।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा इस संबंध में जारी परिपत्र की जानकारी देते हुए मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्रीमती रीना बाबासाहेब कंगाले ने बताया कि छत्तीसगढ़ विधानसभा निर्वाचन के लिए द्वितीय चरण के मतदान के एक दिन पहले तथा मतदान दिवस यानि 16 नवम्बर और 17 नवम्बर को प्रिंट मीडिया में राजनीतिक विज्ञापनों के प्रकाशन के पूर्व जिला अथवा राज्य स्तरीय मीडिया प्रमाणन समिति से विज्ञापनों का पूर्व प्रमाणन अनिवार्य किया गया है। इसके लिए भारत निर्वाचन आयोग ने राज्य स्तरीय तथा जिला स्तरीय मीडिया प्रमाणन समिति को प्रमाणन हेतु प्राप्त आवेदन पर त्वरित निर्णय लेने के निर्देश दिए हैं। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्रीमती कंगाले ने बताया कि मतदान दिवस के पूर्व एवं मतदान तिथि को प्रिंट मीडिया में भ्रामक प्रकृति के विज्ञापनों के प्रकाशन के बाद वे दल अथवा प्रत्याशी जो इससे प्रभावित होते हैं, उनके पास किसी भी प्रकार की सफाई अथवा खंडन का अवसर नहीं होता। ऐसे में स्वतंत्र, पारदर्शी और निष्पक्ष निर्वाचन के लिए विज्ञापनों का पूर्व प्रमाणन जरूरी है।

देश विदेश

पाकिस्तान में सैन्य कार्रवाई में एक आतंकवादी ढेर

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के उत्तर पश्चिम खैबर पख्तूनख्वा (केपी) प्रांत में खुफिया आधारित सैन्य अभियान के दौरान एक आतंकवादी मारा गया है। पाकिस्तानी सेना ने एक बयान में यह जानकारी दी। पाकिस्तानी सेना की मीडिया शाखा इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) ने सोमवार देर रात कहा कि यह अभियान प्रांत के खैबर जिले के बारा इलाके में चलाया गया। आईएसपीआर के बयान में कहा गया है कि मारे गए आतंकवादी के पास से हथियार और गोला-बारूद भी बरामद किया गया।

आईडीएफ के प्रवक्ता आरडीएमएल डैनियल ह्गारी ने दी जानकारी

गजा में अस्पताल के नीचे हथियारों से भरा तहखाना मिला

गजा, 14 नवम्बर (एजेंसियां)। इजरायल रक्षा बलों (आईडीएफ) ने गाजा में रान्तिसी अस्पताल के नीचे भूमिगत बुनियादी ढांचे की खोज की है जिसका इस्तेमाल कथित तौर पर हमास हथियार रखने और बंधकों को रखने के लिए करता था।

आईडीएफ के प्रवक्ता आरडीएमएल डैनियल हगारी ने सोमवार को यह जानकारी दी।

हागारी ने एक प्रेस ब्रीफिंग में बताया, मैं अभी गाजा से वापस आया हूं, जहां मैं रान्तिसी चिल्ड्रेन हॉस्पिटल के अंदर एक ऑपरेशन में शामिल हुआ। मैं एक वीडियो कैमरा के साथ अस्पताल गया और व्यक्तिगत रूप से अधिक ठोस सबूत दर्ज किए... कि हमास अस्पतालों को युद्ध के साधन के रूप में उपयोग करता है। अस्पताल के नीचे तहखाने में हमें मिला- एक हमास कमांड-एंड-कंट्रोल सेंटर, आत्मघाती बम जैकेट, हथगोले, एके-47 असॉल्ट राइफलें, विस्फोटक उपकरण, आरपीजी और अन्य हथियार, कंप्यूटर, पैसा... और हमें ऐसे संकेत भी मिले जो संकेत देते थे कि हमास के पास था यहां बंधक हैं। फिलिस्तीनी समूह हमास ने 7 अक्टूबर को गाजा पट्टी से इजरायल के खिलाफ एक आश्चर्यजनक बड़े पैमाने पर रॉकेट हमला किया और सीमा का उल्लंघन किया, पड़ोसी इजरायली समुदायों के लोगों की हत्या और अपहरण कर लिया। इजराइल ने जवाबी हमले शुरू किए और 20 लाख से अधिक लोगों के घर गाजा पट्टी की पूर्ण नाकाबंदी का आदेश दिया, पानी, भोजन और ईंधन की आपूर्ति काट दी। इज़राइल ने 27 अक्टूबर को हमास लड़ाकों को खत्म करने और बंधकों को छुड़ाने के लिए गाजा पट्टी के अंदर बड़े पैमाने पर जमीनी घुसपैठ की।

जबालिया शरणार्थी शिविर पर इजरायली बमबारी में मारे गए 31 फिलिस्तीनी

गजा। उत्तरी गाजा पट्टी में जबालिया शरणार्थी शिविर में कई घरों को निशाना बनाकर की गई इजरायली बमबारी में 31 फिलिस्तीनी मारे गए। फिलिस्तीनी सुरक्षा और चिकित्सा सूत्रों ने सोमवार को यह जानकारी दी। गाजा में हमास द्वारा संचालित सिविल डिफेंस ने एक बयान में कहा कि इजरायली विमानों ने जबालिया शरणार्थी शिविर में एक आवासीय क्षेत्र को निशाना बनाया, जिससे 12 घर पूरी तरह नष्ट हो गए और 31 लोगों की मौत हो गई। बयान में कहा गया है कि बमबारी में कम से कम दस अन्य घायल हो गए। गाजा में सरकारी मीडिया कार्यालय ने पहले दिन में घोषणा की कि इजरायली हमलों में फिलिस्तीनी मरने वालों की संख्या बढ़कर 11,240 हो गई है, जबकि 28,000 से अधिक अन्य घायल हुए हैं।

अल अमल अस्पताल के बिजली जनरेटर ने काम करना बंद किया

गजा। गाजा पट्टी के अल अमल अस्पताल में एकमात्र बिजली जनरेटर ने ईंधन नहीं होने के कारण काम करना बंद कर दिया है, जिससे 90 मरीजों की जान खतरे में पड़ गई है। फिलिस्तीन रेड क्रिसेंट सोसाइटी (पीआरसीएस) ने मंगलवार को यह जानकारी दी। सोसायटी ने एक्स पर लिखा आज, खान यूनिस में पीआरसीएस से संबद्ध अल-अमल अस्पताल में एकमात्र बिजली जनरेटर ने भी काम करना बंद कर दिया। इससे उपचाराधीन 90 मरीजों के जीवन खतरे में है, जिनमें चिकित्सा पुनर्वास अनुभाग के 25 मरीज भी शामिल हैं, जो अब किसी भी स्थिति में मौत का सामना कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, लगभग 9,000 विस्थापितों ने पीआरसीएस परिसर और अस्पताल में शरण मांगी है। पीआरसीएस ने कहा कि अस्पताल वर्तमान में प्रसूति वार्ड में बिजली की आपूर्ति और आपातकालीन बिजली व्यवस्था के लिए एक छोटे जनरेटर का उपयोग कर रहा है, हालांकि, शेष ईंधन अगले 24 घंटों के भीतर खत्म होने की आशंका है। बयान में कहा गया है कि पीआरसीएस मुख्यालय और अल अमल अस्पताल दोनों बिजली आपूर्ति स्रोत के रूप में जनरेटर पर निर्भर थे। उल्लेखनीय है कि 07 अक्टूबर को फिलिस्तीनी समूह हमास ने गाजा पट्टी से इजरायल के खिलाफ अचानक बड़े पैमाने पर रॉकेट हमला किया और सीमा का उल्लंघन किया एवं पड़ोसी इजरायली समुदायों के लोगों की हत्या और अपहरण किया था।

सुडोकू 6376

				6	7	5		
					8		4	3
			4		5			8
1		4					9	6
		9				3		
6	3					2		5
9			5		4			
2	4		3					
		5	6	9				

: नियम :

1. कुल 81 (9×9) वर्ग हैं, जिसमें 9 (3×3) वर्गों का एक खंड (ब्लॉक) बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1 से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते हैं।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कॉलम, कतार और खंड में 1 से 9 अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

हल आज ही के अंक में

वर्ग पहेली 6376

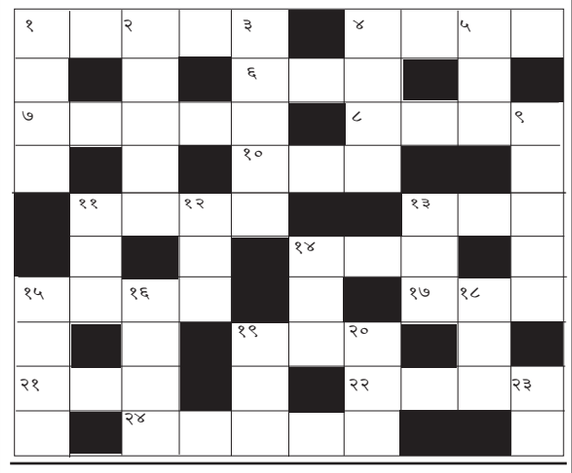

बायें से दायें:-

१. प्राचीन कालीन, प्राचीनकाल की बातों के अनुसंधान तथा अध्ययन संबंधी
४. कारखाना, लोहे-लकड़ी की चीजों से निमा4णया अन्य वस्तुओं के निर्माण की जगह
६. किसी चीज का टूटा हुआ हिस्सा
७. हिमालय की बर्फीली चोटियों पर प्राप्त बड़े-बड़े पदचिन्हों वाला कल्पित रहस्यमय प्राणी, येति
८. पैरों की धूल
१०. रवैया, रीति-रिवाज, तौर-तरीका
११. जिसे किसी कारण वश अपने स्थान या पद से हटना पड़ा हो पदच्युत
१३. एक प्रकार का श्वांस रोग
१४. सौगंध, कसम, हलफ़
१५. सिरमौर (उर्दू)
१७. लौटा या लौटाया हुआ, पुनः प्राप्त
१९. सूचित करना
२१. ध्यान बंटा कर दिया गया धोखा
२२. कलंकित
२४. नगरवासी

ऊपर से नीचे:-

१. धार्मिक कृत्य कराने वाला
२. व्यंग्य या चुटीली बातें करना (मुहावरा)
३. कड़वी एवं अप्रिय बात
४. कठोरता
५. चालाक, काइयां, चोर, गठकतरा (उर्दू)
९. जनता की भावना
११. दानव, राक्षस
१२. मोती, सीप से उत्पन्न
१३. या
१४. बलि चढ़ा कर शांति-रक्षा का प्रयास करने वाला
१५. साथ चलने वाला साथी
१६. किसी के शरीर या वातावरण की उष्णता
१८. चिड़िया, पक्षी (उर्दू)
१९. बहरा
२०. अबोध, मूर्ख (उर्दू)
२३. किसी पुल आदि का निचोड़, आनंद, मज़ा

वर्ग पहेली-6375

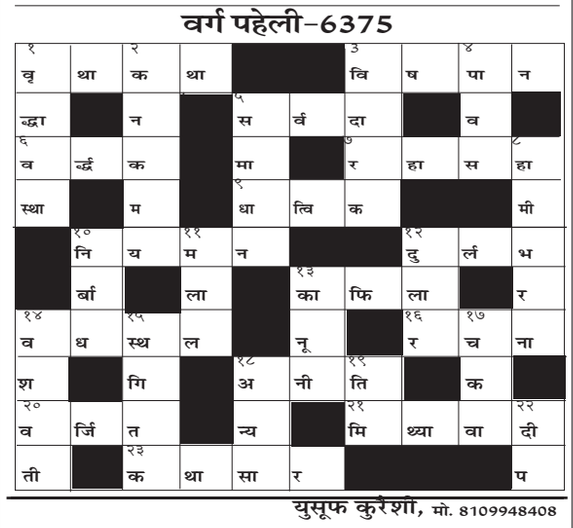

युसूफ कुरैशी, मो. 8109948408

दैनिक पंचांग

mypandit.com 24 hour astrology service

■ बेजान दारूवाला

ग्रह स्थिति : बुधवार 15 नवम्बर , 2023 कार्तिक शुक्ल पक्ष 2

राशिफल

मेष - आज आपका ध्यान आध्यात्मिकता की ओर ज्यादा रहेगा। रहस्यों से भरपूर गूढ़ विद्याओं की तरफ भी आपका झुकाव बढ़ेगा। गहन चिंतन आपको कुछ अनोखा अनुभव कराएंगे।

वृषभ - आप अपने वैवाहिक जीवन का आनंद ले सकेंगे। परिवार के साथ कोई सामाजिक प्रसंग अथवा छोटे प्रवास पर जाने से आपको अनंद का अनुभव होगा। मित्रों और सगे संबंधियों के साथ स्वादिष्ट भोजन का आनंद उठाएंगे।

मिथुन - आज के दिन आप नाम और कार्य में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। आपके घर- परिवार में आनंद और शांतिपूर्ण माहौल रहेगा। आपका शरीर और मन स्वस्थ रहेगा। आर्थिक लाभ होने की भी संभावना है।

कर्क - आपको आज चित्त को शांत रखकर दिन व्यतीत कर लेना चाहिए। शारीरिक मानसिक अस्वस्थता से भय पैदा होगा। अचानक खर्च होने की संभावना है। प्रेमियों के बीच विवाद और मतभेद हो सकता है।

सिंह - आपके मन पर नकारात्मक विचार छाए रहने से हताशा अनुभव करेंगे। मन अस्वस्थ रहेगा। घर में मेल-जोल कम रहेगा। मां का स्वास्थ्य खराब होगा। उनके साथ वैचारिक मतभेद होगा।

कन्या - आज जल्दबाजी किए बिना सोच-समझ कर ही कोई काम करें। आज ढंग से प्रयास करेंगे, तो काम में सफलता निश्चित रूप से मिलेगी। विरोधियों पर विजय प्राप्त कर सकेंगे।

तुला - आज आपको जिद छोड़कर लोगों से अच्छा व्यवहार करना चाहिए। अपनी वाणी को अंकुश में नहीं रखेंगें, तो मनमुटाव हो सकता है। मन की उलझन के कारण कोई निर्णय लेने में कठिनाई होगी।

वृश्चिक - आपको शारीरिक मानसिक आनंद की अनुभूति होगी। परिजनों और मित्रों के साथ स्वादिष्ट भोजन और यात्रा का आनंद लेंगे। मेल-जोल के अवसर भी बने रहेंगे। प्रियजनों के साथ के सम्बंध भी अधिक घनिष्ठ होंगे।

धनु - आज आपका दिन थोड़ा तकलीफ देने वाला रह सकता है। स्वास्थ्य खराब होगा। परिजनों के साथ मतभेद होगा। इस कारण कारण आपका मन उदास रह सकता है। स्वाभाविक उग्रता को अंकुश में रखें।

मकर - नौकरी, बिजनेस और समाज के सभी क्षेत्रों में आज का दिन लाभदायक साबित होगा। सगे- सम्बंधियों और मित्रों के साथ बाहर घूमने जाने की योजना बनेगी। शुभ अवसरों पर उपस्थित हो सकेंगे।

कुंभ - आज आपके सभी काम निर्विघ्न पूरे हो सकेंगे। खुशी का अनुभव होगा। नौकरी या बिजनेस के क्षेत्र में समय अच्छा है और आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

मीन - नकारात्मकता आप पर हावी न हो जाए, इसका ध्यान रखना पड़ेगा। मानसिक दुविधा के कारण आपको भय का अनुभव होगा। आपको स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं बनी रहेंगी।

नोट-उपरोक्त राशिफल बेजान दारूवाला द्वारा पूर्वलिखित है।

आसियान देशों के रक्षा मंत्रियों की बैठक में हिस्सा लेंगे राजनाथ

नई दिल्ली, 14 नवम्बर (एजेंसियां)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह आसियान देशों के रक्षा मंत्रियों की 10वीं बैठक में हिस्सा लेने के लिए 16 से 17 नवंबर तक इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता के आधिकारिक दौरे पर रहेंगे। गुरुवार को शुरू होने वाली इस महत्वपूर्ण बैठक के दौरान रक्षा मंत्री क्षेत्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर अपने विचार रखेंगे। इंडोनेशिया इस वर्ष रक्षा मंत्रियों की बैठक एडीएमएम-प्लस की अध्यक्षता कर रहा है। श्री सिंह इस बैठक से इतर विभिन्न देशों के रक्षा मंत्रियों के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। वह इस दौरान परस्पर फायदे के संबंधों को और सशक्त करने के लिए रक्षा सहयोग के मुद्दों पर भी चर्चा करेंगे। बैठक में ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओ , मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड तथा वियतनाम के रक्षा मंत्री हिस्सा ले रहे हैं।

टिम स्कॉट राष्ट्रपति पद की दौड़ से बाहर

वॉशिंगटन, 14 नवम्बर (एजेंसियां)। अमेरिकी राष्ट्रपति पद की दौड़ से दक्षिण कैरोलिना के रिपब्लिकन सीनेटर टिम स्कॉट यह स्वीकार करते हुए बाहर हो गए हैं कि प्राथमिक चुनावों में श्री डोनाल्ड ट्रम्प आगे चल रहे हैं। द गार्जियन की रिपोर्ट के अनुसार श्री स्कॉट ने रविवार रात फॉक्स न्यूज के साथ एक साक्षात्कार में घोषणा की कि वह अपनी उम्मीदवारी को निलंबित कर रहे हैं, जिससे डोनाल्ड ट्रम्प को पद से हटाने की कोशिश कर रहे अन्य दावेदारों को थोड़ा फायदा मिलेगा। उन्होंने कहा 'मुझे लगता है कि मतदाता, जो ग्रह पर सबसे उल्लेखनीय लोग हैं, वास्तव में स्पष्ट हैं कि वे मुझसे कह रहे हैं अभी नहीं टिम। सीनेट में सेवारत एकमात्र अश्वेत रिपब्लिकन श्री स्कॉट ने अमेरिका के भविष्य के आशावादी दृष्टिकोण के साथ व्हाइट हाउस के लिए अपनी दावेदारी शुरू करने के छह महीने बाद यह घोषणा की। श्री स्कॉट ने मई में अपनी उम्मीदवारी की घोषणा करते हुए कहा था हम उस देश में रहते हैं जहां एक छोटे से अपार्टमेंट में एकल माता-पिता के घर में गरीबी में पले-बढ़े बच्चे के लिए एक दिन लोगों के घर और शायद व्हाइट हाउस में भी सेवा करना बिल्कुल संभव है। यह भगवान की हरी-भरी धरती पर सबसे महान देश है। श्री स्कॉट ने गत 07 अक्टूबर को हमास के हमलों पर प्रतिक्रिया के लिए राष्ट्रपति जो बाइडेन की भी आलोचना की और उन पर अनजाने में हिंसा भड़काने का आरोप लगाया। इससे आक्रोश फैल गया और श्री बाइडेन की विदेश नीति के एजेंडे की आलोचना हुई। उन्होंने बाद में इजरायली हवाई हमलों में फिलिस्तीनियों के मारे जाने के बावजूद हमास के हमलों के जवाब में संयम के लिए इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की प्रशंसा की। श्री स्कॉट का अधिक गंभीर बयानबाजी में बदलाव के बावजूद, राष्ट्रीय प्राथमिक चुनावों में समर्थन कम रहा, जिससे उनके पास नामांकन के लिए कोई रास्ता नहीं बचा।

शी चिनफिंग अमेरिका रवाना हुए

बीजिंग। चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग 14 नवंबर की शाम को एक विशेष विमान से पेइचिंग से रवाना हुए। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के निमंत्रण पर वे चीन-अमेरिका राष्ट्रपतियों की भेंट के लिए सैन फ्रांसिस्को जा रहे हैं। इसके साथ ही वे एपेक नेताओं की 30वीं अनौपचारिक बैठक में हिस्सा लेंगे।

यूक्रेन को स्थायी समर्थन की जरुरत : स्टोल्टेनबर्ग

कीव, 14 नवम्बर (एजेंसियां)। उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) महासचिव जेन्स स्टोलटेनबर्ग ने मंगलवार को यूक्रेन को स्थायी समर्थन की जरुरत पर बल देते हुए उसके लिए सैन्य सहायता बढ़ाने का आह्वान किया। श्री स्टोल्टेनबर्ग ने ब्रूसेल्स में रक्षा मंत्रियों के साथ यूरोपीय संघ की विदेश मामलों की परिषद की बैठक से पहले कहा मुझे उम्मीद है कि बैठक में हम यूक्रेन की स्थिति पर भी चर्चा करेंगे, तीव्र लड़ाई जारी है, युद्ध के मैदान में स्थिति कठिन है और इससे यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम यूक्रेन के लिए अपना समर्थन बनाए रखें और बढ़ाएं। नाटो महासचिव ने यह भी कहा कि रूस के साथ संभावित शांति वार्ता आयोजित करने के लिए स्वीकार्य शर्तों पर यूक्रेन खुद फैसला करेगा। फरवरी 2022 में रूस द्वारा देश में अपना सैन्य अभियान शुरू करने के तुरंत बाद पश्चिमी सहयोगियों ने कीव को वित्तीय सहायता प्रदान करना और यूक्रेन में हथियार और गोला-बारूद भेजना शुरू कर दिया, जिसमें यूक्रेन के लिए वित्तीय, मानवीय और सैन्य सहायता के लिए आवंटित धन की राशि 150 अरब डॉलर से अधिक थी।

सम्मेलन में भाग नहीं लेने पर रूस ने खेद जताया

मॉस्को। रूस ने अर्मेनिया के प्रधानमंत्री निकोल पशिन्यान के सामूहिक सुरक्षा संधि संगठन (सीएसटीओ) शिखर सम्मेलन में शामिल न होने के फैसले पर खेद व्यक्त किया है।

अर्मेनिया शिखर सम्मेलन

क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने मंगलवार को यह जानकारी दी। इससे पहले दिन में, श्री पशिन्यान ने बेलारूस के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर लुकाशेंको को सूचित किया कि वह 23 नवंबर को मिन्स्क में सीएसटीओ शिखर सम्मेलन में भाग नहीं ले पाएंगे। श्री पेसकोव ने संवाददाताओ से कहा, अगर सचमुच ऐसा है तो हम खेद व्यक्त कर सकते हैं; हम समझते हैं कि प्रत्येक शासनाध्यक्ष या राष्ट्रप्रमुख की कार्यसूची में उसके अपने कार्यक्रम, अपनी परिस्थितियां हो सकती हैं।

जापानी प्रधानमंत्री आज से अमेरिका दौरे पर रहेंगे

टोक्यो, 14 नवम्बर (एजेंसियां)। जापान के प्रधान मंत्री फुमियो किशिदा एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (एपीईसी) के शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 15 से 19 नवंबर तक अमेरिका का दौरा करेंगे। जापान के मुख्य कैबिनेट सचिव हिरोकाजू मात्सुनो ने मंगलवार को यह जानकारी दी। मात्सुनो ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, जापानी प्रधान मंत्री फुमियो किशिदा एपीईसी शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए 15-19 नवंबर तक सैन फ्रांसिस्को का दौरा करेंगे।

एपीईसी शिखर सम्मेलन में वह स्वतंत्र और खुले विदेशी व्यापार को बढ़ावा देने के अलावा, आपूर्ति श्रृंखला, डिजिटल प्रौद्योगिकियों और जलवायु व्यापार और निवेश कार्रवाई को मजबूत करने पर व्यापक चर्चा करेंगे। मात्सुनो ने कहा कि किशिदा यूक्रेन की स्थिति के संबंध में रूस पर जापान की स्थिति को स्पष्ट रूप से व्यक्त करेंगे। उन्होंने कहा कि इसके अलावा, जापानी प्रधान मंत्री इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क के शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे। सचिव ने कहा कि किशिदा के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में बोलने और गूगल और सेमीकंडक्टर निर्माताओं के प्रतिनिधियों से मिलने की भी उम्मीद है।

सुडोकू 6376 का हल

4	8	3	1	6	7	5	2	9
5	6	1	9	2	8	7	4	3
7	9	2	4	3	5	1	6	8
1	2	4	7	5	3	8	9	6
8	5	9	2	1	6	3	7	4
6	3	7	8	4	9	2	1	5
9	1	8	5	7	4	6	3	2
2	4	6	3	8	1	9	5	7
3	7	5	6	9	2	4	8	1

आज का इतिहास

1830-समाज सुधारक राजा राम मोहन राय इंग्लैंड के लिए रवाना हुए।
1866-भारत की प्रथम महिला बैरिस्टर कार्नेलिया सोराबजी का जन्म हुआ।
1920-जिनेवा में लीग ऑफ नेशंस की पहली बैठक आयोजित की गई।
1932-जर्मनी में मुद्रा स्फीर्ति की दर अत्यधिक उच्चतम स्तर पर जा पहुँची।
1947-विश्व स्वास्थ्य संगठन संयुक्त राष्ट्र का विशिष्ट अभिकरण बन गया।
1949-महात्मा गांधी की हत्या के दोषी नाथूराम गोडसे और नारायण दत्तात्रेय आप्टे को फाँसी दी गई थी।
1955-पोलैंड और यूगोस्लाविया के बीच व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किये गये थे।
1961-संयुक्त राष्ट्र ने परमाणु हथियारों पर रोक लगाई।
1982-सामाजिक कार्यकर्ता विनोबा भावे का निधन हुआ।
1986-प्रसिद्ध भारतीय टेनिस खिलाड़ी सानिया मिर्ज़ा का जन्म हुआ।
1989-पाकिस्तान के कराची में वकार यूनुस और सचिन तेंदुलकर ने टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया।
1998-अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने अपना एशियाई देशों भारत एवं पाकिस्तान का दौरा रद्द किया।
2000-झारखंड भारत का 28वां राज्य बना।
2004-अमेरिकी विदेश मंत्री कोलिन पावेल ने अपने पद से इस्तीफ़ा दिया।

परेशानी यूके की नियोक्ता प्रायोजन योजना बन रही है कारण

यूके में प्रवासी श्रमिकों का हो रहा शोषण : रिपोर्ट

लंदन, 14 नवम्बर (एजेंसियां)। ज्यादातर वर्क वीजा प्रायोजकों से जुड़े होने के कारण, यूके की पोस्ट-ब्रेक्सिट पॉइंट आधारित आव्रजन प्रणाली प्रवासी श्रमिकों की नौकरी बदलने की क्षमताओं को गंभीर रूप से सीमित कर देती है, जिससे नियोक्ताओं के पास ऐसी शक्ति आ जाती है, जो अनियंत्रित हो जाती है। वर्क राइट्स सेंटर की 'यूके में प्रवासी श्रमिक शोषण के व्यवस्थित चालक' शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया है कि गृह कार्यालय की नियोक्ता प्रायोजन योजना में कई विफलताओं के कारण हजारों प्रवासी श्रमिकों को शोषण का खतरा है।

स्वास्थ्य और देखभाल वीजा और सीजनल वर्कर वीजा सहित प्रवासी श्रमिकों के साथ 39 मामलों के अध्ययन के आधार पर शोध में कहा गया है कि यूके की श्रम प्रवर्तन प्रणाली में मौजूद मुद्दों के कारण शोषण का खतरा बढ़ गया है। रिपोर्ट में कहा गया है, अस्पष्ट अधिकार वाली, कम संसाधनों वाली और स्व-विनियमन के लिए व्यवसायों पर निर्भर रहने वाली कई एजेंसियों के बीच विभाजित, श्रम प्रवर्तन प्रणाली प्रवासी श्रमिकों की पहचान करने, प्रतिक्रिया देने और उनके शोषण को रोकने के लिए अपर्याप्त है। वर्क राइट्स सेंटर के मुख्य कार्यकारी डोरा-ओलिविया विकोल ने गार्जियन को बताया, 'प्रवासी श्रमिकों के दृष्टिकोण से, प्रायोजन बंधुआ मजदूरी के समान है। यह नियोक्ताओं को प्रवासियों का शोषण करने की शक्ति देता है,

■ प्रवासी श्रमिकों के साथ 39 मामलों का किया अध्ययन

यह जानते हुए कि उनके लिए छोड़ना बहुत कठिन होगा।' उन्होंने कहा, हमने कई दुखद मामले देखे हैं जहां लोग शोषण को स्वीकार करते हैं। एक भारतीय नर्स के मामले का हवाला देते हुए, गार्जियन ने बताया कि वह अपने देश में एक एजेंट को 20,000 पाउंड का भुगतान करने के बाद अपने साथी और छोटे बच्चे के साथ ब्रिटेन में फंसी हुई है। उसने उसके लिए यूके वर्क वीजा हासिल करने और देश में सुरक्षित रोजगार खोजने का वादा किया, लेकिन प्रायोजक नियोक्ता ने उसे बताया कि उसके लिए यहां कोई काम नहीं है। अपने परिवार के साथ निर्वासित होने से बचने के लिए, नर्स को अब 60 दिनों के भीतर एक अन्य प्रायोजक नियोक्ता ढूंढना होगा। रिपोर्ट में सरकार से वीजा के नियोक्ता-प्रायोजन को समाप्त करने और प्रवासियों को नियोक्ता बदलने की आजादी देने और एक एकल प्रवर्तन निकाय स्थापित करने का आह्वान किया गया, जहां श्रम शोषण की सुरक्षित रूप से रिपोर्ट की जा सके। उन्होंने सरकार से एक स्वतंत्र प्रवासी आयुक्त स्थापित करने का भी आग्रह किया, जिसे लंबी अवधि में प्रवासी श्रमिकों के शोषण को रोकने के लिए एक प्रवासी श्रमिक कल्याण रणनीति का मसौदा तैयार करने का काम सौंपा जाए।

दुनिया को जानें

'पूर्ण स्टारशिप रॉकेट सिस्टम की परीक्षण उड़ान 17 को'

वाशिंगटन, 14 नवम्बर (एजेंसियां)। अमेरिका में पूर्ण स्टारशिप रॉकेट प्रणाली की दूसरी परीक्षण उड़ान आयोजित करने के लिए 17 नवम्बर को संघीय मंजूरी समय पर दी जा सकती है। स्पेसएक्स के संस्थापक एलन मस्क ने यह जानकारी दी है। श्री मस्क ने सोमवार देर रात कहा, अभी सूचित किया गया है कि प्रक्षेपण की मंजूरी शुक्रवार के प्रक्षेपण के समय पर मिलनी चाहिए। स्टारशिप रॉकेट प्रणाली राज्य के दक्षिणी सिरे पर दक्षिण पाद्रे द्वीप के पास स्थित स्टारबेस, टेक्सास से प्रक्षेपित होगी। पूर्ण स्टारशिप रॉकेट प्रणाली का पहला प्रक्षेपण 20 अप्रैल को हुआ, जो अब तक का सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली रॉकेट बन गया। परीक्षण उड़ान के दौरान अंतरिक्ष यान को जानबूझकर समाप्त कर दिया गया था क्योंकि कई इंजनों के विफल होने पर इसकी ऊंचाई कम होने लगी थी। अंतरिक्ष यान मेक्सिको की खाड़ी के ऊपर लगभग 39 किलोमीटर की ऊंचाई तक गया, जो कार्यक्रम के इतिहास में आज तक किसी भी स्टारशिप अंतरिक्ष यान तक पहुंचने वाला उच्चतम बिंदु है।

खेल जगत

एचएस प्रणॉय कुमामोटो मास्टर्स जापान टूर्नामेंट में कोर्ट पर करेंगे वापसी

कुमामोटो, 14 नवंबर (एजेंसियां)। भारत के स्टार शटलर एचएस प्रणॉय, चिराग शेट्टी-सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी, किदांबी श्रीकांत और लक्ष्य सेन आज से शुरु हो से कुमामोटो मास्टर्स जापान 223 बीडब्ल्यूएफ सुपर 5 टूर्नामेंट में प्रतिस्पर्धा करेंगे। एचएस प्रणॉय मंगलवार से शुरु हो रहे बैडमिंटन टूर्नामेंट में बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर पर वापसी करने के लिए तैयार हैं। बैडमिंटन रैंकिंग के शीर्ष 1 में शामिल भारत के प्रणॉय एकमात्र पुरुष एकल खिलाड़ी हैं। उन्हें पीठ की चोट के कारण डेनमार्क और फ्रेंच ओपन से बाहर होना पड़ा था।

2019 सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड से मिली हार का बदला लेने उतरेगा भारत

- भारत के पास न्यूजीलैंड के खिलाफ लीग मैच की जीत को दोहरा फाइनल में पहुंचने का सुनहरा मौका
- भारत की निगाहें लगातार दसवीं जीत के साथ फाइनल में स्थान बनाने पर
- खिताब से महज दो कदम दूर पूरी तरह चौकस है भारत

■ सत्येन्द्र पाल सिंह

नई दिल्ली, 14 नवंबर (देशबन्धु)। विजयरथ पर सवार अजेय भारत के पास आईसीसी वन डे क्रिकेट विश्व कप के सेमीफाइनल में पिछली उपविजेता न्यूजीलैंड के खिलाफ धर्मशाला में लीग मैच की जीत को मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में दोहरा कर 12 बरस के बाद फिर फाइनल में पहुंचने का सुनहरा मौका है। भारत की निगाहें अब न्यूजीलैंड से बुधवार को सेमीफाइनल भी जीत उससे पिछले 2019 के संस्करण में सेमीफाइनल की हार का हिसाब चुकता पर परफेक्ट 10 यानी यानी लगातार दसवीं जीत के साथ फाइनल में स्थान बनाने पर लगी है। बेशक नॉकआउट पर वन डे विश्व कप में भारत का न्यूजीलैंड के खिलाफ रिकॉर्ड बेहद कमजोर रहा है लेकिन अपने लगातार नौ मैच जीतने वाली भारतीय टीम जिस लय में है उससे न्यूजीलैंड से इस बार उसके विजयरथ रोकने की उम्मीद कम है। भारतीय वन डे विश्व कप खिताब जीतने से मात्र दो कदम दूर है और वह जानती है कि जरा सी ढील उसकी पूरी मेहनत पर पानी फेर हीरो से जीरो बना सकती है और वह इसीलिए इस बार पूरी तरह चौकस है। भारत की ताकत उसकी बल्लेबाजी तो मजबूत के साथ रफ्तार के सौदागर जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद शमी और मोहम्मद सिराज की प्रतिद्वंद्वी टीमों को पस्त करने वाली त्रिमूर्ति है। भारत ने मोहम्मद शमी के %पंजे' से श्रीलंका को वानखेड़े स्टेडियम में 302 रन से कड़ी शिकस्त दी थी और यह उसके कप्तान रोहित शर्मा, श्रेयस अय्यर, सूर्य कुमार यादव और मुंबई इंडियंस से खेलने वाले जसप्रीत बुमराह का यह घरेलू मैदान है और इसके मिजाज से पूरे वाकिफ है और इसका मेजबान टीम को पूरी तरह लाभ मिलेगा। जोश और होश का संगम मौजूदा संस्करण में दो शतकों और पांच अर्द्धशतक सहित रन बनाने में सबसे आगे चल रहे चेज मास्टर विराट कोहली, कप्तान रोहित शर्मा के शुरू से दे दना, दे दना के अपने नए अवतार सहित अपने मजबूत शीर्ष और मध्यक्रम के दमदार प्रदर्शन की बदौलत भारत ने अपने सभी नौ लीग मैच जीत कर ऐसा डंका बजाया कि हर प्रतिद्वंद्वी टीम उसके सामने पूरी तरह पस्त नजर आई है। विराट कोहली ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ कोलकाता में शतक जड़ वन डे अंतर्राष्ट्रीय मैचों में दुनिया में सबसे ज्यादा 49 शतक जडऩे के सचिन तेंडुलकर की रिकॉर्ड की बराबरी की थी। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या विराट कोहली अपने अपने आदर्श सचिन के घरेलू मैदान पर उनके रिकॉर्ड को तोड़ क्या शतकों के %अर्द्धशतक' के साथ भारत को जीत दिला न्यूजीलैंड से पिछले संस्करण की सेमीफाइनल की हार का हिसाब चुका उसे बुधवार को फाइनल में पहुंचाएंगे। भारत ने न्यूजीलैंड को लीग मैच में हराकर मौजूदा संस्करण में पांचवीं जीत उसकी लगातार चार जीत का सिलसिला तोड़ा। भारत और न्यूजीलैंड की टीमें आठवीं बार सेमीफाइनल में पहुंची हैं। भारत 2019 में पिछले संस्करण में नौ मैचों सात जीत, एक हार, एक मैच बेनतीजा रहने के साथ 15 अंकों के साथ शीर्ष पर रहा था लेकिन तब वह चौथी स्थान पर रहने वाली न्यूजीलैंड से सेमीफाइनल में 18 रन से हार कर बाहर हो गया था। भारत रोहित शर्मा के शतक के बावजूद पिछले संस्करण में लीग में अकेला मैच मेजबान इंग्लैंड से 31 रन से हारा था। भारत मौजूदा संस्करण में लीग में सभी मैच कुल 18 अंकों के साथ जीत शीर्ष पर रह कर और न्यूजीलैंड नौ में से पांच जीत और चार हार के साथ चौथे स्थान पर रह अंतिम चार में पहुंचा है। भारत को अपने ही घर में अपने समर्थन में स्टेडियम में मौजूद रहने वाले %अथाह नीले जनसागर' की मौजूदगी में मौजूदा संस्करण में फिर किवियो के %पर' कतर उन्हें उड़ान भरने से रोकने के लिए आत्ममुग्धता और जरा सी शिथिलता से बचना होगा। भारत के पास न्यूजीलैंड से 2019 के संस्करण के सेमीफाइनल की हार का हिसाब चुका उसकी चुनौती समाप्त कर खुद फाइनल में स्थान बना तीसरी बार विश्व कप खिताब की दावेदारी बनाए रखने का मौका है। 2019 के संस्करण में मात्र 19 गेंदों में पांच रन के भीतर रोहित शर्मा(1),केएल राहुल(1) और विराट कोहली (1) सहित पांच रन में शुरू के तीन विकेट निकालने वाले मैट हेनरी चोट के कारण बाहर है और उनका उपलब्ध न होना न्यूजीलैंड को जरूर बुरी तरह अखरेगा। भारत बुधवार को न्यूजीलैंड से सेमीफाइनल में जीता तो वह उसके खिलाफ वन डे विश्व कप के पांच पांच जीत की बराबरी कर लेगा। भारत ने न्यूजीलैंड के खिलाफ मौजूदा संस्करण में यदि सभी कैच लपके होते तो उसकी जीत कहीं और बड़ी होती। भारत को इससे सबक लेकर फील्डिंग और चुस्त करनी होगी अन्यथा हाथ में जीत रेत की तरह उसी हाथ से फिसल सकती है जिस तरह अफगानिस्तान के हाथों से ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ फिसल गई। बेशक ऑस्ट्रेलिया के ग्लेन मैक्सवेल ने जीवट दिखाया लेकिन उनके दोहरे शतक में किस्मत का भी उन्हें छूटे कैचों के चलते मिला।

घर में भारत भारी पड़ा है न्यूजीलैंड पर

वन डे क्रिकेट विश्व कप के इतिहास में दोनों टीमें अब तक 10 बार आमने सामने हुई हैं भारत इनमें मौजूदा संस्करण में चेज मास्टर विराट कोहली के बेहतरीन 95 रन और मोहम्मद शमी के पंजे से धर्मशाला में पिछले मैच सहित कुछ चार बार जीता। भारत के लिए उत्साहवर्द्धक बात यह है कि उसने न्यूजीलैंड के खिलाफ चार में से तीन जीत अपने घर में हासिल हैं इनमें से दो 1987 के रिलायंस विश्व कप में हासिल की वह उसमें एक लिटिल मास्टर सुनील गावसकर के वन डे क्रिकेट के एकमात्र शतक की बदौलत हासिल की है और विदेशी धरती पर सेंचुरियन में जहीर खान के गेंद से %चौके' और मोहम्मद कैफ और अब के टीम के चीफ कोच राहुल द्रविड़ के अर्द्धशतकों की बदौलत हासिल की थी। न्यूजीलैंड ने भारत को अब तक पांच बार शिकस्त दी और एक बार मैच बेनतीजा अधूरा रहा। भारत ने धर्मशाला में मौजूदा संस्करण में चार विकेट से जीत से न्यूजीलैंड से 2019 के संस्करण की 18 रन का हिसाब चुका दिया है। भारत इस साल के शुरू में न्यूजीलैंड से तीन वन डे मैचों सीरीज में 3-0 से सफाया कर जीती इसमें हैदराबाद में पहले मैच में शुभमन गिल ने दोहरा शतक जड़ा था जबकि तीसरे में उन्होंने कप्तान रोहित शर्मा ने शतक जड़े थे।

कमिंस ऑस्ट्रेलिया के वनडे कप्तान बने रहने को तैयार, उनकी नजरें आईपीएल में वापसी पर

कोलकाता, 14 नवंबर (एजेंसियां)। पैट कमिंस ने आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप 2023 के बाद ऑस्ट्रेलिया के एकदिवसीय कप्तान के रूप में बने रहने की इच्छा व्यक्त की है, जबकि उनका इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल 2024) की नीलामी में प्रवेश करने का भी इरादा है क्योंकि उनकी नजर अगले साल की नीलामी पर है। वह अगले साल टी20 वर्ल्ड कप में खेलना चाहते हैं।

2023 पुरुष एकदिवसीय विश्व कप की खराब शुरुआत के बाद टीम को लगातार सात जीत दिलाने से आस्ट्रेलियाई टीम अपने छठे पुरुष एकदिवसीय खिताब के लिए तैयार हो गई है। इस क्रम ने उनके लिए उस भूमिका में बने रहने के तर्क को भी मजबूत किया है, जिसे उन्होंने पिछले साल आरोन फिंच के संन्यास लेने के फैसले के बाद ग्रहण किया था। यह पूछे जाने पर कि क्या वह इस टूर्नामेंट के बाद वनडे कप्तान बने रह सकते हैं, कमिंस ने अपना कार्यकाल बढ़ाने में संभावित रुचि व्यक्त की, लेकिन स्वीकार किया कि कोच एंड्रयू मैकडोनाल्ड और चयन प्रमुख जॉर्ज बेली का फैसला अंतिम होगा।

क्रिकेट.कॉम.एयू ने कमिंस के हवाले से कहा, हम काफी खुले हैं, मैं, एंड्रयू और जॉर्ज, साल में अलग-अलग समय पर आपकी अलग-अलग प्राथमिकताएं होंगी। यह एक तरह का एक साल है जहां तीन या चार बड़े ऑफ-सीजन कार्यक्रम होते हैं। यहां के बाद कुछ समय के लिए ध्यान वापस टेस्ट क्रिकेट पर केंद्रित हो जाता है। शायद जैसा कि हमने अतीत में किया है, कभी-कभी सफेद गेंद वाले क्रिकेट को (प्राथमिकता के रूप में) स्थानांतरित करना होगा, इसलिए हम पूरी तरह से टेस्ट क्रिकेट पर ध्यान केंद्रित करते हैं। कोई अंतिम तिथि नजर नहीं आ रही है। उन्होंने कहा, मुझे ऐसा लगता है कि वास्तव में व्यस्त वर्ष में मुझे अच्छी तरह से प्रबंधित किया गया है और मेरी देखभाल की गई है, जहां आप वास्तव में कोई भी क्रिकेट नहीं छोड़ना चाहते हैं। कमिंस ने आईपीएल में खेलकर यह दिखाने की इच्छा भी व्यक्त की कि वह अगले साल के टी20 विश्व कप के लिए ऑस्ट्रेलिया की सर्वश्रेष्ठ टीम में बने रहेंगे, इस पर भी विचार किया जाएगा। कमिंस ने इस साल की शुरुआत में कोलकाता नाइट राइडर्स के साथ अपने 1.34 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर के आईपीएल अनुबंध को 2023 के कार्यक्रम का हवाला देते हुए वापस ले लिया, जिसमें भारत का टेस्ट दौरा, विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल, एशेज और अब एक वनडे विश्व कप शामिल है।

विलियमसन 219 की तुलना में अधिक जोखिम लेने को तैयार : गावस्कर

नई दिल्ली, 14 नवंबर (एजेंसियां)। भारत के पूर्व क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने केन विलियमसन की चोट से वापसी पर भरोसा जताया और कहा कि न्यूजीलैंड के कप्तान पुरुष वनडे विश्व कप 2023 जीतने के लिए 2019 की तुलना में अधिक जोखिम लेने को तैयार हैं।

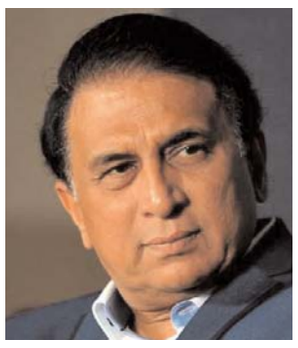

आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप 2023 के शुरू होने से पहले, विलियमसन ने घुटने की गंभीर चोट के कारण लगभग सात महीने किनारे पर बिताए। उन्होंने 2023 विश्व कप लीग चरण मैच में चेन्नई में बांग्लादेश के खिलाफ न्यूजीलैंड की आठ विकेट की व्यापक जीत में वापसी करते हुए नाबाद 78 रन बनाए।

हालाँकि, बांग्लादेश पर जीत में अपना अंगूठा टूटने के कारण वह चार मैचों में नहीं खेल पाए और आखिरी दो लीग मैचों में एक्शन में लौट आए। स्टार स्पोर्ट्स से बात करते हुए, गावस्कर ने बताया कि केन विलियमसन चोट से कैसे वापस आए हैं और वह बुधवार को वानखेड़े स्टेडियम में 2023 वनडे विश्व कप सेमीफाइनल में भारत के खिलाफ खेलने की योजना कैसे बनाएंगे।

आईसीसी टूर्नामेंटों में बॉल-बॉल मैचों में न्यूजीलैंड का भारत के खिलाफ काफी मजबूत रिकॉर्ड है। भारत और न्यूजीलैंड के बीच 14 बार मुकाबला हुआ है, जिनमें से ब्लैक कैप्स ने नौ में जीत हासिल की है, जबकि भारत ने चार में जीत हासिल की है, जबकि एक बार कोई नतीजा नहीं निकला। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह एक बड़े ब्रेक के बाद आया है और उसने रन बनाए हैं। इसलिए, मुझे नहीं लगता कि इससे कोई खास फर्क पड़ने वाला है। वह टर्न को कम करने के लिए अपने पैरों का बहुत अच्छी तरह से उपयोग करता है यदि आवश्यकता होती है; तो वह क्रीज का भी उपयोग करता है। इसलिए, वह एक बहुत अच्छा खिलाड़ी है। गावस्कर ने विलियमसन के कुशल फुटवर्क और रणनीतिक दृष्टिकोण पर भी प्रकाश डाला, जिसमें उन्होंने कुलदीप यादव का चतुराई से सामना करने सहित चुनौतियों से निपटने की उनकी क्षमता की भविष्यवाणी की।

मुझे नहीं लगता कि वह कुलदीप को खेलने के बारे में चिंतित होंगे; उन्हें पता होगा कि उनसे कैसे निपटना है। यदि आवश्यक हो, तो आप उन्हें बाउंड्रीज के लिए नहीं मारना चाहते हैं; यदि आवश्यक हो तो बस छह सिंगल्स के लिए काम करें। फिर, छह रन प्रति ओवर किसी भी मानक से एक अच्छा स्कोरिंग रेट है, इसलिए वह ऐसा करने की कोशिश करेगा। जब बाउंड्री बॉल आती है, तो वह बाउंड्री बॉल को हिट करेगा, इसलिए हमने अधिक जोखिम लेने की उसकी इच्छा देखी है। हमने शायद 2019 में केन विलियमसन का वह पक्ष नहीं देखा है, लेकिन यहां, हमने उन्हें हवाई मार्ग अपनाते हुए देखा है। वह दूसरे दिन 100 के स्कोर पर आउट हो गए; वह 95 पर आउट हो गए, लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि वह उन्होंने हवाई मार्ग अपनाया था और वह संभवत: कुलदीप यादव के खिलाफ भी ऐसा करने की कोशिश करेंगे।

भारत की बल्लेबाजी व न्यूजीलैंड की गेंदबाजी देखने लायक लड़ाई होगी : इलियट

मुंबई, 14 नवंबर (एजेंसियां) ग्रांट इलियट एक-दो बातें जानते हैं कि सेमीफाइनल की दबाव की स्थिति में आगे बढ़ना कैसा लगता है। न्यूजीलैंड के पूर्व ऑलराउंडर को ऑकलैंड के ईडन पार्क में डेल स्टेन की गेंद पर लगाए गए छक्के के लिए सबसे ज्यादा याद किया जाता है, जिससे ब्लैककैप्स को एक रोमांचक सेमीफाइनल में जीत मिली और उसका 2015 विश्व कप फाइनल में प्रवेश हुआ।

बुधवार को वानखेड़े स्टेडियम में 2023 विश्व कप सेमीफाइनल में मेजबान भारत के खिलाफ खेलने के लिए तैयार न्यूजीलैंड से पहले, इलियट का मानना है कि मेजबान टीम की बल्लेबाजी लाइन-अप और न्यूज़ीलैंड के गेंदबाजी आक्रमण के बीच मुकाबला देखने लायक होगा। इलियट ने आईएएनएस के साथ एक विशेष साक्षात्कार में कहा, मुझे लगता है कि यह मैच भारत की बल्लेबाजी बनाम न्यूजीलैंड की गेंदबाजी के बारे में है। क्या न्यूजीलैंड के गेंदबाज सही संयोजन बनाने और शुरुआती विकेट लेकर भारत को दबाव में लाने का कोई तरीका खोज सकते हैं?

भारतीय बल्लेबाज बल्ले से शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं, पहले दस ओवरों में कप्तान रोहित शर्मा की तेज शुरुआत से लेकर, इसके बाद शुभमन गिल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर और केएल राहुल ने जब भी मौका मिला, बड़े रन बनाए हैं।

दूसरी ओर, कई चोटों और फॉर्म की चिंताओं के बावजूद, न्यूजीलैंड के गेंदबाज हमेशा उस समय अच्छा प्रदर्शन करने का दम रखते हैं जब यह सबसे ज्यादा मायने रखता है। न्यूजीलैंड के लिए यह एक दिलचस्प टूर्नामेंट रहा है, जिसने अपने पहले चार मैच जीते, लेकिन अगले चार मैच हार गए और बेंगलुरु में श्रीलंका पर पांच विकेट की जीत के साथ अपनी योग्यता पक्की कर ली। इलियट ने कहा, न्यूजीलैंड ने कुछ अद्भुत क्रिकेट खेला है। दक्षिण अफ्रीकी और पाकिस्तान मुकाबलों को हटा दें तो, वे जो मैच हारे हैं वे करीबी मुकाबले रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 388 रन के लक्ष्य का लगभग पीछा करना और भारत के 6 विकेट गिरा देना और 48वें ओवर में हारना आशाजनक परिणाम रहे हैं।

श्रीलंका के खिलाफ, लॉकी फर्ग्यूसन ट्रेंट बोल्ट और डेवोन कॉन्वे ने अपने सर्वश्रेष्ठ स्वरूप में वापस आने के संकेत दिए। लेकिन इलियट को लगता है कि लीग मैचों में दिखाए गए फॉर्म का बुधवार के बहुप्रतीक्षित मुकाबले पर बहुत कम प्रभाव पड़ेगा।

मुझे नहीं लगता कि यह नॉकआउट मैचों में मायने रखता है। हालाँकि यह वरिष्ठ खिलाड़ियों पर निर्भर है कि वे आगे बढ़कर नेतृत्व करें और वास्तव में यही हुआ है। न्यूजीलैंड अपनी बल्लेबाजी से काफी आत्मविश्वास हासिल कर सकता है। बहुत सारे मैच विजेता हैं और सभी खिलाड़ी अच्छे फॉर्म में दिख रहे हैं। मैच में ऐसे क्षण होंगे, 50/50 मौके जो छूट जाएंगे या छीन लिए जाएंगे। नॉकआउट क्रिकेट दबाव में प्रतिभा और शांति का समय है। जो टीम दबाव झेलेगी और खुद को अभिव्यक्त करेगी वह शीर्ष पर आएगी। विश्व कप के हालिया इतिहास में, न्यूजीलैंड ने लगातार नॉकआउट में जगह बनाई है और यहां तक कि खिताबी मुकाबले में भी प्रवेश किया है। जब भी बड़ा मंच आता है, वे हमेशा अपना वजन बढ़ाते हैं और प्रतिष्ठित ट्रॉफी जीतने के दावेदार के रूप में उभरते हैं, हालांकि वनडे विश्व कप अभी उनके हाथ में आना बाकी है। ब्लैककैप के नॉकआउट में मजबूत होने के पीछे के रहस्य पर इलियट कहते हैं, मैं वास्तव में विश्वास करता हूं कि न्यूजीलैंड एक इकाई है। हर कोई अपने अहंकार को दरवाजे पर छोड़ देता है और व्यक्तिगत गौरव के लिए नहीं बल्कि टीम के लिए खेलता है।

यह टीम लोकाचार और अपेक्षा ही है जो न्यूजीलैंड को उच्च प्रदर्शन करने और बड़े मैचों में सामना करने में मदद करती है। न्यूजीलैंड के लिए, रचिन रवींद्र प्रतियोगिता में ब्रेकआउट सितारों में से एक रहे हैं। बाएं हाथ के शीर्ष क्रम के बल्लेबाज के रूप में, उन्होंने नौ मैचों में 70.62 के औसत और 108.44 के स्ट्राइक-रेट से 565 रन बनाए हैं, जिसमें तीन शतक और दो अर्द्धशतक शामिल हैं। उन्होंने अपनी बाएं हाथ की स्पिन गेंदबाजी से पांच विकेट भी लिए हैं। इलियट ने स्वीकार किया कि इस विश्व कप के लिए न्यूजीलैंड की शुरुआती एकादश में रवींद्र के होने की कोई उम्मीद नहीं थी और उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन को देखते हुए, उन्होंने भारत के खिलाफ सेमीफाइनल में उनके प्लेयर ऑफ द मैच बनने की भविष्यवाणी की है।

आईसीसी विश्वकप 2023 अंक तालिका

टीम	मैच	जीत	हार	टाई	पाइंट
भारत	9	9	`	`	18
दक्षिण अफ्रीका	9	7	2	`	14
ऑस्ट्रेलिया	9	7	2	`	14
न्यूजीलैंड	9	5	4	`	1`
पाकिस्तान	9	4	5	`	8
अफगानिस्तान	9	4	5	`	8
इंग्लैंड	9	3	6	`	6
बांग्लादेश	9	2	7	`	4
श्रीलंका	9	2	7	`	4
नीदरलैंड	9	2	7	`	4

सार संक्षेप

चिराग-सात्विक पहले दौर में हारे

कुमामोटो (जापान)। एशियाई खेलों के चैंपियन चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी को मंगलवार को कुमामोटो मास्टर्स जापान 223 पुरुष युगल बैडमिंटन स्पर्धा के पहले दौर में हार का सामना करना पड़ा। सुपर 5 बैडमिंटन टूर्नामेंट के 32वें राउंड में दुनिया की पांचवें नंबर की भारतीय जोड़ी चीनी ताइपे की दुनिया की 21वें नंबर की जोड़ी लू चिंग याओ और यांग पो हान से 63 मिनटमें21-16, 18-21, 16-21 से हार गई। भारतीय जोड़ी ने धीमी शुरुआत की और शुरुआती आदान-प्रदान के बाद`-3 से पीछे चल रही थी। उन्होंने इसे 3-3 कर दिया और अंतराल तक चार अंकों से आगे रहे। लू चिंग याओ और यांग पो हान ने घाटे को एक अंक से घटाकर 17-16 कर दिया लेकिन भारतीयों ने लगातार चार अंकों के साथ पहला गेम अपने नाम कर लिया। दूसरा गेम कांटे का मुकाबला साबित हुआ। हालाँकि, ताइपे की जोड़ी ने 9-6 पर तीन अंकों की बढ़त बना ली और चिराग सात्विक के फाइटबैक से बचकर गेम अपने नाम कर लिया, जिससे निर्णायक गेम खेलना पड़ा। निर्णायक मुकाबले में दोनों जोड़ियों ने लंबी रैलियां खेलीं। स्कोर 1-1 से बराबर था लेकिन ताइपे की जोड़ी ने भारतीयों पर कुछ बॉडी स्मैश लगाए, जिन्होंने कुछ अप्रत्याशित गलतियां कीं जिससे ताइपे की जोड़ी ने आसानी से मैच अपने नाम कर लिया।

भारत दौरे के लिए ऑस्ट्रेलिया की टीम में लॉरेन चीटल की वापसी

मेलबर्न। बाएं हाथ की तेज गेंदबाज लॉरेन चीटल को चार साल से अधिक समय में पहली बार अंतरराष्ट्रीय टीम में शामिल किया गया है। ऑस्ट्रेलिया ने मंगलवार को भारत के बहु-प्रारूप दौरे के लिए 16 खिलाड़ियों वाली महिला टीम की घोषणा की। ऑस्ट्रेलिया क्रिसमस और नए साल की अवधि के दौरान मुंबई में दो स्थानों पर बहु-प्रारूप श्रृंखला में भारत के खिलाफ एक टेस्ट, तीन एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय और तीन टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैच खेलेगा। पिछले महीने वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज से चूकने के बाद हीथर ग्राहम को भी 16-खिलाड़ियों की टूरिंग पार्टी में वापस बुला लिया गया है। पिछले महीने वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मैचों में नहीं चुने जाने के बावजूद ग्रेस हैरिस ने टी20 टीम में अपनी जगह बरकरार रखी है. 216 में 17 साल की उम्र में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने वाली चीटल मार्च 219 के बाद पहली बार ऑस्ट्रेलियाई टीम में लौटी हैं। कई चोटों से ग्रस्त सीज़न के बाद, चीटल ने इस सीज़न में दस महिला बिग बैश लीग मैचों के माध्यम से 19 विकेट के साथ सिडनी सिक्सर्स गेंदबाजी इकाई का नेतृत्व किया है।

उत्तम जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप में भारत के कप्तान, हंदल उपकप्तान

नई दिल्ली, 14 नवंबर (देशबन्धु)। तेज तर्रार अनुभवी स्ट्राइकर उत्तम सिंह क्वालालंपुर(मलयेशिया) में 5 से 16 दिसंबर तक होने वाले एफआईएच जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप में भारत की 18 सदस्यीय टीम के कप्तान होंगे जबकि ऑलराउंडर अरिजित सिंह हंदल टीम के उपकप्तान होंगे। हॉकी इंडिया द्वारा घोषित 18 सदस्यीय जूनियर भारतीय टीम में कप्तान स्ट्राइकर उत्तम सिंह, उपकप्तान अरिजित सिंह हंदल, सुदीप चिरिमाको व बॉबी सिंह धामी, मिडफील्डर विष्णुकांत सिंह, फुलबैक सुनील जोजो और शारदानंद तिवारी सहित सात खिलाड़ी लगातार दूसरी बार जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप में भारत की नुमाइंदगी करेंगे। भारत 2021 में भुवनेश्वर में जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप में फ्रांस से हराकर चौथे स्थान पर रहा था,

भारत की जूनियर टीम इस बार जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप में पूल सी में कनाडा, दक्षिण कोरिया और स्पेन के साथ है। भारत की जूनियर टीम अपने अभियान का आगाज 5 दिसंबर को दक्षिण कोरिया के खिलाफ मैच से करेगी और 7 दिसंबर को स्पेन तथा 9 दिसंबर को कनाडा से भिड़ेगी।

- उत्तम व हंदल सहित पिछले विश्व कप में खेलने वाले 7 खिलाड़ी टीम में

भारत की जूनियर विश्व कप के लिए टीम

गोलरक्षक : मोहित एच.एस, रणविजय सिंह।

रक्षापंक्ति : शारदानंद तिवारी, अमनदीप लाकरा, रोहित , सुनील जोजो, आमिर अली।

मध्यपंक्ति : विष्णुकांत सिंह, पुवन्ना सीबी, राजिंदर सिंह, अमनदीप, आदित्य सिंह।

अग्रिम पंक्ति : उत्तम सिंह(कप्तान), ,आदित्य लालगे, अरिजित सिंह हंदल(उपकप्तान), सौरभ आनंद कुशवाहा, सुदीप चिरिमाको, बॉबी सिंह धामी।

वैकल्पिक खिलाड़ी : सुखविंदर व सुनीत लाकरा।

वैश्विक मंच पर कौशल दिखाने का मौका : सीआर कुमार

कोच सीआर कुमार ने जूनियर हॉकी विश्व कप के लिए चुनी गई भारतीय टीम की बाबत कहा, %मौजूदा एशियन चैंपियन के रूप में हमारे पास अब जूनियर हॉकी विश्व कप में वैश्विक मंच पर अपना कौशल दिखाने का मौका है। इसे लेकर हमारी जूनियर टीम रोमांचित है। हमारा जूनियर पुरुष हॉकी टीम का पिछले जूनियर पुरुष हॉकी टूर्नामे2ट में रिकॉर्ड सकारात्मक रहा है और इनमें मिले सकारात्मक नतीजों से हमारे खिलाडिय़ों में अपनी उच्च स्तर पर अपनी क्षमताओं में आत्मविश्वास बढ़ा है। इस बार हमारी टीम खासी मजबूत है और इससे जूनियर विश्व कप को लेकर हमारी सोच खासी बदली है। साथ ही हम 2016 में लखनउ में भारतीय टीम से जूनियर विश्व कप जीतने से प्रेरणा लेकर उम्मीदों पर खरा उतरने को बेताब है।

इयान हीली ने खराब फॉर्म से जूझ रहे मिच स्टार्क की आलोचना की

नई दिल्ली, 14 नवंबर (एजेंसियां)। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर इयान हीली ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया के आगामी सेमीफाइनल से पहले आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप 2023 में खराब प्रदर्शन के लिए मिशेल स्टार्क की कड़ी आलोचना की है। विश्व स्तर पर शीर्ष सफेद गेंद गेंदबाजों में से एक माने जाने के बावजूद, स्टार्क ने भारत में आयोजित टूर्नामेंट के मौजूदा संस्करण में काफी खराब प्रदर्शन किया है। 8 मैचों में 10 विकेट लेने वाले स्टार्क ने शुरुआती पावरप्ले ओवरों में संघर्ष किया है और 34.75 की औसत से सिर्फ चार विकेट लिए हैं। इसने हीली को यह सवाल करने के लिए प्रेरित किया है कि क्या स्टार्क अभी भी 2015 और 2019 विश्व कप संस्करणों के दौरान स्ट्राइक गेंदबाज के रूप में एक शक्तिशाली ताकत हैं। हीली ने एसईएनक्यू ब्रेकफास्ट पर कहा, अगर हमने पावरप्ले में दक्षिण अफ्रीका के एक या दो विकेट नहीं गिराए, तो लक्ष्य का पीछा करना बड़ा लक्ष्य होगा। क्या स्टार्क अभी भी एक शक्तिशाली ताकत है?। वह इस टूर्नामेंट में बिल्कुल भी प्रभावशाली नहीं रहा है। आठ मैचों में 10 विकेट लेना बुरा नहीं है, लेकिन वह ये विकेट कहां ले रहा है? वह तब तक बिल्कुल भी प्रभावशाली नहीं होगा जब तक कि वह इसे सही तरीके से नहीं कर लेता है और स्टंप्स पर अपने से कहीं बेहतर प्रदर्शन नहीं कर लेता है। स्टार्क बांग्लादेश के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया के अंतिम लीग चरण मैच से अनुपस्थित थे। उन्होंने स्पष्ट किया था कि उनकी अनुपस्थिति आराम के कारण नहीं है बल्कि उन्हें टीम से बाहर किया गया है। हीली का मानना था कि स्टार्क को यह सुनिश्चित करने के लिए आराम दिया गया था कि वह प्रोटियाज़ के खिलाफ आगामी मुकाबले के लिए सर्वोत्तम स्थिति में रहें।

[अर्थ जगत]

पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बदलाव नहीं

नई दिल्ली, 14 नवंबर (एजेंसियां)। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी लौटने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम में आज कोई बदलाव नहीं हुआ, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर पर रहा।

सर्वाधिक बढने वाले शेयर

महिंद्रा एंड महिंद्रा	4.09 प्रतिशत
पावरग्रिड	1.50 प्रतिशत
इंडसइंड बैंक	1.31 प्रतिशत
टाटा मोटर्स	1.06 प्रतिशत
एलटी	1.00 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

हिंदुस्तान यूनिलीवर	1.56 प्रतिशत
टेक महिंद्रा	1.33 प्रतिशत
इंफोसिस	1.22 प्रतिशत
रिलायंस	1.11 प्रतिशत
बजाज फाइनेंस	1.00 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	47,310
बिटुर	47,320
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	31,400
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	70,096
वायदा	70,183
चांदी सिक्का लिवाली	870
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	67.77	78.57
पौड स्टर्लिंग	90.94	105.45
यूरो	76.54	88.78
चीन युआन	08.24	13.38

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दड़ा	2500-2600
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

चावल

चीनी एस	3640-3740
चीनी एम	3800-3900
मिल डिलीवरी	3520-3620
गुड़	4300-4400

दाल-दलहन

चना	6450-6550
दाल चना	7450-7550
मसूर काली	7800-7900
उड़द दाल	10600-10700
मूंग दाल	9900-10000
अरहर दाल	10400-10500

थोक मुद्रास्फीति अक्टूबर में शून्य से 0.52 प्रतिशत नीचे

नई दिल्ली, 14 नवंबर (एजेंसियां)। देश में थोक मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति इस वर्ष अक्टूबर में शून्य से 0.52 प्रतिशत नीचे रही है। सितंबर में यह शून्य से 0.26 प्रतिशत नीचे थी।

पिछले वर्ष अक्टूबर में थोक मुद्रास्फीति 8.67 प्रतिशत थी। थोक मुद्रास्फीति सात महीने से शून्य से नीचे है पर नवंबर में इसके फिर शून्य से हल्का ऊपर आने की संभावना है।

वाणिज्य एवं उद्योग मंगलवार की मंगलवार को जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया, "अक्टूबर 2023 में मुद्रास्फीति की शून्य से 0.52 प्रतिशत नीचे रही। पिछले वर्ष के इसी महीने की तुलना में रसायनों और रासायनिक उत्पादों, बिजली, कपड़ा, बुनियादी धातुओं, खाद्य उत्पादों, कागज और कागज उत्पादों आदि की कीमतों में गिरावट इसकी मुख्य वजह रही।" अक्टूबर में खाद्य वस्तुओं के वर्ग में थोक मुद्रास्फीति घटकर 2.53 प्रतिशत पर आ गई।

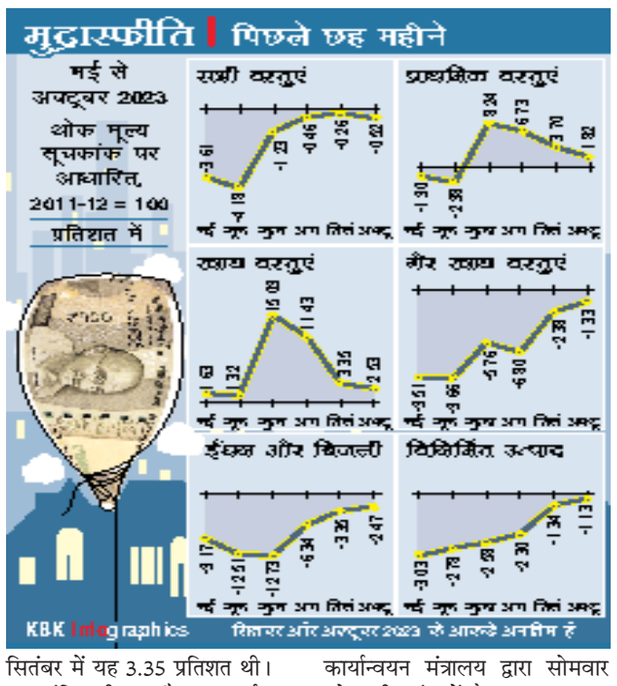

सितंबर में यह 3.35 प्रतिशत थी।

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा सोमवार को जारी आंकड़ों के अनुसार खुदरा मुद्रास्फीति इस बार अक्टूबर में घटकर 4.87 प्रतिशत पर आ गयी, जबकि इससे पिछले महीने (सितंबर,23) में यह 5.02 प्रतिशत थी। ताजा आंकड़ों के अनुसार ईंधन और बिजली वर्ग की मुद्रास्फीति अक्टूबर में शून्य से 2.47 प्रतिशत नीचे रही, जो सितंबर में शून्य से 3.35 प्रतिशत नीचे थी। विनिर्मित उत्पादों की मुद्रास्फीति सितंबर में शून्य से 1.34 प्रतिशत नीचे की तुलना में अक्टूबर में शून्य से 1.13 प्रतिशत नीचे रही। रेटिंग एजेंसी इकरा की अर्थशास्त्री अदिति नायर ने कहा कि वैश्विक बाजार में तेल और जिंसों की कीमतों में नरमी दिख रही है लेकिन देश के अंदर खाद्य कीमतों का ऊचे दबाव और तुलनात्मक आधार के प्रभाव के चलते नवंबर 2023 की थोक मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति शून्य से 0.1 प्रतिशत ऊपर रह सकती है जो पिछले साल नवंबर में 6.1 प्रतिशत थी।

रेलवे ने माल ढुलाई में रचा कीर्तिमान, कमाए एक लाख करोड़

- ■ सर्वाधिक आय कोयला परिवहन से हुई है जिसमें 50,937 करोड़ रूपये का राजस्व प्राप्त हुआ
- ■ अनारक्षित यात्री किराये में 11 हजार 326 करोड़ रूपये का राजस्व

नई दिल्ली, 14 नवंबर (देशबन्धु) रेलवे ने माल परिवहन में आय का कीर्तिमान रचते हुए चालू वित्त वर्ष में अब तक एक लाख करोड़ रूपये का राजस्व अर्जित किया है जो पिछले वर्ष प्राप्त आमदनी 95 हजार करोड़ रूपये से चार प्रतिशत अधिक है।

रेलवे सूत्रों के मुताबिक इस वर्ष रेलों के जरिए 940 मिलीयन टन माल लदान किया गया है जबकि पिछले वर्ष 907 मिलीयन टन माल लदान हुआ था। सूत्रों के अनुसार रेलवे का कुल राजस्व (मालभाड़ा एवं यात्री किराया मिला कर) डेढ़ लाख करोड़ रुपए को पार कर गया है। अनारक्षित यात्री किराये में 11 हजार 326 करोड़ रूपये का राजस्व हासिल हुआ है।

उन्होंने बताया कि सर्वाधिक आय कोयला परिवहन से हुई है जिसमें 50,937 करोड़ रूपये का राजस्व प्राप्त हुआ है। अन्य माल परिवहन में लौह अयस्क से 10,951 , सीमेंट और धातु से 8415 , लोहा और स्टील से 6263 , रासायनिक खाद से 4570 , पेट्रोलियम पदार्थ और गैस से 4120 , कंटेनर से 3716 तथा अन्य वस्तुओं से 5477 करोड़ रूपयों की आय हुई है।

डाबर ने लॉन्च किया 'ओडोनिल एक्जोटिक रुम स्प्रे'

नई दिल्ली, 14 नवंबर (एजेंसियां)। भारत में कन्ज्यूमर प्रोडक्ट बनाने वाली कंपनी डाबर इंडिया लिमिटेड ने 'ओडोनिल एक्ज़ोटिक रूम स्प्रे' के लॉन्च के साथ अपने ओडोनिल पोर्टफोलियो का विस्तार किया है। कंपनी ने आज यहां कहा कि यह अनूठा वॉटर-बेस्ड एरोसोल-स्प्रे लॉन्ग-लास्टिंग फ्रैगरेन्स देता है। कंपनी के होम केयर के विपणन प्रमुख सनथ रविन्द्रन पुलिक्ल ने कहा हमने ओडोनिल रूम स्प्रे के लॉन्च के साथ अपने ओडोनिल पोर्टफोलियो का विस्तार किया है। ये स्प्रे एल्कॉहल से रहित हैं और भारत के बाहर उगने वाले प्राकृतिक फूलों जैसे लैटिन अमेरिका के सेंसुअल डेहलिया और जापान के सकूरा- की सुगंध का बेहतरीन अहसास देते हैं। 'ओडोनिल एक्ज़ोटिक रूम स्प्रे' रेंज के साथ हम नए स्प्रे फोर्मेट में भारतीय उपभोक्ताओं के लिए फ्रैगरेन्स का नया अनुभव लेकर आए हैं।

उन्होंने कहा कि इसे ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म एमज़ॉन इंडिया पर लॉन्च किया गया है। यह प्रोडक्ट जल्द ही अन्य सेल्स चैनलों पर भी उपलब्ध होगा। नया ओडोनिल रूम स्प्रे आकर्षक स्प्रे-बोतल शेप में आता है। यह दुर्गंध को दूर कर घण्टों तक कमरे को महकाए रखता है। यह प्रोडक्ट प्रीमियम फ्रैगरेन्स पसंद करने वाले उपभोक्ताओं को खूब लुभाएगा, इसे अपनाकर वे अपने घर को हमेशा तरोताज़ा रख सकेंगे।

विदेशी कारोबार चीन से निकाल रहे पैसा : रिपोर्ट

सिंगापुर, 14 नवंबर (एजेंसियां)। विदेशी कारोबार तेजी से चीन से पैसा निकाल रहे हैं और वहां निवेश कम कर रहे हैं। एक मीडिया रिपोर्ट में मंगलवार को आधिकारिक आंकड़ों का हवाला देते हुए यह कहा गया है। बीबीसी की रिपोर्ट में कहा गया है कि देश की धीमी होती अर्थव्यवस्था, कम ब्याज दरें और अमेरिका के साथ भू-राजनीतिक खींचतान ने इसकी आर्थिक क्षमता पर संदेह पैदा कर दिया है।

इस सप्ताह सभी की नजर चीन और अमेरिका के राष्ट्रपति के बीच होने वाली अहम बैठक पर होगी।

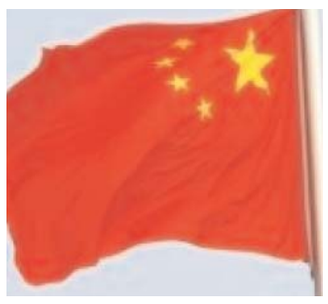

इकोनॉमिस्ट इंटेलिजेंस यूनिट (ईआईयू) के निक मैरो ने कहा, भूराजनीतिक जोखिम, घरेलू नीति में अनिश्चितता और धीमी वृद्धि के बारे में चिंताएं कंपनियों को वैकल्पिक बाजारों के बारे में सोचने के लिए मजबूर कर रही हैं। बीबीसी की रिपोर्ट के अनुसार,

चीन ने सितंबर के अंत तक तीन महीनों में विदेशी निवेश में 11.8 बिलियन डॉलर की कमी दर्ज की। 1998 में रिकॉर्ड शुरू होने के बाद ऐसा पहली बार हुआ है। इससे पता चलता है कि विदेशी कंपनियां अपना मुनाफा चीन में दोबारा निवेश नहीं कर रही हैं, बल्कि वे पैसा देश से बाहर ले जा रही हैं।

स्विस औद्योगिक मशीनरी निर्माता ऑरलिकॉन के एक प्रवक्ता का कहना है, चीन इस समय धीमी वृद्धि का सामना कर रहा है और इसमें कुछ सुधार करने की जरूरत है।

प्रवक्ता कहते हैं, 2022 में, हम पहली कंपनी थे जिसने कहा था कि चीन में आर्थिक मंदी का असर हमारे कारोबार पर पड़ेगा। परिणामस्वरूप, हमने इन प्रभावों को कम करने के लिए उपायों को लागू करना शुरू कर दिया। कंपनी के लिए चीन एक प्रमुख बाजार बना हुआ है। देश भर में इसके करीब 2,000 कर्मचारी हैं, जो इसकी बिक्री का एक तिहाई से अधिक हिस्सा है।

बीबीसी की रिपोर्ट के अनुसार, ऑरलिकॉन ने कहा कि अगले कुछ वर्षों में चीनी अर्थव्यवस्था में अभी भी लगभग 5 प्रतिशत की वृद्धि होने की उम्मीद है, जो दुनिया में सबसे ज्यादा है।

कोविड-19 महामारी की शुरुआत के बाद से, ऑरलिकॉन जैसे व्यवसायों ने दुनिया के सबसे बड़े बाजार में परिचालन की चुनौतियों का सामना किया है।

अमेजन ने अपने गेमिंग डिवीजन में 180 से ज्यादा कर्मचारियों की छंटनी की

सैन फ्रांसिस्को, 14 नवंबर (एजेंसियां)। अमेजन अपने गेम डिवीजन में 180 से ज्यादा कर्मचारियों की छंटनी कर रहा है। कंपनी ने अपने क्राउन चैनल को बंद कर दिया है जो ट्विच पर स्ट्रीम होता है। कंपनी ने गेम ग्रोथ को बंद कर दिया है, जो गेम निर्माताओं को अपने प्रोडक्ट्स के विपणन में मदद करता है, और प्राइम गेमिंग से पेश किए गए फ्री गेम के साथ अपने काम पर फिर से फोकस करना शुरू किया है।

अमेजन गेम्स के उपाध्यक्ष क्रिस्टोफ हार्टमन द्वारा कर्मचारियों को भेजे गए और द वर्ज द्वारा देखे गए एक ज्ञापन के अनुसार, छंटनी के बीच अमेजन अपने गेमिंग कंटेंट चैनल से छुटकारा पा रहा है।

हार्टमन ने मेमो में लिखा, हमारे बिजनेस के आगे के मूल्यांकन के बाद, यह स्पष्ट हो गया कि हमें अभी और भविष्य में प्लेयर्स को बेहतरीन खेल प्रदान करने के लिए अपने रिसोर्सेज और प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। इस साल अप्रैल में, अमेजन ने अपने गेमिंग डिवीजनों में 100 से ज्यादा कर्मचारियों को निकाल दिया था, जिसमें प्राइम

गेमिंग, गेम ग्रोथ और अमेजन गेम्स शामिल हैं।

हार्टमन के अनुसार, अप्रैल में प्रारंभिक पुनर्गठन के बाद, यह स्पष्ट हो गया कि हमें अपने रिसोर्सेज को उन क्षेत्रों पर और भी अधिक फोकस करने की आवश्यकता है जो हमारे व्यवसाय को आगे बढ़ाने की क्षमता के साथ बढ़ रहे हैं।

अमेजन के कार्यकारी ने बताया, हमारे व्यावसायिक दृष्टिकोण में इन बदलावों के साथ हमारे संसाधनों में भी बदलाव आया है, जिसके चलते 180 से अधिक भूमिकाएं समाप्त हो गई हैं।

कंपनी यह सुनिश्चित करने के लिए काम कर रही है कि सभी प्रभावित कर्मचारियों को व्यक्तिगत स्तर पर आवश्यक सहायता दी जाए, जिसमें एक मुश्त रकम, विस्थापन सेवाएं, स्वास्थ्य बीमा लाभ शामिल है।

हार्टमन ने लिखा, मैं मानता हूं कि इस साल यह दूसरी बार है जब आप टीम में बदलाव के बारे में सुन रहे हैं और सहकर्मियों को जाते हुए देख रहे हैं, इसलिए जब मैं यह कहता हूं तो मुझे बहुत स्पष्ट होना चाहिए मैं अपने भविष्य को लेकर आश्वस्त हूं।

कार्यकारी ने कहा, हम उच्च क्षमता वाले बेहतरीन गेम विकसित और प्रकाशित कर रहे हैं, हमारी स्टूडियो टीम बढ़ रही हैं और हमारा रोडमैप ब्राइट है। मार्च में, अमेजन ने अमेजन वेब सर्विसेज (एडब्ल्यूएस), ट्विच, विज्ञापन और एचआर में अन्य 9,000 कर्मचारियों को नौकरी से निकालने की घोषणा की। अमेजन ने शुरुआत में जनवरी में 18,000 पदों को समाप्त कर दिया।

कनाडाई कोकिंग कोल कंपनी को खरीदने की दौड़ में स्विस दिग्गज ग्लेनकोर ने जेएसडब्ल्यू स्टील को पीछे छोड़ा

नई दिल्ली, 14 नवंबर (एजेंसियां)। स्विस खनन कंपनी ग्लेनकोर पीएलसी के नेतृत्व वाले एक कंसोर्टियम ने कनाडा की टेक रिसोर्सेज लिमिटेड के कोकिंग कोल कारोबार के अधिग्रहण की दौड़ में भारत की जेएसडब्ल्यू स्टील को पीछे छोड़ दिया है। ग्लेनकोर ने मंगलवार को घोषणा की कि उसने कंपनी की इस्पात निर्माण कोयला इकाई में 6.93 अरब डॉलर नकद में 77 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल करने के लिए टेक रिसोर्सेज के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

समवर्ती रूप से निप्पॉन स्टील कॉर्पोरेशन टेक की मौसम संबंधी कोयला व्यवसाय इकाई, एल्क वैली रिसोर्सेज (ईवीआर) में अतिरिक्त इक्विटी का अधिग्रहण करेगा।

ग्लेनकोर ने एक बयान में कहा, दक्षिण कोरिया की पॉस्को एल्कव्यू ऑपरेशंस में अपनी 2.5 प्रतिशत हिस्सेदारी और ग्रीनहिल्स संयुक्त उद्यम में अपनी 20 प्रतिशत हिस्सेदारी के बदले टेक की कोयला इकाई में 3 प्रतिशत हिस्सेदारी भी

■ लेन-देन का कुल मूल्य, जो 9 अरब डॉलर बैठता है, 2024 की तीसरी तिमाही में पूरा होने की उम्मीद है

लेगी। लेन-देन का कुल मूल्य, जो 9 अरब डॉलर बैठता है, 2024 की तीसरी तिमाही में पूरा होने की उम्मीद है। सज्जन जिंदल की अगुवाई वाली जेएसडब्ल्यू स्टील ने भी टेक की इकाई में हिस्सेदारी खरीदने में रुचि व्यक्त की थी और अलगाववादी सिख नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के बाद भारत और कनाडा के बीच राजनयिक संबंधों में खटास के बावजूद एक सौदा हासिल करने की उम्मीद थी।

सार संक्षेप

भारत का टैबलेट बाज़ार तिमाही आधार पर 41 प्रतिशत, 5जी शिपमेंट सालाना आधार पर 86 फीसदी बढ़ा

नई दिल्ली। एक नई रिपोर्ट में मंगलवार को बताया गया कि 5जी टैबलेट और प्रीमियम मॉडल की मजबूत मांग के कारण इस साल तीसरी तिमाही में भारत के टैबलेट बाजार में तिमाही-दर-तिमाही (क्यूओक्यू) 41 प्रतिशत की वृद्धि हुई। साइबर मीडिया रिसर्च (सीएमआर) की रिपोर्ट के अनुसार, तीसरी तिमाही में 5जी टैबलेट शिपमेंट में साल-दर-साल (वाईओवाई) 86 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो कुल टैबलेट शिपमेंट का 16 प्रतिशत है। प्रीमियम टैबलेट पीसी सेगमेंट (3` रुपये और उससे अधिक) में भी प्रभावशाली वृद्धि देखी गई, शिपमेंट में 79 प्रतिशत तिमाही-दर-तिमाही की वृद्धि हुई। हालांकि, ओवरऑल टैबलेट बाज़ार में साल-दर-साल 1 प्रतिशत की गिरावट देखी गई। एप्पल 26 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी के साथ आगे रहा, जिसमें 2 प्रतिशत की सालाना वृद्धि हुई, उसके बाद सैमसंग (21 प्रतिशत) और लेनोवो (2 प्रतिशत) का स्थान रहा। शाओमी ने इस अवधि में छोटे आधार से सालाना आधार पर 98 प्रतिशत की महत्वपूर्ण वृद्धि देखी। एनालिस्ट-इंडस्ट्री इंटेलिजेंस ग्रुप (आईआईजी) की मेनका कुमारी ने कहा, एप्पल की मजबूत वृद्धि, रियलमी और शाओमी के असाधारण प्रदर्शन के साथ मिलकर, टैबलेट पीसी बाजार के प्रीमियम और वैल्यू-फॉर-मनी दोनों स्तरों पर उपभोक्ता प्राथमिकताओं में एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत देती है।

पीएसयू गैर-जीवन बीमा कंपनी द ओरिएंटल स्टाफ क्वार्टर बेचेगी

चेन्नई। सार्वजनिक क्षेत्र की गैर-जीवन बीमा कंपनी द ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड अपनी कुछ अचल संपत्तियों को बेचने की योजना बना रही है। यह बात कंपनी के एक शीर्ष अधिकारी ने कही। उन्होंने यह भी कहा कि कंपनी ने मालिक - भारत सरकार - द्वारा निर्धारित लगभग सभी लक्ष्यों को पूरा कर लिया है और जल्द ही सभी सुविधाओं के साथ एक नया पोर्टल लॉन्च करेगी। कंपनी के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक आर.आर.सिंह ने आईएएनएस को बताया, हमारे पास बहुत सारी अचल संपत्तियां हैं, जिनमें से ज्यादातर प्रमुख शहरों में आवासीय अपार्टमेंट हैं। हमें अचल संपत्तियों को बेचने के लिए केंद्र सरकार की अनुमति मिल गई है। कंपनी अचल संपत्तियों का मूल्यांकन करवा रही है। उन्होंने कहा कि आवासीय क्वार्टरों का रखरखाव प्रभावित हुआ है, क्योंकि कर्मचारियों की कमी के कारण कई क्वार्टर खाली हैं। बीमाकर्ता ने देशभर में लगभग 2 कार्यालयों को बंद करने/विलय करने से किराये के खर्च के रूप में एक बड़ी रकम बचाई है और वह अपनी संपत्ति को जनरल इंश्योरेंस पब्लिक सेक्टर एसोसिएशन (जीआईपीएसए) को किराए पर देकर किराये से आय अर्जित करेगा।

सरसों और सूरजमुखी तेल महंगा

नई दिल्ली, 14 नवंबर (एजेंसियां)। विदेशी बाजारों में तेजी के बावजूद स्थानीय स्तर पर मांग निकलने से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में सरसों तेल और सूरजमुखी तेल महंगा हो गया तथा अरहर दाल और उड़द दाल के भाव भी चढ़ गए।

तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में नवंबर का पाम ऑयल वायदा 86 रिंगिट उबलकर 3759 रिंगिट प्रति टन हो गया। इसी तरह नवंबर का अमेरिकी सोया तेल वायदा 0.87 सेंट की तेजी के साथ 52.41 सेंट प्रति पौंड बोला गया। इस दौरान घरेलू बाजार में खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख रहा। सरसों तेल 147 रुपये और सूरजमुखी तेल 146 रुपये प्रति क्विंटल चढ़ गया जबकि पाम ऑयल 66 रुपये प्रति क्विंटल उतर गया। वहीं, मूंगफली तेल, सोया रिफाइंड और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

गुड़-चीनी : मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर पड़े रहे।

दाल-दलहन : दाल-दलहन बाजार में अरहर दाल में 500 रुपये और उड़द दाल में 200 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी को छोड़कर शेष में टिकाव रहा। इस दौरान चना, दाल चना, मसूर दाल और मूंग दाल में कोई बदलाव नहीं हुआ और वह पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टिकी रही।

अनाज : अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान चावल और गेहूं के दाम में कोई बदलाव नहीं हुआ।

पीयूष गोयल पहुंचे टेस्ला फैक्ट्री, मस्क ने नहीं मिल पाने के लिए मांगी माफी

नई दिल्ली, 14 नवंबर (एजेंसियां)। केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने मंगलवार को कहा कि उन्होंने कैलिफोर्निया के फ्रेमोंट में टेस्ला की अत्याधुनिक विनिर्माण केंद्र का दौरा किया, ऐसे समय में जब केंद्र कथित तौर पर एलन मस्क द्वारा संचालित इलेक्ट्रिक कार कंपनी से आयातित इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) के लिए कीमत कम करने के लिए अनुरोध पर विचार कर रहा है।

गोयल ने एक्स पर पोस्ट किया कि प्रतिभाशाली भारतीय इंजीनियरों और वित्त पेशेवरों को वरिष्ठ पदों पर काम करते हुए और गतिशीलता को बदलने के लिए टेस्ला की उल्लेखनीय यात्रा में योगदान करते हुए देखकर बेहद खुशी हुई। केंद्रीय मंत्री ने कहा, टेस्ला ईवी आपूर्ति श्रृंखला में भारत से ऑटो कंपोनेंट आपूर्तिकर्ताओं के बढ़ते महत्व को देखकर भी गर्व है। यह भारत से अपने घटकों के आयात को दोगुना करने की राह पर है। एलन मस्क की चुंबकीय उपस्थिति को याद किया और मैं उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। टेस्ला के मालिक ने गोयल से माफी मांगी कि वह अस्वस्थ होने के कारण उनसे नहीं मिल सके।

मस्क ने उत्तर दिया, आपका टेस्ला आना सम्मान की बात थी! आज कैलिफ़ोर्निया की यात्रा नहीं कर पाने के लिए मुझे खेद है, लेकिन मैं भविष्य की किसी तारीख़ पर मिलने की आशा रखता हूं। इसके पहले स्पेसएक्स और एक्स के मालिक ने अमेरिका में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की थी और खुलासा किया कि वह भारत में महत्वपूर्ण निवेश करने के इच्छुक हैं, इसके कुछ महीने बाद मंत्री की अमेरिकी यात्रा के दौरान गोयल और मस्क की मुलाकात होने वाली थी।

फाइनेंशियल टाइम्स की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, सूत्रों का हवाला देते हुए, ऑटोमेकर ने भारत सरकार से प्रारंभिक टैरिफ रियायत के लिए कहा है जो 40,000 डॉलर से कम कीमत वाली कारों के लिए भारत के 70 प्रतिशत और 40,000 डॉलर से ऊपर की कारों के लिए 100 प्रतिशत के भारी सीमा शुल्क की भरपाई करेगा।

रिपोर्ट में एक अधिकारी के हवाले से कहा गया है, उनका विचार हमेशा से रहा है कि उन्हें कम से कम अंतरिम अवधि में कुछ टैरिफ रियायतों की आवश्यकता है। टेस्ला ने देश में प्लांट बनाने की शर्त के तौर पर रियायत मांगी है। कम किया गया टैरिफ सभी ईवी निर्माताओं पर लागू होगा।

रिपोर्ट में बताया गया है कि अधिकारियों ने कहा कि विचाराधीन कम दर सभी कीमतों के ईवी के लिए 15 प्रतिशत होगी, लेकिन इस नीति पर अभी तक सरकार के भीतर सहमति नहीं बनी है। सितंबर में ऐसी खबरें सामने आई कि टेस्ला भारत में बैटरी स्टोरेज के लिए एक फैक्ट्री बनाने की योजना बना रही है और उसने सरकार को इसके लिए एक प्रस्ताव भी सौंपा है। इलेक्ट्रिक कार निर्माता ने हाल की बैठकों के दौरान अपने %पावरवॉल% के साथ देश की बैटरी भंडारण क्षमताओं का समर्थन करने का प्रस्ताव रखा। मस्क भारत में टेस्ला आपूर्ति प्रणाली बनाने का भी लक्ष्य बना रहे हैं।

बिल्हा विधानसभा की तासीर ही अलग,हर बार बदलती है विधायक

क्या बिल्हा की जनता को हैं प्रत्याशियों पर भरोसा?

एक ने दल बदला तो दूसरा जमानत तक नहीं बचा पाया

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। प्रदेश की हाईप्रोफाइल सीटों में से एक बिल्हा विधानसभा हैं। ये इसलिए हॉट सीट हैं, क्योंकि यहां से पूर्व विधानसभा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक चुनाव लड़ रहे हैं। वे भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष के अलावा विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष भी रह चुके हैं। दूसरी ओर, कांग्रेस ने सियाराम कौशिक पर एक बार फिर भरोसा जताया हैं। सियाराम ही धरमलाल कौशिक के रास्ते में रोड़ा अटकाते आए हैं। इधर, बात करें दिल्ली में इतिहास बनाने वाली आप पार्टी की तो हाईकमान ने एक बार फिर जसबीर सिंह चावला को मैदान में उतारा हैं। पिछले चुनाव के नतीजे पर गौर करें तो पता चलता हैं कि जसबीर सिंह उस समय अपनी जमानत तक नहीं बचा पाए थे। जसबीर से अधिक एक निर्दलीय प्रत्याशी को अधिक वोट मिले थे।

बिल्हा विधानसभा की तासीर ही अलग हैं। यहां की जनता हर बार विधायक बदलती रही हैं। ये अलग बात है कि कमोबेश यहां जिस पार्टी का विधायक चुना जाता हैं, उन्हें विपक्ष में बैठना पड़ता हैं। इस बार यहां भाजपा, कांग्रेस, बसपा और आप पार्टी ने अपने प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं। पिछली बार जोगी कांग्रेस और बसपा के बीच टाइअप होने के कारण सियाराम कौशिक जोगी कांग्रेस से चुनाव लड़े थे, जो तीसरे नंबर थे। इधर, आप पार्टी ने पुराना चेहरा जसबीर सिंह चावला पर भरोसा जताया हैं। पिछले चुनाव के नतीजे पर नजर डालें तो पता चलता है कि जसबीर सिंह को महज 4428 वोट ही मिले थे, जबकि उनसे अधिक 4518 वोट निर्दलीय प्रत्याशी मनोज ठाकुर को मिल गए थे।2018 में मतदान से करीब 7 दिन पहले क्षेत्र में एक हवा चली थी। वह यह कि जसबीर सिंह चुनाव मैदान से हट गए हैं। दरअसल, मदान से सात दिन पहले जसबीर सिंह क्षेत्र से गायब हो गए थे। इस बार भी वही पुरानी

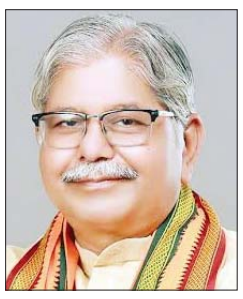

चर्चा शुरू हो गई हैं। जनता कह रही हैं कि पिछली बार की तरह इस बार भी वही चाल तो नहीं चली जा रही हैं। जनता को तीसरी पार्टियों के प्रत्याशियों पर ज्यादा भरोसा नहीं हैं। वह इसलिए, क्योंकि जिस दमखम से भाजपा और कांग्रेस यहां चुनाव लड़ रही हैं, वह दमखम किसी और पार्टी में नजर नहीं आ रहा हैं। पब्लिक के मुताबिक हर विधानसभा की जनता चाहती हैं कि वह उस प्रत्याशी को चुनाव जिताकर विधानसभा भेजें, जिसकी सरकार बने, ताकि क्षेत्रीय समस्याओं को हल कराने में उनका जनप्रतिनिधि कामयाब हो सके।

राजनीतिक इतिहास

1962 से 1985 तक लगातार कांग्रेस के चित्रकांत जायसवाल ने यहां पर पार्टी का झंडा बुलंद किया, लेकिन 1990 में अशोक राव ने कांग्रेस से बगावत की और जनता दल के टिकट पर चुनाव लड़कर यहां कांग्रेस के चित्राकांत जायसवाल को मात दी। हालांकि 1993 में अशोक राव दोबारा कांग्रेस में शामिल हो गए और बीजेपी के धरमलाल कौशिक को हराया। 1998 में पहली बार यहां से धरमलाल कौशिक ने बीजेपी का झंडा बुलंद किया, लेकिन 2003 में वे अपनी सीट बचाने में नाकाम रहे। उन्हें कांग्रेस के सियाराम कौशिक ने मात दी।

2008 में धरमलाल कौशिक ने सियाराम कौशिक को फिर से मात दी। 2013 में एक बार फिर कांग्रेस ने सियाराम कौशिक पर भरोसा जताया और वो विधानसभा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक को हराने में सफल हुए। इस चुनाव में बीजेपी को जहां 72,630 वोट मिले तो कांग्रेस को 83,598 वोट मिले। इस तरह जीत का अंतर 10,968 वोटों का रहा।

2018 के चुनाव में बदले समीकरण

2018 के चुनाव में फिर समीकरण बदले। कांग्रेस का दामन छोड़कर सियाराम कौशिक जोगी कांग्रेस से चुनाव मैदान में उतरे, जिसके जवाब में कांग्रेस ने राजेंद्र शुक्ला को अपना प्रत्याशी बनाया। त्रिकोणीय मुकाबले में भाजपा के धरमलाल कौशिक एक बार फिर कांग्रेस और जोगी कांग्रेस को शिकस्त देने में कामयाब हो गए। बीजेपी के धरमलाल कौशिक को 84,431 वोट मिले। वहीं, कांग्रेस के राजेंद्र शुक्ला को 57,907 वोट मिले। पूर्व विधायक व जोगी कांग्रेस प्रत्याशी सियाराम कौशिक 29613 वोटों के साथ तीसरे नंबर पर रहे।

क्या हैं मुद्दे

बिल्हा विधानसभा के सियासी तासीर के साथ यहां कई ज्वलंत मुद्दे भी हैं। बिल्हा विधानसभा में पिछड़े आदिवासी गांव हैं तो चमचमाती सड़कों और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स वाले शहरी क्षेत्र भी यहां मौजूद हैं। यहां सिरगिट्टी, तिफरा जैसे औद्योगिक इलाके हैं तो यदुनंदन नगर से लेकर चकरभाठा तक कई बड़ी कॉलोनियां भी हैं। बिलासपुर नगर निगम के कुछ और वार्ड भी बिल्हा विधानसभा में आते हैं।

बिल्हा विधायक धरमलाल कौशिक ने संगठन की राजनीति करते हुए अपनी राजनीति की शुरुआत की हैं। वे 1990-91 में महामंत्री भाजपा बिल्हा मंडल रहे हैं। 1992 में अध्यक्ष भाजपा बिल्हा मंडल रहे। 1994 में जिला अध्यक्ष भारतीय जनता युवा मोर्चा रहे।

यहां बुनियादी समस्याओं के अलावा पेयजल, सिंचाई व्यवस्था और सरकारी योजनाओं का ठीक तरह से क्रियान्वयन नहीं होना व अवैध उत्खनन भी एक बड़ा मुद्दा हैं। इस क्षेत्र में ट्रेनों का स्टॉपेज न होना भी क्षेत्र के लोगों के लिए फिलहाल एक प्रमुख समस्या बना हुआ हैं। प्रदेश में अब तक भाजपा-कांग्रेस की सरकार रही है। 15 साल तक भाजपा ने प्रदेश में राज किया, तब धरमलाल कौशिक ने गांव-गांव की सड़कों को चकाचक कर दिया था।

मोदी ने न 15 लाख दिए और न काला धन वापस लाया : भूपेश

भाजपा पर विश्वास घटा तो अपने नाम की गारंटी देने लगे हैं मोदी जी

कोरबा-पाली तानाखार, 14 नवंबर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल मंगलवार को पाली तानाखार विधानसभा के ग्राम लेपरा (गुरसियां) खेल मैदान में चुनावी आम सभा में शामिल हुए। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तंज कसते हुए कहा कि मोदी जी जुमलेबाज़ हैं। मोदी जी ये जान लें कि उनके जितने बीजेपी के जितने प्रमुख नेता हों, वो संकट में फंसे हैं चाहे वो अरुण साव हों, अमर अग्रवाल हो बृजमोहन अग्रवाल, राजेश मूणत चाहे वो नए नेता ओपी चौधरी हों। पहले वो खरसिया में हारे अब वो रायगढ़ से भी हारने वाले हैं।

श्री बघेल ने कहा कि पहले चरण का मतदान हो चुका है, जिसमें बीजेपी बुरी तरह से हार रही है। पूरे छत्तीसगढ़ में पिछले विधानसभा चुनाव के जैसे इस बार भी कांग्रेस के पक्ष लहर है। इस बार पूर्व मुख्यमंत्री डॉ.रमन सिंह भी हार रहे हैं।

उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी सिर्फ ठगने का काम करती है। बीजेपी ने जितने भी वादे किए सभी से मुकर गए। आदिवासियों को जर्सी गाय देने की बात की थी, वो भी नहीं दिया। बीजेपी के प्रदेश चेहरे पर लोगों ने विश्वास करना छोड़ दिया तो मोदी जी अपने नाम की गारंटी दे रहे हैं। मोदी जी ने 15 लाख देने की बात कही थी, लेकिन आज तक किसी के खाते में कुछ भी नहीं आया। मोदी जी ने कहा था कालाधन वापस करूंगा, लेकिन काला धन समाप्त नहीं हुआ है। आमसभा के दौरान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष बोधराम कंवर, राज्य गौ सेवा आयोग के सदस्य प्रशांत मिश्रा, प्रत्याशी दुलेश्वरी सिदार, जिला कांग्रेस कमेटी ग्रामीण के अध्यक्ष सुरेन्द्र प्रताप जायसवाल सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसी कार्यकर्ता व स्थानीयजन उपस्थित रहे।

■ कोरबा जिले के गुरसियां में मुयमंत्री ने ली आमसभा

बिना भेदभाव कांग्रेस देगी 15 हजार रुपए

इस दौरान मुख्यमंत्री ने भूपेश बघेल ने कहा कि महिलाओं के लिए दीपावली के अवसर पर गृह लक्ष्मी योजना के तहत बिना भेदभाव के हर महिला को 15 हजार रुपये देने की हमने घोषणा की है। इस योजना में कोई फॉर्म नहीं भरवाया जाएगा, लेकिन बीजेपी वाले फॉर्म भरवा रहे हैं। बीजेपी ठगने वाली सरकार है और कांग्रेस भरोसे लायक सरकार। उन्होंने कहा कि इस बार छत्तीसगढ़ में 75 पार कर पूर्ण बहुमत की कांग्रेस सरकार बन रही है।

सरकार को कोई नुकसान नहीं

मुख्यमंत्री श्री बघेल ने आम सभा उपरांत स्थानीय मीडिया से चर्चा में कांग्रेस विधायक चिंतामणि महाराज के बीजेपी में शामिल होने पर कहा कि यह पुरानी बात है, इससे कांग्रेस पार्टी को कोई नुकसान नही हो रहा है। महिला समूह को दी जाने वाली छूट व किसानों को कर्ज माफी से सरकार को होने वाले राजस्व के नुकसान पर कहा कि इससे सरकार को कोई नुकसान नहीं होगा। भूपेश बघेल ने कांग्रेस प्रत्याशी दुलेश्वरी सिदार के पक्ष लोगों से वोट देने की अपील की।

सार-संक्षेप

मतदाताओं को भ्रमित करने वाले विज्ञापनों पर होगी रोक

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा छत्तीसगढ़ विधानसभा आम निर्वाचन-2023 में इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के साथ ही प्रिंट मीडिया में भ्रामक प्रकृति के विज्ञापनों के प्रकाशन को रोकने के संबंध में व्यापक दिशा-निर्देश दिए गए हैं। इसके तहत मतदान दिवस और उसके एक दिन पहले प्रिंट मीडिया में प्रकाशित होने वाले राजनीतिक विज्ञापनों का पूर्व प्रमाणीकरण आवश्यक है। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा इस संबंध में जारी परिपत्र के अनुसार छत्तीसगढ़ विधानसभा निर्वाचन के लिए मतदान दिवस यानि दूसरे चरण के मतदान के एक दिन पहले एवं मतदान दिवस यानि 16 नवम्बर और 17 नवंबर को प्रिंट मीडिया में राजनीतिक विज्ञापनों के प्रकाशन के पूर्व जिला अथवा राज्य स्तरीय मीडिया प्रमाणन समिति से विज्ञापनों का पूर्व प्रमाणन अनिवार्य किया गया है। इसके लिए भारत निर्वाचन आयोग ने राज्य स्तरीय तथा जिला स्तरीय मीडिया प्रमाणन समिति को प्रमाणन हेतु प्राप्त आवेदन पर त्वरित निर्णय लेने के निर्देश दिए हैं।

जिला कार्यालय में डाक मतपत्र से मतदान की सुविधा 15 तक

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। निर्वाचन आयोग द्वारा विधानसभा निर्वाचन के दौरान मतदान कार्य में लगे अधिकारी-कर्मचारियों को डाक मतपत्र के माध्यम से मतदान करने की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जिन अधिकारियों, कर्मचारियों व मतदान दल कर्मियों ने उक्त सुविधा केन्द्रों में अपने मताधिकार का प्रयोग अभी तक नहीं किया है, वे 15 नवम्बर को जिला कार्यालय में बनाए गए सुविधा केंद्र में जाकर डाक मतपत्र के माध्यम से मतदान कर सकते है। इसी प्रकार 16 नवम्बर को मतदान सामग्री वितरण के दिन सवेरे 7 बजे से दोपहर 3 बजे तक मतदान सामग्री वितरण केन्द्र शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय, कोनी में भी सभी विधानसभाओं के लिए सुविधा केन्द्र बनाया गया है, ताकि अधिक से अधिक शासकीय कर्मचारी जो मतदान दल में नियुक्त हैं, वे अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें। जिले के सभी 6 विधानसभाओं के ऐसे सभी मतदाता अधिकारी एवं कर्मचारी जिन्होंने डाक मतपत्र हेतु आवेदन किया हो और जिनका नाम संबंधित रिटर्निंग अधिकारी के पात्र डाक मतपत्र सूची में है, वे केवल डाक मतपत्र के माध्यम से ही मतदान सुविधा केन्द्रों में कर पायेंगे।

15 नवम्बर को थमेगा प्रचार प्रसार, 6 विधानसभा सीटों में 108 अभ्यर्थी मैदान में

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। जिले में 17 नवम्बर 2023 को होने वाले मतदान के लिए बुधवार 15 नवम्बर को शाम पांच बजे तक प्रचार-प्रसार का शोर थम जाएगा। मतदान की समाप्ति समय के 48 घंटे पूर्व से सार्वजनिक मंचों से प्रचार-प्रसार प्रतिबंधित रहेगा। लेकिन इस दौरान प्रत्याशी घर-घर जाकर जनसंपर्क कर सकेंगे। जिले के 6 विधानसभा क्षेत्रों में कुल 108 उम्मीदवार अपना भाग्य आजमा रहे हैं। इनमें बिलासपुर विधानसभा क्षेत्र से 21, बिल्हा विधानसभा क्षेत्र से 23, बेलतरा विधानसभा क्षेत्र से 22, कोटा विधानसभा क्षेत्र से 15, तखतपुर विधानसभा क्षेत्र से 14 एवं मस्तूरी विधानसभा क्षेत्र से 13 उम्मीदवार शामिल है। 17 नवम्बर को होने वाले मतदान के दौरान जिले के 15 लाख 73 हजार 905 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इनमें 7 लाख 90 हजार 972 पुरूष मतदाता एवं 7 लाख 82 हजार 842 महिला मतदाता और 91 तृतीय लिंग मतदाता शामिल हैं। जिले में 60 संगवारी मतदान केंद्र बनाए गए है जहां सिर्फ महिला मतदान कर्मी ही पदस्थ रहेंगी। मतदान के लिए सवेरे आठ बजे से शाम पांच बजे तक का समय निर्धारित किया गया है।

दुर्ग-पटना एक फेरे के लिए दूसरी छठ पूजा स्पेशल एक्सप्रेस ट्रेन

बिलासपुर से स्लीपर में 93 सीट, एसी-2 में 31 सीट एवं एसी-3 में 09 सीटे उपलब्ध

रायपुर से स्लीपर में 513 सीट, एसी 2 में 60 सीट एवं एसी-3 में 43 सीटे उपलब्ध

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। छठ पूजा के दौरान ट्रेन में होने वाली अतिरिक्त भीड़-भाड़ के दौरान यात्रियों को अधिक से अधिक कन्फर्म बर्थ/सीट की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु दुर्ग एवं पटना के मध्य एक फेरे के लिए दूसरी छठ स्पेशल एक्सप्रेस ट्रेन व्हाया राउरकेला, रांची, गया के मार्ग से चलाई जा रही है।

आज की सीट उलब्धता के अनुसार बिलासपुर से इस ट्रेन में स्लीपर श्रेणी में 93 सीट, एसी-2 श्रेणी में 31 सीट एवं एसी-3 श्रेणी में 09 सीटे उपलब्ध है।

रायपुर से इस ट्रेन में स्लीपर श्रेणी में 513 सीट, एसी 2 श्रेणी में 60 सीट में एवं एसी-3 में 43 श्रेणी में सीटे उपलब्ध है।

यह ट्रेन 08201 नंबर के साथ दुर्ग से दिनांक 16/11/2023 (गुरुवार) को दोपहर 14.45 बजे दुर्ग से प्रस्थान करेगी ।इस ट्रेन का रायपुर आगमन 15.40 बजे एवं प्रस्थान 15.45 बजे, भाटापारा आगमन 16.27 बजे एवं प्रस्थान 16.29 बजे, बिलासपुर आगमन 17.35 बजे एवं प्रस्थान 17.44 बजे, चाम्पा आगमन 18.23 बजे एवं प्रस्थान 18.25 बजे, रायगढ़ आगमन 19.18 बजे एवं प्रस्थान 19.20 बजे, झारसुगुड़ा आगमन 20.40 बजे एवं प्रस्थान 20.42 बजे तथा यह ट्रेन राउरकेला, हटिया, रांची, मुरी, बोकारो, चंद्रपुरा, गोमो, कोडरमा, गया, जहानाबाद स्टेशन होते हुए अगले दिन दिनांक 17/11/2023 (शुक्रवार) को सुबह 09.30 बजे पटना पहुँचेगी।

इसी प्रकार यह ट्रेन 0802 नंबर के साथ दिनांक 17/11/2023 (शुक्रवार) को प्रात: 10.30 बजे पटना स्टेशन से दुर्ग के लिए प्रस्थान करेगी । यह ट्रेन जहानाबाद, गया, कोडरमा, गोमो, चंद्रपुरा, बोकारो, मुरी, रांची, हटिया, राउरकेला स्टेशन होते हुए झारसुगुड़ा आगमन 00.58 बजे एवं प्रस्थान 00.10 बजे (18/11/2023), रायगढ़ आगमन 02.10 बजे एवं प्रस्थान 02.12 बजे, चाम्पा आगमन 03.23 बजे एवं प्रस्थान 03.25 बजे, बिलासपुर आगमन 04.35 बजे एवं प्रस्थान 04.45 बजे, भाटापारा आगमन 05.28 बजे एवं प्रस्थान 05.30 बजे, रायपुर आगमन 07.10 बजे एवं प्रस्थान 07.15 बजे एवं दिनांक 18/11/2023 (शनिवार) को दुर्ग स्टेशन पहुंचेगी ।

विशेष प्रेक्षकों ने की चुनावी तैयारियों की समीक्षा

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने सुगम एवं समावेशी मतदान के लिए पूरी तैयारी करने दिये निर्देश

अंतिम समय में जांच एवं कार्रवाई में लाएं तेजी

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव के लिए नियुक्त विशेष प्रेक्षकों द्वारा आज जिले में निर्वाचन संबंधी तैयारियों की विस्तृत समीक्षा की गयी। विशेष सामान्य प्रेक्षक धर्मेन्द्र गंगवार, विशेष व्यय प्रेक्षक राजेश टुटेजा एवं पुलिस प्रेक्षक अनिल कुमार शर्मा सहित मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्रीमती रीना बाबासाहेब कंगाले ने आज जिला कार्यालय के मंथन सभाकक्ष में ऑब्जर्वर, रिटर्निंग अफसर, नोडल अधिकारियों की बैठक लेकर 17 नवंबर को मतदान दिवस पर मतदाताओं द्वारा सुगम मतदान सुनिश्चित करने के लिए की गयी तैयारियों की जानकारी ली। उन्होने मल्टीबूथ लोकेशन में भी मतदाताओं द्वारा सुगम मतदान के लिए सारी मूलभूत सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। हैप्पी वोटिंग पर जोर दिया। शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष चुनाव के लिए 72 घंटे में जांच एवं कार्रवाई में तेजी लाने के निर्देश दिए। होम वोटिंग की सुविधा लेने के बाद छूटे 80 वर्ष या उससे अधिक बुजुर्ग और दिव्यांगजनों को मतदान केन्द्र तक ले जाने के लिए परिवहन की सुविधा उपलब्ध कराने कहा। मतदाता मित्रों द्वारा इन्हें मतदान केन्द्र तक ले जाया जाएगा। परिवहन की सुविधा मुहैया कराए जाने की पूरी प्रक्रिया पारदर्शी रखते हुए प्रत्याशियों को इसकी सूचना दी जाए।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अवनीश शरण ने स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं पारदर्शी चुनाव के लिए जिले में अब तक की गयी तैयारियों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन द्वारा निर्वाचन के लिए पूरी तैयारी कर ली गयी है। उन्होने बताया कि बिलासपुर जिले के 1691मतदान केन्द्रों से मतदान होगा।

इनमें बिल्हा विधानसभा के 118 मतदान केन्द्र मुंगेली जिले में एवं कोटा विधानसभा के 64 मतदान केन्द्र जीपीएम जिले में आते है। जिले में 15 लाख 73 हजार 905 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। प्रेक्षकों ने सभी 6 विधानसभा में सबसे कम मतदान वाले 10 पोलिंग बूथ को चिन्हांकित कर वहां मतदान का प्रतिशत बढ़ाने के लिए स्वीप के तहत विशेष अभियान चलाने कहा। जिले के लिए नियुक्त प्रेक्षकों को भी ऐसे केन्द्रों का निरीक्षण करने के निर्देश दिए। मल्टी बूथ लोकेशन वाले मतदान केन्द्रों में मतदाताओं को पूरी सुविधा पेयजल शौचालय एवं अन्य सुविधा प्रदान करना है। मतदाताओं को मतदान केदो में कतार लगने के दौरान किसी प्रकार की असुविधा नहीं होना चाहिए। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि प्रचार समय समाप्त होने के बाद निगरानी और तेज कर दें। कल 15 तारीख को शाम को 5 बजे प्रचार का समय समाप्त होने के बाद जिले की सीमा में चौकसी बढ़ा दी जाए। सभी वाहनों की कड़ाई से जांच करें। मतदान दिवस अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस दिन मतदाताओं को लुभाने चाली चीजों का वितरण किए जाने की संभावना को देखते हुए विशेष तौर पर स्लम एरिया में एफएसटी की टीम तैनात करें। शाम होने के पहले सभी मतदान दल अपने गंतव्य तक पहुंच जाए। सामग्री वितरण में किसी प्रकार की असुविधा न हो इसके लिए सेक्टर ऑफिसर की ड्यूटी लगा दे। कल शाम 5 बजे चुनाव प्रचार थम जाएगा और स्टार प्रचारक की रैली पर जिला प्रशासन को नजर रखने के निर्देश दिए हैं।

पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार सिंह ने चुनाव मे सुरक्षा व्यवस्था को लेकर की गयी तैयारियों की जानकारी दी। पुलिस प्रेक्षक ने निर्देश दिए कि विशेष अभियान चलाकर 3 दिन निगरानी दल विशेष तौर पर सतर्क रहें। संदिग्ध लगने पर सरकारी वाहन और एम्बुलेंस की भी जांच की जाए। नकद रकम के अलावा जनधन खाते में अचानक अधिक राशि के ट्रांजेक्शन पर बारीकी से नजर रखें। इसकी मॉनिटरिंग के लिए अलग से किसी अधिकारी को नियुक्त किया जाए।

अन्नकूट के साथ हुई गो माता की पूजा

बिलासपुर, 14 नवंबर (देशबन्धु)। दीपावली के बाद मंगलवार को अचंल में अन्नकूट के साथ हुई गो माता की पूजा हुई। न्यायधानी में हर्षोल्लास के साथ गोवर्धन पूजा पर्व मनाया गया। घरों में उत्साह का माहौल रहा। गांव में घर-घर पकवान बने। शहर की तुलना में ग्रामीण अंचल में पर्व को लेकर खासा उत्साह दिखा। गोठानों में सुबह से गाय की पूजा में ग्रामीण लीन थे।

परंपरा के अनुसार गौशाला व गोठानों में गायों की पूजा कर उन्हें विभिन्न प्रकार के व्यंजन खिलाए गए। वहीं शहर में कुछ जगहों पर सार्वजनिक गोवर्धन पूजा व परिक्रमा का आयोजन भी किया गया। वहां गोवर्धन की प्रतिमा बनाई गई थी। छत्तीसगढ़ में दिवाली पर्व के साथ ही गोवर्धन पूजा और भाई दूज का पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। इस कड़ी में मंगलवार को गोवर्धन पूजा उत्साह से मनाया गया। अन्नकूट के साथ गायों की विधिवत पूजा हुई। भाई दूज के दिन ठेठवार समाज के लोगों की तरफ से मातर का उत्सव मनाया जाता है। इधर शहर में आज भक्तों ने गोवर्धन पूजा कर सुख समृद्धि की कामना की। शाम को जमकर आतिशबाजी भी की गई। घर रंग-बिरंगी लाइट सजे हुए थे सबसे अच्छी बात यह कि

इस साल ग्रामीणों ने कई गोठानों में भी उजाला किया।

सजे-धजे नजर आए गो-माता

गांवों में लोगों ने गोवंश को दिन में ही नहला-धुलाकर तैयार रखा था। घर के गोशाला व गोठानों में गोबर से गोवर्धन पर्वत समेत अन्य प्रतीकात्मक मूर्तियां बनाई गईं। फिर धान, चावल समेत अन्य पूजन सामग्रियों से पूजन किया गया। इसके बाद गोवंश को तिलक लगाकर उनकी पूजा की गई।

खिचड़ी का लगाया भोग

गोवर्धन पूजा पर घरों में बड़ा, पूड़ी, चावल, खिचड़ी व सब्जियों समेत अन्य प्रकार के व्यंजनों का थाल सजाकर उन्हें खिलाया गया। इस दौरान उन्हीं थाल के दूसरे कोने से अन्न् का हिस्सा निकालकर बच्चों ने भी गोवंश के साथ खाने की परंपरा निभाई।

गाय के साथ ली सेल्फी

इस साल बड़ी संख्या में लोगों ने पूजन के बाद इंटरनेट मीडिया में फोटो वायरल कर खुशियां भी मनाई। गाय के प्रति अपनी आस्था व प्रेम को प्रकट करने के साथ छोटे बच्चों को भी प्रकृति प्रेम सिखाया गया। गो माता के साथ सेल्फी लेकर फेसबुक, इंस्ट्राग्राम एवं व्हाटसएप स्टेटस पर लगाया।

लक्ष्मी पूजा से तैयारी

शहर की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में लक्ष्मी पूजा के दिन से ही गोवर्धन पूजा की तैयारी शुरू हो गई थी। दिवाली पर जहां लोग शाम से लेकर रात नौ बजे तक मां लक्ष्मी की पूजन में जुटे रहे। इसके बाद बच्चों समेत बड़ों ने भी आतिशबाजी का आनंद उठाया। पटाखों की गूंज रात तक होती रही। वहीं गांव में गोठान से लेकर गोवंश को सजाने संवारने में जुटे थे। भाई दूज के दिन मातर होगा।

निधन

ओमप्रकाश गुप्ता

बिलासपुर। ओमप्रकाश गुप्ता (एडवोकेट) निवासी मिलन मंदिर के बाजू में गोड़पारा बिलासपुर का निधन 12 नवंबर को हो गया है उनका अंतिम संस्कार 13 नवंबर को पंडित देवकीनंदन दीक्षित मुक्तिधाम में किया गया वे श्यामनारायण गुप्ता (भग्गू)के बड़े भाई एवं प्रणव प्रसन्न गुप्ता एवं श्रीमती प्रियंका वर्मा के पिता थे पवन गुप्ता के चाचा जी थे।

NECC

15.11.2023	अंडा	मुर्गी	काकरेल
फार्म	553	80	170
चिल्हर	6.50	95	195

डिलीवरी 558 सैकड़ा
दर्जन अंडा 75 रु.
मुर्गी खाद प्रति ट्राली 1000 रू.
CSPFA

प्रकाशक मुद्रक एवं सम्पादक- राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन, प्रा.लि. के लिए पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि. प्रेस में मुद्रित एवं गर्ल्स कॉलेज के पास, जरहाभाटा, बिलासपुर से प्रकाशित। प्रेस पंजीयन- 52158/91 डाक पंजीयन 112-002/2002 सी जी फोन- 07752 422771, 428159 फैक्स नं. 415188